उक्राइनी
लोक
कथाएं

उक्राइनी लोक कथाएं

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

अनुक्रम

उक्राइनी लोककथाओं का संसार

सुदूर अतीत से पीढ़ी-दर-पीढ़ी कही-सुनी जानेवाली मनमोहक लोककथाएं हमें जादुई दुनिया और उसके पात्रों से परिचित कराती रही हैं। इन कथाओं में हास्य, चातुर्य और लोक प्रतिभा की झिलमिलाहट है। ये कथाएं वाचकों के द्वारा सिर्फ़ कथ्य रूप में प्रसारित होती रही हैं। इसीलिए इन कथाओं को लोककथाएं कहते हैं।

उक्राइनी लोककथाओं में सुदूर एवं निकट अतीत से संबंधित पात्रों और घटनाओं की भरमार है। हमें आशा है कि पाठकों को प्रस्तुत पुस्तक के पात्र भाएंगे; ये जनसामान्य से निकले हुए साहसी लोग हैं। पशु-पक्षियों के रोचक कारनामे और भड़कीले चरित्र भी दिल खुश करेंगे और 'दादाजी का दस्ताना', 'उड़नखटोला' जैसे सम्मोहक काव्य-बिंब मानस-पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाएंगे।

लोककथाओं के ही माध्यम से नन्हे-मुन्ने बच्चों को प्रकृति और तरह-तरह के पशु-पक्षियों का परिचय कराया जाता है और शायद पालने में ही वे यह कथा सुनते हैं कि कैसे दादाजी ने जंगल में अपना दस्ताना खो दिया और उसमें किस-किस ने आकर आश्रय लिया। बचपन से ही परीकथाओं में वर्णित पशुपक्षियों के जीवन्त कारनामे प्रिय लगने लगते हैं, बच्चा उनसे बार-बार मिलने में खुशी अनुभव करता है। थोड़ा और बड़ा होने पर वह नई-नई लोककथाओं में

रुचि लेने लगता है। नन्हे-मुन्ने पाठक चुस्त-चालाक लोमड़ी दीदी के कारनामों की बढ़ा-चढ़ाकर कल्पना करते हैं, उक्राइनी लोककथाओं में अकसर वह पशु-पक्षियों के साथ दिखलाई देती है। लोमड़ी अपनी चालाकी से कभी मुर्गे को मात देती है, तो कभी खरगोश को, यहां तक कि भेड़िया और भालू भी उसकी चालाकी का शिकार होने से नहीं बच पाते। लेकिन ऐसा भी होता है कि उसे अपनी धूर्तता और दग़ाबाज़ी की सज़ा भुगतनी ही पड़ती है।

ऐसा अकारण ही नहीं कहा जाता कि पशु-पक्षियों का चरित्र-चित्रण करनेवाली लोककथाएं अपनी "एक दृष्टि मनुष्यों पर भी रखती हैं"। प्रचलित कहावतों में ऐसे भी उदाहरण देखने को मिलते हैं: "लोमड़ी-सा चालाक", "भेड़िये-सा भूखा"। लेकिन लोककथाओं का रचयिता मनुष्य सदैव दीन-दुखियों का ही पक्षधर होता है। वह उनके कष्टों के प्रति सहानुभूति प्रगट करता है, उनकी दयालुता, सहृदयता और वफ़ादारी का उचित मूल्यांकन करता है।

इस पुस्तक में लोककथाओं के साथ-साथ जादुई कथाएं भी संकलित हैं। इन जादुई कथाओं में दुष्ट शक्तियों के साथ होनेवाले जटिल संघर्ष को दर्शाया गया है। जादुई कथाओं के नायक आम लोग हैं। उन्हें प्रायः 'कृषकपुत्र इवान', 'चरवाहा', 'खलड़ीउधेड़ किरील' आदि ही कहकर पुकारा जाता है। कथानायक को अजदहों के अनेक सिर काटने पड़ते हैं; आततायियों को दण्डित करने के लिए, विपन्नों की सहायता और न्याय की स्थापना के लिए कई-कई बार द्वंद्वयुद्ध करना पड़ता है। इन नायकों के शौर्य का वर्णन करते हुए लोककथाकार उनके साहस, उनकी दयालुता और कुशाग्रता का यशगान करते हैं।

भोले-भाले ग्रामीण श्रमिक का हमेशा से सपना रहा है: महाबली बनना, मानवीय क्षमताओं को बहुगुणित करना। जादुई कथाओं में लोक कल्पना इन्हीं सपनों को अभिव्यक्ति देती है। उक्राइन की अनेक लोककथाओं में अलौकिक गुणों से सम्पन्न पात्रों से मुलाकात होती है।

नायकों के नाम से भी इसका अन्दाज़ा लगाया जा सकता है–पहाड़पलट, नदीपकड़, बलूतउखाड़, हिमबाबा आदि। सदियों से मनुष्य महाबली बनने का सपना देखता रहा है और उसने अपनी कल्पना के मोहक ताने-बाने से क़िस्म-क़िस्म की लोककथाओं में इसी सपने को अभिव्यक्त किया है...

लोककथाओं की इस पुस्तक के अन्त में पाठकों की मुलाक़ात उक्राइन के

साधारण लोगों – किसानों – से होती है। उनका श्रमिक जीवन, उनकी दस्तकारी और गृहस्थी उन क्षेत्रों के अतीत के लिए लाक्षणिक हैं, जहां ये कथाएं क़लमबन्द की गई हैं। इन कथाओं में ग़रीब और अमीर, दयालु और निर्दय, सत्यनिष्ठ और असत्यनिष्ठ लोगों के पारस्परिक संबंधों की विशिष्टताएं चित्रित हुई हैं। साथ ही इनमें राजे-रजवाड़ों तथा धनपतियों की मूर्खता और उनके मिथ्याभियान की खिल्लियां भी उड़ाई गई हैं, उनकी महात्वाकांक्षाओं को धूल-धूसरित होते दिखाया गया है। अभाव और कठिनाई से जूझते सामान्य जन की प्रत्युत्पन्नमति, तर्क-शक्ति और साहस की विजय दिखाई गई है।

उक्राइन की इन कथाओं में लोक-हास्य और तीखे व्यंग्य द्वारा शोषकों तथा उत्पीड़कों का पर्दाफ़ाश किया गया है, जो मुसीबत में पड़े इनसान की मजबूरियों का अनुचित लाभ उठाते हुए जीते हैं।

सभी लोककथाएं मानव मन की सहज भावनाओं से ओतप्रोत हैं, जिनमें प्रकृति-विजय, सुखमय जीवन, दुखों से छुटकारा, दैनिक जीवन संवारने, जुल्मो-सितम से मुक्ति और न्यायपूर्ण ज़ीवन की चाह झलकती है, ताकि सभी उन्मुक्त, अभावरहित, खुशहाल और सुन्दर जीवन जी सकें।

यह सुस्पष्ट है कि लोक साहित्य की सभी कृतियां प्रायः पाठ भेदों के साथ मिलती हैं, जो स्थान, काल और खुद वाचकों या कथा कहनेवालों पर निर्भर करती हैं। लोककथाओं में स्थाई तौर पर परिवर्तन होते रहते हैं और वे नई-नई रचनात्मक तफ़सीलों के साथ समय-समय पर समृद्ध होती रहती हैं।

इस संकलन की सभी रचनाएं उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में संकलित की गई हैं। उक्राइन सोवियत संघ के पन्द्रह समाजवादी जनतंत्रों में से एक है। उक्राइन का भू-क्षेत्र कर्पाथिया पर्वतमाला से काले सागर तक फैला हुआ है। उसकी पूर्वी और उत्तरी सीमाओं से रूसी संघात्मक जनतंत्र और बेलोरूस जनतंत्र की सीमाएं लगी हुई हैं। दक्षिण-पश्चिम में मोल्दाविया की सीमा है।

लोककथाकार ने इन कथाओं में वहां के सुपरिचित दैनिक जीवन, रीति-रिवाज, खेतीबारी और पशु-पक्षियों का आकर्षक चित्रण किया है। उक्राइन की लोककथाओं को पढ़ते हुए पाठक यहां की विशिष्ट प्राकृतिक दृश्यों को देखता है – स्तेपियां, जंगल, पहाड़, छोटी-बड़ी नदियां। लोककथाओं की जादुई दुनिया पाठकों को द्नेपर नदी के तट पर खींच लाती है, नए-नए पात्रों से उनका परिचय

कराती है, उन्हें हंसाती, रुलाती हुई चिन्तामग्न कर देती है, फिर से उन्हें भलाई की जीत और बुराई की पराजय का अहसास दिलाती है।

विश्व के प्रायः सभी महान लेखकों ने लोककथाओं की जादुई दुनिया का ऊंचा मूल्यांकन किया है, उनसे सृजनात्मक प्रेरणा ग्रहण की है। लोककथाओं के कथानकों और बिंबों को रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गेटे, शिलर, मित्सकेविच, पुश्किन, शेव्चेन्को तथा अन्य प्राचीन और आधुनिक साहित्य मनीषियों ने समय-समय पर अपनी कृतियों में स्थान दिया है।

'पंचतंत्र' की कथाएं प्राचीन भारत से हम तक पहुंची हैं, अरबी लोक कथाओं का संकलन – 'अलिफ़ लैला' लोक साहित्य की ही देन है। यही नहीं, ग्रीम बन्धुओं, एण्डरसन और पेर्रो की कथाओं को पढ़कर आज भी तरुण हृदय खुशी से खिल उठता है। आधुनिक कथा लेखकों ने पुरानी लोककथाओं की विषयवस्तु को तराश और मांजकर उन्हें नया जीवन दिया है। स्पष्टतः ऐसी अनमोल निधि सारी दुनिया के बच्चों के लिए उपहार सदृश है।

अतीत से वर्तमान युग तक ये लोककथाएं हमें चौकन्नी आंखों से अपने परिवेश को परखने की सीख देती हैं, इनके जीवन्त नायक तरुण पाठकों के समक्ष जीवन-सौन्दर्य के रहस्य को उसकी तमाम बहुरूपता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

व्लादीमिर बोइको
(डी० एस० सी, वाङ्मीमांसा)

नक्कू बकरी

बहुत पुरानी बात है। एक था बूढ़ा, एक थी बुढ़िया। एक दिन बूढ़ा मेला देखने गया, वहां पर उसने एक बकरी खरीदी। बकरी लेकर वह घर आया और अगले दिन सुबह उसने अपने बड़े बेटे को बकरी चराने भेजा। लड़का चरागाह में सुबह से शाम तक बकरी चराता रहा और दिन ढलते ही उसे घर वापस ले चला। घर के पास पहुंचा ही था कि देखता क्या है – बाड़े के फाटक पर लाल-लाल जूते पहने बूढ़ा खड़ा है। बूढ़े ने पूछा:

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नहीं, बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," बकरी बोली। "उछल-कूदकर निकट पेड़ के जब मैं आई, तब इक पत्ती मौक़ा पाकर मैंने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झट से बढ़कर एक बूंद बस मैंने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढ़े को बड़ा गुस्सा आया कि बेटे ने उसकी प्यारी-प्यारी बकरी की ठीक से देखभाल क्यों नहीं की? उसने आव देखा न ताव बेटे को घर से निकाल दिया।

दूसरे दिन बूढ़े ने अपने छोटे लड़के को बकरी चराने भेजा। लड़का सुबह से शाम तक बकरी चराता रहा और दिन ढलने पर घर की ओर चल पड़ा। अभी वह बाड़े के फाटक पर पहुंचा ही था कि लाल-लाल जूते पहने बूढ़ा खड़ा था। बूढ़े ने फिर पूछा:

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नहीं, बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," बकरी ने पहले जैसा राग अलापा। "उछल-कूदकर निकट पेड़ के जब मैं आई, तब इक पत्ती मौक़ा पाकर मैंने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झटपट बढ़कर एक बूंद बस मैंने पी ली। खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढ़े ने इस लड़के को भी घर से निकाल दिया।

तीसरे दिन बुढ़िया को बकरी चराने भेजा गया।

बुढ़िया दिन भर बकरी चराती रही और शाम होते ही उसे घर वापस ले आई। अभी बुढ़िया बाड़े के फाटक तक पहुंची ही थी कि लाल-लाल जूते पहने बूढ़ा वहां मौजूद था। बूढ़े ने बकरी से फिर वही सवाल किया:

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नहीं, बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," बकरी फिर वही रोना लेकर बैठ गई, "उछल-कूदकर निकट पेड़ के जब मैं आई, तब इक पत्ती मौक़ा पाकर मैंने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झटपट बढ़कर एक बूंद बस मैंने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढ़े ने अपनी बुढ़िया को भी निकाल दिया।

चौथे दिन वह ख़ुद बकरी चराने गया। दिन भर वह बकरी चराता रहा, दिन ढलते ही वह घर की तरफ़ चल दिया। लाल-लाल जूते पहने बाड़े के फाटक पर झट से रुक गया। इस बार भी बूढ़े ने बकरी से पूछा:

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नहीं बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," इसके आगे बकरी ने वही सब फिर कह सुनाया। "उछल-कूदकर निकट पेड़ के जब मैं आई, तब इक पत्ती मौक़ा पाकर मैंने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झट से बढ़कर एक बूंद बस मैंने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढ़ा क्रोध से आग-बबूला हो उठा। वह लोहार के यहां जा पहुंचा, लोहार से उसने छुरी की धार तेज़ कराई और घर आकर बकरी को हलाल करने लगा कि इसी बीच वह रस्सी तोड़कर निकल भागी। और जंगल में जा पहुंची। जंगल में उसे ख़रगोश की झोंपड़ी दिखलाई दी। वह भीतर पहुंचकर अलावघर के ऊपर छिपकर बैठ गई।

इसी समय खरगोश अपनी झोंपड़ी में आ पहुंचा और उसे लगा कि कोई उसकी झोंपड़ी में छिपकर बैठा है। खरगोश ने पूछा :

"घर में कौन है?" अलावघर पर बैठी बकरी बोली :

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधड़ी-उधड़ी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर,
मारूंगी मैं रुला-रुलाकर,
तुम्हें रौंदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर, तुम्हें फाड़कर!
लड़ना-भिड़ना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

खरगोश डरकर घर से निकल भागा और एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वहां बैठा रोता रहा। तभी उधर से भालू कहीं जा रहा था। उसने पूछा :

"अरे, खरगोशवे, रो क्यों रहा है?"

"भालू भाई, मेरी झोंपड़ी में एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! रोऊं न तो क्या करूं?"

भालू ने उसे धीरज बंधाया :

"मैं उसे निकाल बाहर करूंगा!"

झटपट झोंपड़ी तक जाकर भालू ने पूछा :

"खरगोश की झोंपड़ी में कौन है?"

बकरी ने अलावघर से ही जवाब दिया :

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधड़ी-उधड़ी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर,

मारूंगी मैं रुला-रुलाकर,
तुम्हें रौंदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर, तुम्हें फाड़कर!
लड़ना-भिड़ना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

भालू डरकर झोंपड़ी से निकल भागा।

"नहीं, खरगोश, मैं उसे नहीं भगा सकता। मैं खुद उससे डरता हूं!" भालू ने टके-सा जवाब दे दिया।

खरगोश फिर पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। अचानक उधर से भेड़िया निकला। उसे रोता देखकर पूछने लगा:

"अरे, खरगोशवे, रो क्यों रहा है?"

"भेड़िये भैया, मेरी झोंपड़ी में एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! रोऊं न तो क्या करूं?"

भेड़िया बोला:

"मैं उसे खदेड़कर बाहर कर दूंगा!"

"भालू हिम्मत हार गया तो तुम्हारी क्या बिसात?"

"अरे, मैं चुटकियों में उसे भगा दूंगा!"

भेड़िया झोंपड़ी पर पहुंचा, उसने आवाज लगाकर पूछा:

"खरगोश की झोंपड़ी में कौन है?"

बकरी ने अलावघर से कहा:

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधड़ी-उधड़ी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर,
मारूंगी मैं रुला-रुलाकर,
तुम्हें रौंदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर, तुम्हें फाड़कर!
लड़ना-भिड़ना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

भेड़िया भी डर के मारे निकल भागा।

"नहीं, खरगोश, मैं उसे नहीं भगा सकता। उस जानवर से [illegible] डर लगता है!" भेड़िया भी दुम दबाकर खिसक लिया।

खरगोश फिर पहले की तरह पेड़ के नीचे बैठकर रोने-पीटने लगा। अचानक उधर से लोमड़ी गुज़री, उसने खरगोश को रोता हुआ देखकर पूछा:

"अरे, खरगोशवे, रो क्यों रहा है?"

"लोमड़ी दीदी, मेरी झोंपड़ी में एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! मैं बेघर हो गया हूं। रोऊं न तो क्या करूं?"

और लोमड़ी बोली:

"मैं उसे निकाल बाहर करूंगी!"

"भालू ने कोशिश की, लेकिन हार मान गया, भेड़िये ने भी कोशिश की, लेकिन दुम दबाकर भाग गया। आखिर तुम उसे कैसे भगा सकती हो?"

"देख लेना, अगर निकाल बाहर न करूं!"

लोमड़ी ने आवाज़ लगाई:

"खरगोश की झोंपड़ी में कौन है?"

तब बकरी अलावघर से बोली:

"मक्कू बकरी, मक्कू बकरी,
बाल है मेरी उधड़ी-उधड़ी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर,
मारूंगी मैं रुला-रुलाकर,
तुम्हें रौंदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर, तुम्हें फाड़कर!
लड़ना-भिड़ना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

लोमड़ी थर-थर कांपने लगी और वहां से निकल भागी।

"डर के मारे मेरा बुरा हाल है, मैं तेरी मदद नहीं कर सकती, खरगोश!"

खरगोश फिर पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। वह लगातार सुबकियां ले-लेकर रोए जा रहा था। न जाने कहां से एक केकड़ा रेंगता-रेंगता चला आया और पूछने लगा :

"खरगोश भैया, तुम क्यों रो रहे हो?"

"भाई केकड़े, मेरी झोंपड़ी में एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! अब तुम्हीं बताओ, मैं रोऊं न तो क्या करूं?"

"ठीक है, मैं उसे निकाल बाहर करूंगा!"

"भालू ने कोशिश की, लेकिन हार मान गया, भेड़िये ने भी कोशिश की, लेकिन दुम दबाकर भाग गया, लोमड़ी ने भी कोशिश की, लेकिन थर-थर कांपने लगी। तुम भी नाकाम साबित होगे।"

"देख लेना, अगर मैं उसे निकाल बाहर न करूं!"

केकड़ा झोंपड़ी में रेंगता हुआ घुस गया। फिर उसने ज़ोर से पूछा :

"खरगोश की झोंपड़ी में कौन है?"

बकरी पहले की तरह अलावघर से बोली :

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधड़ी-उधड़ी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर,
मारूंगी मैं रुला-रुलाकर,
तुम्हें रौंदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर, तुम्हें फाड़कर!
लड़ना-भिड़ना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

लेकिन केकड़ा ज़रा भी नहीं डरा। वह रेंगता हुआ आगे बढ़ता रहा, धीरे-से अलावघर के ऊपर जा पहुंचा। वहां उसने बकरी को अपने मजबूत पंजे में जकड़ लिया और बोला :

"सुन री, बकरी, मैं हूं केकड़ा,
मूर्ख नहीं हूं, समझ गई तू?"

इधर पजा कसा, उधर बकरी मिमियाने लगी। वह अलावघर से कूदकर भागी और सिर पर पैर रखकर गायब हो गई!

खरगोश खुशी-खुशी उछलने-कूदने लगा। वह अपनी झोंपड़ी में आया और केकड़े के प्रति आभार प्रकट किया। तब से आज तक वह अपनी झोंपड़ी में रहता चला आ रहा है।

दादाजी का दस्ताना

एक थे बूढ़े दादाजी। जंगल से होकर कहीं जा रहे थे। पीछे-पीछे उनका कुत्ता भाग रहा था। चलते-चलते दादाजी के हाथ का दस्ताना गिर गया। इस बीच कहीं से एक चुहिया दौड़ती आई और दादाजी के दस्ताने में छिपकर बैठ गई और ज़रा दम लेकर बोली :

"अब मैं यहीं रहूंगी।"

इसी वक़्त एक मेंढक फुदकता हुआ वहां आ पहुंचा। उसने आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, मैं हूं चुनमुन चुहिया, लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं फुदकू मेंढक हूं। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ!"

इस तरह एक से दो हो गए। अचानक भागता हुआ एक खरगोश वहां आ पहुंचा और दस्ताने के क़रीब आकर उसने आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, हम हैं – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेंढक। लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं उड़न-छू खरगोश हूं। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ।"

अब वे तीन हो गए। ठीक इसी वक़्त दौड़ती-दौड़ती एक लोमड़ी वहां आ

पहुंची। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, हम हैं – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेंढक और उड़न-छू खरगोश। लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं हूं चटक-मटक लोमड़ी। मुझे भी अन्दर आ जाने दो।"

"ठीक है! अन्दर आ जाओ।"

इस तरह एक-एक कर वे चार हो गए।

इसी समय दौड़ता हुआ एक भेड़िया वहां आ पहुंचा। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, हम हैं – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेंढक, उड़न-छू खरगोश और चटक-मटक लोमड़ी! लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं हूं भुक्खड़ भेड़िया। मुझे अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ!"

अब वे पांच हो गए। इसी तरह कहीं से भटकता हुआ जंगली सूअर वहां आ पहुंचा और दस्ताने के पास आकर उसने गुर्राते हुए आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, हम हैं – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेंढक, उड़न-छू खरगोश, चटक-मटक लोमड़ी और भुक्खड़ भेड़िया। लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं हूं झगड़ू शूकर। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

क्या मुसीबत है! सभी दस्ताने में रहना चाहते हैं!

"देखो, अब तुम्हारे लिए जगह नहीं है! वैसे ही यहां दम घुटा जा रहा है!"

"देख लो, किसी न किसी तरह जगह निकल आएगी। बस, ज़रा-सी जगह दे दो!"

"अच्छा, तो आ जाओ। अब किया ही क्या जा सकता है!"

जंगली सूअर भी अन्दर पहुंच गया। दस्ताने में पूरे छह जानवर जमा हो गए। हिलना-डुलना तक मुश्किल हो रहा था!

और तो और। कहीं से झूमता हुआ एक भालू भी आ पहुंचा और वहां पहुंचते ही जोर से गुर्राया, फिर उसने दहाड़ते हुए आवाज़ दी :

"दस्ताने में कौन रहता है?"

"अरे, हम हैं—चुनमुन चुहिया, फुदकू मेंढक, उड़न-छू खरगोश, चटक-मटक लोमड़ी, भुक्खड़ भेड़िया और झगड़ू शूकर! लेकिन तुम कौन हो?"

"अन्दर भीड़ तो बहुत है! पर मेरे भर की जगह निकल ही आएगी! मैं हूं खौफ़नाक भालू।"

"तुम्हें कैसे अन्दर आने दें? अन्दर तो वैसे ही दम घुटा जा रहा है।"

"किसी भी तरह आने दो!"

"अच्छा, बस एक सिरे पर टिक जाओ!"

यह भी अन्दर पहुंच गया। दस्ताने के अन्दर सात-सात जानवर समा गए। टस से मस होने भर की जगह न रह गई। लगा कि दस्ताना अब फटा, अब फटा।

उधर दादाजी को ख्याल आया कि उनके हाथ का दस्ताना कहीं गिर गया है। वह उसे ढूंढ़ने के लिए वापस लौटे। कुत्ता उनके आगे-आगे भागा। वह दौड़ता गया, दौड़ता गया और आखिर उसे दस्ताना पड़ा दिखाई दिया, पर यह क्या? दस्ताना तो हिल-डुल रहा है! कुत्ता तब भौंकने लगा।

दस्ताने में घुसे हुए सारे जानवर डर गए। अपनी जान बचाने के लिए वे दस्ताने से निकलकर जंगल की ओर सिर पर पांव रखकर भागे। तभी दादाजी ने वहां पहुंचकर अपना दस्ताना उठा लिया।

बहन लोमड़ी, भाई भेड़िया

एक लोमड़ी थी। उसने अपने लिए झोंपड़ी बनाई और उसमें रहने लगी। जाड़े का मौसम था। लोमड़ी का ठंड के मारे बुरा हाल था। ठण्ड से थर-थर कांपने लगी। वह गांव में अपने चूल्हे के लिए आग लेने गई। लोमड़ी ने एक बूढ़ी औरत के पास आकर कहा :

"दादी मां, नमस्ते! मुझे अपने चूल्हे से थोड़ी-सी आग दे दो। कभी अवसर आने पर इस उपकार का बदला चुका दूंगी।"

"लोमड़ी बहन, बैठ जाओ, ज़रा सुस्ता लो, आग ताप लो। तब तक मैं कचौड़ियां बना लूं।"

बुढ़िया खसखस की कचौड़ियां बना रही थी। उन्हें चूल्हे से उतार-उतारकर मेज़ पर रखती जा रही थी। लोमड़ी ने ताज़ी कचौड़ियों पर एक ललचाई नज़र डाली और एक बड़ी-सी कचौड़ी चुपके से उठाकर भाग गई। उसने कचौड़ी के भीतर भरे हुए खसखस के दाने बीन-बीनकर खा लिए और उसके अंदर भूसा भर दिया। फिर भागती हुई अपनी राह चल दी।

वह दौड़ी चली जा रही थी कि रास्ते में उसे चरवाहे छोकरे मिले। वे गायों के झुण्ड को पानी पिलाने के लिए नदी की तरफ़ हांककर ले जा रहे थे।
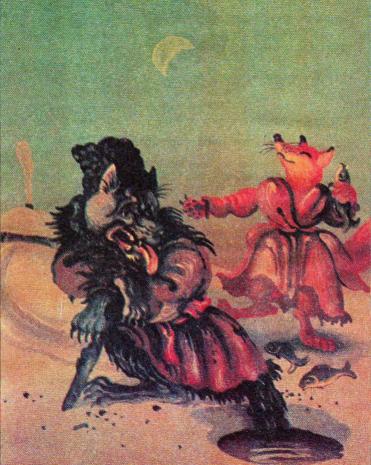
"नमस्ते, छोकरो!"

"नमस्ते, लोमड़ी दीदी!"

"यह कचौड़ी ले लो, बदले में एक बछड़ा दे दो।"

"मंजूर है," लड़कों ने कहा।

"लेकिन इसे अभी न खाने लगना, जब मैं गांव से चली जाऊं, तभी इसे खाना।"

खैर, अदला-बदली हो गई। लोमड़ी ने बछड़े की रस्सी थामी और झट से जंगल की तरफ़ भाग निकली।

लड़के कचौड़ी खाने लगे तो देखा कि वहां भूसा ही भूसा भरा हुआ है।

उधर लोमड़ी झट से अपनी झोंपड़ी पर पहुंची। उसने पेड़ काटा और अपने लिए बर्फ़ पर चलनेवाली स्लेज गाड़ी बनाई। उसमें बछड़े को जोतकर चल दी।

तभी एक भेड़िया उधर निकल आया।

"लोमड़ी बहन, नमस्ते!"

"भेड़िये भाई, नमस्ते!"

"अरे, यह बछड़ेवाली स्लेज गाड़ी कहां से मिल गई?"

"मैंने इसे खुद बनाया है।"

"मुझे भी अपनी स्लेज पर बिठा लो।"

"तुम्हें कहां बिठाऊं? तुम तो मेरी गाड़ी ही तोड़ दोगे।"

"नहीं, मैं तुम्हारी गाड़ी पर बस एक पैर टिका लूंगा।"

"ठीक है, रख लो।"

थोड़ा आगे चलने के बाद भेड़िये ने कहा:

"लोमड़ी बहन, क्या मैं दूसरा पैर भी रख लूं?"

"भाई, तुम तो मेरी गाड़ी तोड़ डालोगे!"

"नहीं, बहन, तुम्हारी गाड़ी टूटेगी नहीं।"

"ठीक है, दूसरा पैर भी रख लो।"

भेड़िये ने अपना दूसरा पैर भी स्लेज गाड़ी पर रख लिया। इस तरह वे

दोनों चलते रहे, चलते रहे।

अचानक चरचराने की तेज़ आवाज़ हुई।

"भाई, तुम तो मेरी स्लेज ही तोड़े दे रहे हो!"

"नहीं, लोमड़ी बहन, यह तो मैं दांत से अखरोट फोड़ रहा हूं।"

"देखो, ज़रा ध्यान रखना!"

फिर वे आगे चल दिए।

"लोमड़ी बहन, क्यों न मैं तीसरा पैर भी रख लूं?"

"कहां पैर रखोगे? स्लेज टूट जाएगी। तब मैं लकड़ी किस पर ढोऊंगी!"

"नहीं, बहन, गाड़ी को कुछ नहीं होगा।"

"अच्छा, तो पैर रख लो!"

भेड़िये ने तीसरा पैर भी स्लेज गाड़ी पर रख लिया। फिर चरचराने की तेज़ आवाज़ हुई।

"अरे, तोबा!" लोमड़ी बोली। "भाई, अब तुम मेहरबानी करके उतर जाओ। तुम मेरी गाड़ी का कचूमर निकाल दोगे!"

"अरे, बहन, तुम नाहक परेशान होती हो। मैंने तो दांत से अखरोट फोड़ा है।"

"लाओ, मुझे भी दो!"

"खतम हो गया। बस आखिरी बचा था।"

फिर वे आगे चलते रहे, चलते रहे।

"लोमड़ी बहन, मुझे अब अपनी गाड़ी पर बैठ ही जाने दो!"

"तुम्हीं बताओ, कहां बैठोगे? वैसे ही मेरी गाड़ी चरचरा रही है। अब क्या उसे तोड़कर ही मानोगे?"

"मैं बस हौले-से बैठूंगा।"

"ठीक है, तुम्हीं जानो!"

बस, फिर क्या! भेड़िया जैसे ही बैठा, स्लेज गाड़ी चरचराकर टूट गई। लोमड़ी ने उसे खूब बुरा-भला कहा। जब उसे कोस-कोसकर थक गई तो बोली :

"जाओ, लकड़ियां चीरकर लाओ और नई स्लेज के लिए पेड़ गिराओ। और उसे ढोकर यहां लाओ।"

"मैं पेड़ कैसे गिराऊंगा, मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि स्लेज के लिए कैसी लकड़ी चाहिए?"

"तो यह बात है, स्लेज तोड़नी तुम्हें आती है, पर लकड़ी का इन्तज़ाम करने में तुम्हारी अक्ल चरने चली गई।"

फिर उसे पहले की तरह कोसने लगी। जब कोस-कोसकर खूब थक गई तो बोली:

"हां, तो सुनो, जंगल में पहुंचने के बाद यह कहना: 'खुद कटकर गिर जाए पेड़, सीधा पेड़, टेढ़ा पेड़! खुद कटकर गिर जाए पेड़, सीधा पेड़, टेढ़ा पेड़!'"

यह सुनकर भेड़िया वहां से चल दिया।

जंगल में पहुंचने के बाद वही बातें दोहराने लगा जो लोमड़ी ने बताई थीं:

"खुद कटकर गिर जाए पेड़, टेढ़ा पेड़, टेढ़ा पेड़! खुद कटकर गिर जाए पेड़, टेढ़ा पेड़, टेढ़ा पेड़!"

और पेड़ कटकर गिर पड़ा। पेड़ भी क्या था – टहनियां ही टहनियां। एक सीधी छड़ी तक न बने ऐसे पेड़ से – स्लेज की पटरियों की तो बात ही दूर रही।

ऐसा पेड़ भेड़िया उठा लाया था। उसे देखते ही लोमड़ी आग-बबूला हो उठी। फिर क्या?

शुरू हो गया उसे डांटने-फटकारने का नया दौर:

"अरे, अक्ल के दुश्मन, तुझे जैसा मैंने बताया था, उसे तूने सही-सही न दोहराया होगा!"

"मैंने तो, लोमड़ी बहन, वहां खड़े होकर यही दोहराया था: 'खुद कटकर गिर जाए पेड़, टेढ़ा पेड़, टेढ़ा पेड़!'"

"मैं पहले ही जानती थी! भाई, तुम तो निरे काठ के उल्लू हो! बैठ जाओ

यहां, अभी मैं खुद पेड़ काटकर लाती हूं।"

और वह जंगल की ओर चल दी।

भेड़िये को बैठे-बैठे भूख लग आयी। उसने लोमड़ी के घर को छान मारा, वहां खाने के लिए कुछ न था। भेड़िया सोचता रहा, जुगाड़ बैठाता रहा...

"आओ, फिर बछड़े को ही मारकर खा डालें और यहां से रफ़ू-चक्कर हो जाएं।"

भेड़िये ने बछड़े की बग़ल में एक सूराख बनाया और अन्दर ही अन्दर उसे खाकर खोखला कर दिया। बीच की खाली जगह में उसने गौरैयां भर दीं और सूराख को फूस से ढंक दिया। और खुद नौ दो ग्यारह हो गया।

घर लौटकर लोमड़ी ने नई स्लेज बनाई और उसमें बैठकर बोली:

"चल रे, बछड़े, चल!"

लेकिन बछड़ा अपनी जगह से न हिला। लोमड़ी ने उसे चाबुक मारा... चाबुक मारते ही फूस का गुच्छा बाहर गिर पड़ा और फुर्र-फुर्र करती गौरैयां उड़ गईं।

"अरे, शैतान कहीं के! देखना, कैसा सबक़ सिखाती हूं तुझे!"

लोमड़ी जाकर रास्ते में लेट गई। थोड़ी देर में मछेरे अपनी गाड़ी पर मछलियां लादे उधर से निकले। उन्हें आता देखकर लोमड़ी ने अपनी सांस रोक ली, जैसे कि मर गई हो। मछेरों ने रास्ते में लोमड़ी को पड़ी देखा तो बोले: "इसे भी गाड़ी में डाल लेते हैं। बेच देंगे, अच्छे पैसे मिल जाएंगे!" लोमड़ी को गाड़ी में डालकर वे आगे बढ़ लिए। वे चलते रहे, चलते रहे। इस बीच लोमड़ी ने एक-एक करके मछलियां फेंकनी शुरू कर दीं। जब ढेर सारी मछलियां फेंक चुकी तो खुद भी चुपके से खिसक ली। मछेरे अपनी गाड़ी हांकते हुए बढ़ते चले गए। इधर लोमड़ी ने सारी मछलियों को बटोरकर एक ढेर बनाया और मज़े से उन्हें खाने बैठ गई।

इसी बीच वह भेड़िया भागता हुआ आया:

"नमस्ते, लोमड़ी बहन!"

"नमस्ते, भेड़िये भाई!"

"यहां तुम क्या कर रही हो, लोमड़ी बहन?"

"देखते नहीं, मछलियां खा रही हूं।"

"मुझे भी दो न!"

"जाओ, खुद ही मछलियां पकड़ लाओ।"

"पर मुझे तो मछलियां पकड़ना नहीं आता।"

"नहीं आता तो मैं क्या करूं? मैं तो तुम्हें एक छोटा टुकड़ा तक न दूंगी!"

"अच्छा, तो मछली पकड़ना ही सिखा दो!"

और लोमड़ी ने मन में सोचा: "ठहर जरा! तूने मेरा बछड़ा मार डाला। अब मैं तुझे बढ़िया-सा इनाम दूंगी!"

"तुम नदी पर जाओ, वहां लोगों ने पानी निकालने के लिए जो सूराख बना रखा है उसमें अपनी दुम लटका दो और वहीं बैठ जाओ। फिर धीरे-धीरे दुम हिलाते हुए यह कहते जाओ: 'छोटी-बड़ी मछलियां आएं, मेरी दुम में फंसती जाएं! छोटी-बड़ी मछलियां आएं, मेरी दुम में फंसती जाएं!' बस यही बार-बार दोहराते रहना, मछली तुम्हारी दुम में फंस जाएगी।"

"ऐसी बढ़िया तरकीब सुझाने के लिए धन्यवाद," भेड़िये ने कहा।

झटपट भेड़िया नदी किनारे पहुंचा और बर्फ़ से जमी नदी पर सूराख ढूंढ़ा और उसमें अपनी दुम लटकाकर मजे से बैठ गया। इस तरह धीरे-धीरे दुम हिलाता हुआ लोमड़ी का सिखाया पाठ दोहराने लगा: "छोटी-बड़ी मछलियां आएं, मेरी दुम में फंसती जाएं! छोटी-बड़ी मछलियां आएं, मेरी दुम में फंसती जाएं!" लोमड़ी सरकंडे के पीछे से यह रट लगाती जा रही थी: "ढम-ढम-ढम, भेड़िये की दुम जाए जम-जम-जम!" जाड़ा तो कड़ाके का था ही, सब कुछ जमा जा रहा था।

मछली पकड़ने के लालच में भेड़िये ने अपनी रट जारी रखी: "छोटी-बड़ी मछलियां आएं, मेरी दुम में फंसती जाएं!" लोमड़ी दूसरी ही रट लगा रही थी: "ढम-ढम-ढम, भेड़िये की दुम जाए जम-जम-जम!"

इस तरह भेड़िया सूराख में दुम डाले बैठा रहा। लोमड़ी की चाल सफल हुई। आखिर सूराख का पानी भी जम गया और उसमें भेड़िये की दुम जकड़ गई।

तब लोमड़ी भागकर गांव पहुंची:

"अरे, लोगो, भेड़िया आया रे! अरे, मारो भेड़िये को रे!"

गांव के लोग बल्लम, लाठियां और कुल्हाड़े लेकर नदी की ओर भागे। उन सबने मिलकर भेड़िये को मार डाला। लोमड़ी आज भी मज़े से अपनी झोंपड़ी में रह रही है।

फूस का बछड़ा – राल की पीठ

पुरानी बात है। कहीं एक बूढ़ा आदमी अपनी बुढ़िया के साथ रहा करता था। बूढ़ा पेड़ों से राल निकालता था, बुढ़िया घर की देखभाल करती थी।

एक बार बुढ़िया ने जिद करते हुए बूढ़े से कहा :

"तुम मेरे लिए फूस का एक बछड़ा बना दो!"

"तू भी अजीब मूर्ख है! अरे, फूस का बछड़ा तेरे किस काम का?"

"उसे मैं चराने ले चलूंगी।"

बूढ़ा मजबूर था। पत्नी की जिद के कारण उसे फूस का बछड़ा बनाना ही पड़ा। उसने बछड़ा बनाकर उसके पेट और पीठ पर राल पोत दी।

अगले दिन सुबह बुढ़िया ने तकली उठाई और बछड़े को चराने चल दी। एक टीले पर बैठकर तकली पर सूत कातते हुए यह कहती जाती :

"फूस का है तू बछड़ा, राल की तेरी पीठ, चर, मेरे बछड़े, चर-चर-चर!"

इस तरह बुढ़िया सूत कातती रही, तकली चलाती रही। अचानक उसे नींद आ गई।

इस बीच सघन वन मे एक भालू भागता हुआ वहां आया और बछेड़े पर झपटा :

"तू कैसा जानवर है रे?"
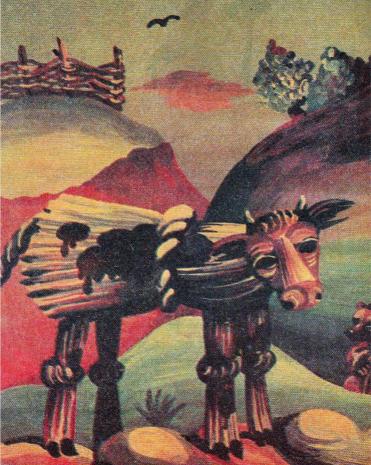
"फूस का मैं हूं बछड़ा, राल की मेरी पीठ!"

"ला, मुझे थोड़ी राल दे दे, कुत्तों ने मेरे बाल नोच लिए हैं!"

लेकिन राल की पीठवाला बछड़ा खामोश खड़ा रहा। भालू को बड़ा गुस्सा आया। उसने आव देखा न ताव बछड़े की पीठ पर अपने पंजे का एक ज़ोरदार झपट्टा मारा—और भालू मियां खुद राल में जा चिपके।

बुढ़िया की नींद खुली तो उसने भालू को राल में चिपका हुआ पाया। उसने बूढ़े को ज़ोर से पुकारा:

"सुनो, सुनो, जल्दी आओ, हमारे बछड़े ने भालू पकड़ा है!"

बूढ़े ने भालू को पकड़कर तहखाने में बन्द कर दिया।

दूसरे दिन सुबह बुढ़िया ने फिर से अपनी तकली ली और बछड़े को चराने चल दी। टीले पर जा बैठी। तकली चलाती, सूत कातती हुई यह कहती जाती:

"फूस का है तू बछड़ा, राल की तेरी पीठ, चर, मेरे बछड़े, चर-चर-चर!"

बस, इस तरह तकली चलाते और सूत कातते हुए बुढ़िया को नींद आ गई। तभी सघन वन से एक भेड़िया भागता हुआ वहां आया और बछड़े पर झपटा:

"तू कैसा जानवर है रे?"

"फूस का मैं हूं बछड़ा, राल की मेरी पीठ।"

"ला, मुझे थोड़ी राल दे दे, कुत्तों ने मेरे बाल नोच लिए हैं!"

"ले लो।"

राल की पीठ पर पंजा लगाते ही भेड़िया चिपक गया।

बुढ़िया की नींद खुली तो उसने भेड़िये को राल में चिपका हुआ पाया। उसने बूढ़े को ज़ोर से पुकारा:

"सुनो, सुनो, जल्दी आओ, हमारे बछड़े ने भेड़िया पकड़ा है!"

बूढ़ा लपककर वहां आ पहुंचा और उसने भेड़िये को भी तहखाने में डाल दिया।

तीसरे दिन फिर बुढ़िया बछड़े को चराने चल दी और सूत कातने लगी। सूत कातते-कातते ऊंघने लगी।

अचानक एक लोमड़ी वहां पहुंची। बछड़े से पूछने लगी:

"तू कैसा जानवर है रे?"

"फूस का मैं हूं बछड़ा, राल की मेरी पीठ।'

"ला, मुझे थोड़ी राल दे दे, कुत्तों ने मेरे बाल नोच लिए हैं!"

"ले लो।"

और फिर लोमड़ी भी चिपक गई। बुढ़िया की नींद खुली और उसने बूढ़े को पहले की तरह ज़ोर से पुकारा।

बूढ़े ने लोमड़ी के साथ भी वही सलूक किया। लोमड़ी भी तहखाने में बन्द हो गई। अहा, कितने जानवर इकट्ठे हो गए!

बूढ़े ने चाकू उठाया और उसकी धार तेज़ करने लगा। धार तेज़ करते हुए बोलता जा रहा था:

"भालू को मारकर उसकी खाल उधेड़ूंगा। बढ़िया कोट बनेगा।"

भालू की तो यह सुनकर सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, बोला:

"मुझे मत मारो, मुझे छोड़ दो! मैं तुम्हारे लिए शहद लाऊंगा।"

"धोखा तो नहीं दोगे?"

"नहीं, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगा।"

"खबरदार, जो धोखा दिया!" यह कहकर उसने भालू को छोड़ दिया। और फिर से चाकू की धार तेज़ करने लगा। सहमे हुए भेड़िये ने पूछा:

"बाबा, यह चाकू किसलिए तेज़ कर रहे हो?"

"तुम्हारी खाल उतारकर अपने लिए जाड़े की गरम टोपी बनाऊंगा!"

"मुझे छोड़ दो! मैं तुम्हारे लिए मेमना लेकर आऊंगा।"

"खबरदार, धोखा मत देना!"

उसने भेड़िये को भी छोड़ दिया और फिर से चाकू की धार तेज़ करने लगा।

"बाबा, यह चाकू किसलिए तेज़ कर रहे हो?" लोमड़ी ने सहमी आवाज में पूछा।

"तुम्हारी खाल बहुत बढ़िया है," बूढ़े ने कहा। "बुढ़िया के गरम कोट के लिए इसका खूबसूरत कालर बनेगा।"

"मुझे मत मारो! मैं तुम्हारे लिए मुर्गियां, बत्तखें और हंस लेकर आऊंगी।"

"ख़बरदार, धोखा मत देना!" यह कहकर बूढ़े ने लोमड़ी को भी आज़ाद कर दिया।

अगले दिन सवेरे तड़के ही दरवाज़ा खटका।

"जाओ, देखो तो कौन है," बुढ़िया ने कहा।

बूढ़ा उठकर बाहर आया। दरवाज़े पर भालू खड़ा था। वह मधुमक्खियों का समूचा छत्ता ही उठा लाया था।

बूढ़े बाबा ने शहद लेकर भालू को विदा किया। इसी बीच फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई। भेड़िया मेमनों को हांककर लाया था। इतने में लोमड़ी भी वहां पहुंच गयी। उसके साथ ढेर सारी मुर्गियां, हंस और बत्तखें थीं।

बूढ़ा भी खुश, बुढ़िया भी खुश। दोनों मज़े से जीने लगे।

बिल्ला और मुर्ग़ा

किसी ज़माने में बिल्ला और मुर्ग़ा एक ही घर में साथ-साथ रहते थे। वे दोनों गहरे दोस्त थे। एक दूसरे को बहुत चाहते थे और इस तरह सुख-चैन की ज़िन्दगी बिता रहे थे। एक दिन बिल्ला लकड़ी लाने के लिए जंगल जाने लगा। घर से जाते समय उसने मुर्ग़े से कहा :

"देखो, भाई, अलावघर के ऊपर बैठना, रोटी खाना और घर में किसी को आने न देना। कोई भी दरवाज़ा खटखटाए, तुम्हें बुलाए, लेकिन तुम बाहर मत निकलना। मुझे जंगल जाकर अलावघर के लिए लकड़ी लानी है।"

"ठीक है," मुर्ग़े ने कहा। जैसे ही बिल्ला घर से बाहर निकला, मुर्ग़े ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

इस बीच एक लोमड़ी वहां आ पहुंची। मुर्ग़े-मुर्ग़ियां उसे बेहद पसंद हैं! वह मुर्ग़े को पुकारने लगी :

"मुर्ग़े, मुर्ग़े, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाज़ा खोल, नहीं तो खिड़की दूंगी तोड़!"

मुर्ग़े ने लोमड़ी को यह उत्तर दिया :

"बिल्ला भाई दूर गया है, कुकड़ूं-कूं, नहीं खोलता मैं दरवाज़ा, कुकड़ूं-कूं।"

यह सुनते ही लोमड़ी ने घर की खिड़की तोड़ डाली, मुर्ग़े की गर्दन दबोची और अपने घर की राह चल दी। मुर्ग़ा अपने दोस्त बिल्ले को आवाज़ें देने लगा, दुखी होकर यह गाने लगा :

"बिल्ले भाई, मुझे बचाओ, लोमड़ी के पंजे से छुड़ाओ! लिए जा रही जंगल पार, हरी घाटियों के उस पार, ऊंचे-ऊंचे पर्वत पार, चंचल लहरों के उस पार, बिल्ले भाई, आओ, आओ, आकर मेरी जान बचाओ!"

बिल्ले ने मित्र की आवाज़ सुनी, भागता चला आया, लोमड़ी के पंजे से उसे छुड़ा लिया। घर लाकर उसे फिर से आदेश दिया:

"देखो, अगर लोमड़ी आए तो चुप रहना, जवाब मत देना। इस बार मैं दूर जा रहा हूं।"

फिर बिल्ला वहां से चला गया।

उधर लोमड़ी इसी ताक में बैठी थी कि कब बिल्ला घर से जाए और वह मौक़ा पाए। लोमड़ी भागती हुई खिड़की के पास आई और मीठे-मीठे लहजे में मुर्ग़े को फुसलाते हुए बोली:

"मुर्ग़े, मुर्ग़े, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाज़ा खोल, नहीं तो खिड़की दूंगी तोड़!"

लेकिन मुर्ग़े को धैर्य कहां था कि वह चुप रहता! उसने फिर वही जवाब दिया:

"बिल्ला भाई दूर गया है, कुकड़ूं-कूं, नहीं खोलता मैं दरवाज़ा, कुकड़ूं-कूं!"

लोमड़ी ने आव देखा न ताव खिड़की से छलांग लगाकर घर के अन्दर जा पहुंची। वहां शोरबा और दलिया बना रखा था। उसे झटपट खा गई। फिर उसने मुर्ग़े की गर्दन पकड़ी और चल दी। मुर्ग़ा फिर दर्द भरी आवाज़ में अपने दोस्त बिल्ले को बुलाने लगा:

"बिल्ले भाई, मुझे बचाओ, लोमड़ी के पंजे से छुड़ाओ! लिए जा रही जंगल पार, हरी घाटियों के उस पार, ऊंचे-ऊंचे पर्वत पार, चंचल लहरों के उस पार! बिल्ले भाई, आओ, आओ, आकर मेरी जान बचाओ!"

उसने एक बार गाया – कोई असर न हुआ। दुबारा गाया – बिल्ला दोस्त भागता चला आया। उसने लोमड़ी के पंजे से अपने दोस्त को छुड़ाया। उसे घर तक सकुशल पहुंचाकर सख़्ती से आदेश दिया:

"देखो, मुर्ग़े, अलावघर पर चुपचाप बैठे रहना, भूख लगे तो रोटी खाना और जैसे ही लोमड़ी आकर तुम्हें पुकारे, बस चुप्पी साधे बैठे रहना। बोलना नहीं। मुझे बहुत दूर जाना है, बहुत दूर, और तब तुम चिल्लाओ या न चिल्लाओ मुझ तक तुम्हारी आवाज़ न पहुंच पाएगी!"

इधर बिल्ला घर से चला और उधर लोमड़ी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। उसने फिर वही राग छेड़ दिया:

"मुर्ग़े, मुर्ग़े, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाज़ा खोल, नहीं तो खिड़की दूंगी तोड़!"

मुर्ग़ा भला कहां चुप रहनेवाला था! उसने भी जवाब दिया:

"बिल्ला भाई दूर गया है, कुकड़ूं-कूं, नहीं खोलता मैं दरवाज़ा, कुकड़ूं-कूं!"

लोमड़ी ने फिर खिड़की से छलांग लगाई। शोरबा और दलिया खा-पी डाला। और फिर मुर्ग़े की गर्दन दबोचकर चल दी। मुर्ग़ा एक बार चिल्लाया, दो बार चिल्लाया, तीसरी बार भी चीखा-चिल्लाया... पर बिल्ला तो कहीं दूर ही निकल गया था और इस बार मुर्ग़े की पुकार उस तक न पहुंच पाई।

उधर लोमड़ी झटपट मुर्ग़े को उठाकर अपने घर पहुंच गई।

बिल्ला जंगल से जब घर वापस आया तो मुर्ग़ा घर से ग़ायब था। उसे बड़ा अफ़सोस हुआ। तुरन्त तरकीब सोचने लगा, देर तक सोचता रहा कि अचानक उसे रास्ता सूझा: उसने अपना बाजा संभाला, रंग-बिरंगे चित्रोंवाला थैला गले में लटकाया और लोमड़ी के घर की ओर चल दिया।

लोमड़ी घर पर नहीं थी। वह शिकार की तलाश में कहीं गई थी। घर पर उसकी चार बेटियां और बेटा फ़िलिपोक ही थे।

बिल्ला खिड़की के पास अपना बाजा बजाकर यह गीत गाने लगा:

"लोमड़ी रानी का नया-नया घर, खेलें चार बेटियां सुंदर, बेटा उसका फ़िलिपोक, नहीं रहा कभी डरपोक! आओ, प्यारे बच्चो, आओ, तान छेड़ दी है, सुन जाओ! सुन करके फिर मुझे बताओ, अपने दादा से मिल जाओ! वाह-वाह तो करते जाओ!"

लोमड़ी की बड़ी लड़की से रहा नहीं गया, उसने अपनी छोटी बहनों से कहा:

"तुम यहीं पर बैठी रहना और मैं ज़रा देखकर आती हूं कि इतना सुरीला गीत कौन गा रहा है।"

जैसे ही लोमड़ी की बड़ी लड़की दरवाज़ा खोलकर बाहर निकली, बिल्ले ने उसके सिर पर डंडा मारा और उसे अपने थैले में डाल लिया।

और फिर वही गीत गाने लगा:

"लोमड़ी रानी का नया-नया घर, खेलें जहां चार बेटियां सुंदर..."

दूसरी लड़की से भी न रहा गया, वह भी घर से बाहर निकल आई और बिल्ले ने झट से उसके सिर पर डंडा मारा और उसे भी अपने थैले में डाल लिया। फिर वही गीत गाने लगा :

"लोमड़ी रानी का नया-नया घर, खेलें जहां चार बेटियां सुंदर ..."

तीसरी बेटी बाहर निकली, उसे भी बिल्ले ने थैले में डाल लिया, फिर चौथी बाहर निकली तो उसे भी। अब लोमड़ी का बेटा फ़िलिपोक भी उसी तरह बाहर निकलकर आया। बिल्ले ने उसका भी वही हाल किया। अब लोमड़ी के पांचों के पांचों बच्चे रंग-बिरंगे चित्रोंवाले थैले में सहमे-सहमे बैठे थे।

बिल्ले ने थैले का मुंह रस्सी से बांध दिया और लोमड़ी के घर में आ पहुंचा। देखा कि उसका मित्र मुर्ग़ा अन्तिम सांसें गिन रहा है। उसके पंख इधर-उधर छितरे पड़े हैं। एक टांग काट दी गई है। चूल्हे पर एक बर्तन में पानी गरमाया जा रहा है – मुर्ग़े को पकाया जाएगा।

बिल्ले ने मुर्ग़े की दुम पकड़कर कहा :

"मुर्ग़े भाई, होश में आओ, फड़को-फड़को, चाल दिखाओ!"

मुर्ग़ा झट से फड़क उठा, अपनी एक टांग पर खड़े होकर बाग देना चाहता था। पर वह बेचारा कुकड़ूं-कू बोलता भी तो कैसे? उसकी एक टांग ही नहीं थी। तब बिल्ले ने किसी तरह मुर्ग़े की टांग पहलेवाली जगह पर जोड़ दी, उसके कुछ पंख चिपका दिए, बस, जैसे-तैसे उसे ठीक कर दिया।

तब उन दोनों ने मिलकर लोमड़ी के घर में जो कुछ खाने-पीने का सामान था उसे खा डाला और बर्तन-वर्तन तोड़ डाले। बिल्ले ने थैले में दुबके बैठे लोमडी के बच्चों को छोड़ दिया। और वे दोनों खुशी-खुशी घर चले आए।

बस तब से वे हंसी-खुशी जिन्दगी के दिन बिता रहे हैं। वैसे ही रोटियां खाते हैं, चारा चुगते हैं। मुर्ग़ा अब बिल्ले का कहना मानता है। मुसीबत ने उसे सबक़ सिखा दिया, अक़्लमन्द बना दिया।

मिस्टर. बिल्ला

क़िस्सा बड़ा पुराना है। कहीं कोई आदमी रहता था। उसके घर में एक बिल्ला था, वह भी इतना बूढ़ा कि अब चूहे न पकड़ पाता था। एक दिन मालिक ने सोचा: "ऐसा बेकार बिल्ला किस काम का? मैं इसे जंगल में छोड़ आता हूं।" वह बिल्ले को पकड़कर जंगल में छोड़ आया।

जंगल में बूढ़ा बिल्ला फ़र वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगा। तभी एक लोमड़ी दौड़ती हुई उधर से गुज़री।

"तुम कौन हो?" लोमड़ी ने पूछा।

बिल्ले ने गुस्से से बाल खड़े करते हुए कहा:

"फ़ू-फ़ू! मेरा नाम मिस्टर बिल्ला है!"

लोमड़ी इस महिमावान मिस्टर बिल्ले से मिलकर फूली न समाई। फिर क्या था? उसने मिस्टर बिल्ले के समक्ष झटपट यह प्रस्ताव भी रख दिया:

"मिस्टर बिल्ला, आप मुझसे शादी कर लें। आपकी योग्य पत्नी बनकर रहूंगी। खाना बनाकर खिलाऊंगी।"

"ठीक है, तुम्हारा प्रस्ताव मुझे मंज़ूर है।"

फिर बिल्ला और लोमड़ी साथ-साथ रहने लगे।

लोमड़ी बिल्ले की टहल करते हुए उसे हर तरह से खुश रखती। कभी मुर्ग़ी पकड़ लाती, तो कभी कोई छोटा-मोटा जंगली जानवर उठा लाती। खुद चाहे खाए

न खाए, बिल्ले का पेट ज़रूर भरती।

एक दिन लोमड़ी के यहां ख़रगोश आकर बोला:

"लोमड़ी, लोमड़ी, मैं तुम से सगाई करना चाहता हूं। जल्द ही रस्म लेकर आऊंगा!"

"नहीं, मत आना! मेरे घर में मिस्टर बिल्ला विराजमान हैं। अगर मेरे यहां आओगे, तो पछताओगे – वह तुम्हें फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

उधर बिल्ला बाहर निकल आया। उसके सारे रोएं खड़े थे। छाती फुलाकर वह डरावनी आवाज़ में फुफकारने लगा:

"फू-फू!"

बेचारे ख़रगोश का डर के मारे दम ही निकल गया। वह तुरन्त वहां से जंगल की तरफ़ तेज़ी से भागा। वहां जाकर उसने भेड़िये, भालू और जंगली सूअर से यह सारा क़िस्सा कह सुनाया कि कैसे उसने मिस्टर बिल्ला नामक एक ख़ौफ़नाक जीव को लोमड़ी के घर में देखा। बस किसी तरह जान बचाकर भागता चला आया है।

उन सभी ने मिलकर बिल्ले को ख़ुशामद करने की एक तरकीब निकाली – उसे लोमड़ी के साथ अपने यहां दावत पर बुलाने का फ़ैसला किया।

फिर क्या था? मेहमान बिल्ले के स्वागत के लिए बढ़िया-बढ़िया खाने की लिस्ट बनाई जाने लगी।

भेड़िये ने कहा:

"मैं मांस का इन्तज़ाम करूंगा, ताकि बढ़िया शोरबा बनाया जा सके।"

जंगली सूअर ने कहा:

"मैं चुकन्दर और आलू लेने जा रहा हूं।"

भालू ने कहा:

"भाइयो, मैं ज़ायकेदार शहद लाऊंगा।"

और ख़रगोश पत्तागोभी लाने के लिए भागा।

इस तरह सबने मिलकर खाना पकाया, खाना मेज़ पर लगा दिया गया और फिर वे आपस में बहस करने लगे कि लोमड़ी और मिस्टर बिल्ले को दावत के लिए बुलाने कौन जाए?

भालू बोला:

"मैं मोटा हूं, जल्दी हांफने लग जाऊंगा।"

जंगली सूअर बोला :

"मेरी चाल बड़ी धीमी है, ऐसी चाल से भला क्या चल पाऊंगा।"

भेड़िया बोला :

"मैं बूढ़ा हूं और सुनता भी ऊंचा हूं।"

मजबूर होकर खरगोश को ही निमंत्रण लेकर जाना पड़ा।

खरगोश लोमड़ी के घर की ओर दौड़ पड़ा और वहां पहुंचकर उसने खिड़की पर तीन बार दस्तक दी — "खट-खट-खट!"

लोमड़ी झट से उछलकर बाहर आई, देखती क्या है कि खरगोश अपने पिछले पंजों पर खड़ा है।

"क्या चाहिए?" लोमड़ी ने पूछा।

"भेड़िये, भालू, जंगली सूअर और खुद अपनी ओर से मैं यह निमंत्रण लेकर आया हूं कि आप दोनों, यानी कि आप, श्रीमती लोमड़ी और मिस्टर बिल्ला आज हमारे यहां दावत पर आएं।"

खरगोश यह कहकर तुरन्त भाग गया। घर लौटा तो भालू ने उससे पूछा :

"चम्मच लाने के लिए कहना तो नहीं भूला?"

"अरे, यह तो मैं भूल ही गया!" खरगोश ने कहा। और फिर से लोमड़ी के घर जा पहुंचा। उसने खिड़की पर दस्तक दी।

"हमारे यहां आते समय चम्मच लाना न भूलिएगा," खरगोश ने कहा।

"अच्छा, अच्छा, भूलेंगे नहीं!" लोमड़ी सज-धजकर तैयार हो गई और मिस्टर बिल्ले के हाथ में हाथ डालकर दावत खाने चल दी। मिस्टर बिल्ले ने फिर से अपने बाल खड़े कर लिए और फुफकारने लगा। उसकी आंखें ऐसे चमक रही थीं जैसे जलते हुए दो हरे-हरे बल्ब हों।

उसका यह रौब-दौब देखकर भेड़िया डर के मारे झाड़ी के पीछे दुबक गया, जंगली सूअर खाने की मेज़ के नीचे घुसकर बैठ गया, भालू किसी तरह पेड़ पर चढ़ गया और खरगोश अपनी मांद में जा छिपा।

बिल्ले को जब मेज़ पर परोसे हुए मांस की महक लगी, तो झट से उधर झपटा और म्याऊं-म्याऊं करने लगा।

दूसरे जानवरों को लगा कि यह मेहमान "कम है, कम है, कम है!" की रट लगा रहा है।

"बड़ा पेटू मेहमान है! इतनी सारी चीजें उसे कम लग रही हैं!"

मिस्टर बिल्ले ने छककर खाया, जमकर पिया और वहीं मेज़ पर खर्राटे लेकर सोने लगा।

उधर मेज़ के नीचे दुबके जंगली सूअर की दुम हिल रही थी। बिल्ले को लगा कि यह कोई चूहा है। वह उधर झपटा और जब देखा कि नीचे जंगली सूअर बैठा है, तो डरकर पेड़ पर चढ़ गया, जहां भालू बैठा हुआ था।

भालू ने सोचा कि बिल्ला लड़ने आ रहा है, वह और ऊपर चढ़ गया। ऊपर की डाल टूट गई और भालू ज़मीन पर गिर पड़ा।

वह गिरा भी तो उसी झाड़ी पर, जिसके पीछे भेड़िया छिपा बैठा था। भेड़िये ने सोचा कि अब उसका अन्त आ गया और अपनी जान लेकर भागा। भालू और भेड़िया इतनी तेज़ी से भागे कि फुर्तीला खरगोश भी क्या उनका पीछा करता।

बिल्ले ने फिर से मेज़ पर चढ़कर मांस और शहद पर हाथ साफ़ करना शुरू कर दिया। इस तरह मिस्टर बिल्ले और लोमड़ी ने मिलकर सारा खाना चटकर डाला और घर चले गए।

भेड़िया, भालू, जंगली सूअर और खरगोश जब लौटकर वहां आए तो बोले:

"कैसा जानवर है! इतना छोटा और ऐसा पेटू कि हम सबको ही खा डालता!"

बकरा और भेड़ा

पुराने ज़माने की बात है। एक था बूढ़ा, एक थी बुढ़िया। उन्होंने अपने घर में बकरा और भेड़ा पाल रखा था। बकरे और भेड़े में बड़ी पक्की दोस्ती थी। उन दोनों की खूब पटती थी: जहां जाए बकरा, वहीं जाए भेड़ा। बकरा साग-बाड़ी में पत्तागोभी खाने के लिए घुसा नहीं कि भेड़ा भी झट वहीं पहुंच जाता, इसी तरह बकरा बग़ीचे में पहुंचता, तो भेड़ा भी उसके पीछे-पीछे बग़ीचे में जा पहुंचता।

"अरे, बुढ़िया, इन दोनों ने नाक में दम कर रखा है," बूढ़े ने कहा। "बेहतर हो कि हम लोग बकरे और भेड़े को घर से भगा कर छुट्टी पा लें। नहीं तो इनकी वजह से न साग-बाड़ी बचेगी और न बाग़-बग़ीचा। चलो बे, निकलो यहां से, दफ़ा हो जाओ!"

बकरे और भेड़े ने अपने लिए सफ़री झोला सिलकर तैयार किया, उसे गले में लटकाया और चल दिए।

वे दोनों चलते जा रहे थे, चलते जा रहे थे कि अचानक उन्हें खेत के बीचों-बीच भेड़िये का एक कटा हुआ सिर दिखाई पड़ा। भेड़ा ताक़तवर तो था, पर साहसी नहीं और बकरा साहसी तो था, पर ताक़तवर नहीं।

"भेड़े भाई, सिर को उठा लो, तुम तो ताक़तवर हो।"

"नहीं, भाई, तुम्हीं इसे उठा लो, तुम तो साहसी हो।"

उन दोनों ने मिलकर भेड़िये का कटा हुआ सिर उठाया और झोले में डाल दिया। फिर वे अपनी राह चलने लगे। चलते-चलते अचानक उन्हें आग जलती हुई दिखाई दी।

"चलो, हम लोग उस ओर चलते हैं। वहीं ठहरकर रात बिता लेंगे, ताकि हमें भेड़िये न खा जाएं।"

वे दोनों आग के क़रीब आए। पर वहां तो माजरा ही कुछ और था। उन्होंने देखा कि भेड़िये दलिया पका रहे हैं।

"नमस्ते, जवानो!"

"नमस्ते, नमस्ते! जब तक दलिया उबल रहा है, तब तक तुम्हारे मांस का ज़ायका ही ले लें।"

भेड़ा भयभीत हो गया। लेकिन बकरा भय के बावजूद हिम्मत से काम ले रहा था। उसने कहा:

"भेड़े भाई, झोले में से ज़रा भेड़िये का सिर तो निकालो!"

भेड़े ने कटा हुआ सिर निकाला।

"अरे, यह नहीं, बड़ावाला निकालो!" बकरे ने कहा।

भेड़े ने फिर वही सिर बाहर निकाला।

"नहीं! यह किस काम का! सबसे बड़ावाला निकालो!"

अब तो भेड़िये डर गए। सोचने लगे, कैसे जान बचाकर यहां से खिसका जाए। ज़रा देखो तो – एक के बाद एक भेड़ियों के सिर निकाले जा रहे हैं!

आखिर एक भेड़िये ने चुप्पी तोड़ी, बोला:

"भाइयो, यहां बैठकर हम लोग मज़े से बातें कर रहे हैं, पर ज़रा पानी कम पड़ गया है। मैं पानी लेने जा रहा हूं।"

थोड़ा हटकर सोचने लगा: "भाड़ में जाए यह दलिया!" और वह रफ़ू-चक्कर हो गया।

दूसरा भेड़िया भी निकल भागने की तरकीब सोचने लगा :

"यह लो, दुश्मन की औलाद न जाने कहां मर-खप गया। दलिया जला जा रहा है, मैं चला, अभी इस छड़ी से हांककर उसे झट से लिए आता हूं।"

यह भी खिसक गया और पहलेवाले भेड़िये की तरह वापस नहीं लौटा। और तीसरे ने भी बैठे-बैठे युक्ति सोचते हुए कहा :

"ठहरो, अभी मैं उन्हें देखकर आता हूं। दोनों को इधर लाता हूं।"

वह भी जान बचाकर निकल भागा। वह ख़ुश था कि जिन्दा बच गया। मौक़ा देखकर बकरा अपने दोस्त भेड़े से बोला :

"लो भाई, अब क्या देखते हो? सोचने का वक़्त नहीं है – आओ, दलिया खा जाएं और झटपट कहीं छुप जाएं।"

लेकिन इतने में पहलेवाले भेड़िये ने ज़रा ठंडे दिमाग़ से सोचा :

"हम लोग भी कितने अजीब हैं, जो बकरे और भेड़े से डर गए। भाइयो, हमें तुरन्त चलकर इन दुश्मन की औलादों को खा डालना चाहिए!"

वे सब वहां पहुंचे तो दलिया सफ़ाचट था, अलाव बुझाया जा चुका था, बकरा और भेड़ा ऊंचे बलूत के पेड़ पर चढ़ बैठे थे। भेड़िये बलूत के नीचे बैठकर सोचने लगे कि बकरे और भेड़े को कैसे पकड़ा जाए। सिर उठाकर ऊपर देखा – दोनों बलूत पर बैठे हैं। बकरा हिम्मती था – वह सबसे ऊपरी डाल पर चढ़ गया था और भेड़ा डरपोक था – वह नीचे ही था।

"सुनो," भेड़ियों ने सबसे लम्बे, घने बालोंवाले एक अनुभवी भेड़िये से कहा, "तुम हमारे बीच में एकमात्र बुज़ुर्ग हो, तुम्हीं कोई रास्ता बताओ, जिससे कि उन्हें ऊपर पहुंचकर पकड़ा जा सके।"

लम्बे, घने बालोंवाला भेड़िया पेड़ के नीचे पसरके सोचने लगा। उधर भेड़ा पेड़ की डाल पर बैठा डर के मारे थर-थर कांपता जा रहा था। वह अपने भय पर क़ाबू न पा सका और सीधे उस भेड़िये के ऊपर धड़ाम से गिर पड़ा। बकरे ने आव देखा न ताव लगा चिल्लाने :

"पकड़ ले इस झबरे भेड़िये को! इधर ला मेरे पास, भागने न पाए!" और वह खुद भी बलूत वृक्ष से कलाबाज़ी खाता हुआ भेड़ियों पर कूद पड़ा।

भेड़िये सिर पर पांव रखकर भाग खड़े हुए।

बकरे ने अपने दोस्त भेड़े के साथ मिलकर एक झोंपड़ी बनाई और तब से वे दोनों उसमें मज़े से ज़िंदगी के दिन गुज़ार रहे हैं, धन-दौलत कमा रहे हैं।

धूर्त लोमड़ी

लोमड़ी ने किसी जगह से मुर्गी चुराई और सरपट भाग चली। दौड़ती रही, दौड़ती रही कि शाम का अन्धेरा छाने लगा, काली रात गहराने लगी। अचानक लोमड़ी ने एक झोंपड़ी देखी। वह लपक ली उस तरफ़। और झोंपड़ी पर पहुंचकर बड़े अदब से सिर नीचे झुकाकर बोली :

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमड़ी दीदी!"

"मेहरबानी करके रात यहीं बिता लेने दीजिए!"

"अरे, लोमड़ी बहन, हमारी झोंपड़ी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहां से लाएं?"

"फ़िक्र न करें! मैं तख़्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोड़कर सो जाऊंगी। किसी तरह रात काट लूंगी।"

झोंपड़ी के मालिक ने कहा :

"अच्छा, तो रात तुम यहीं बिता लो!"

"लेकिन अपनी यह मुर्गी कहां ले जाऊं?"

"उसे अलावघर के नीचे छोड़ दो।"

लोमड़ी ने वैसा ही किया। और रात में जब सभी लोग सो गए तो लोमड़ी ने चुपके से उठकर मुर्गी को खा डाला। फिर उसके नुचे हुए पंखों को एक कोने

में छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुंह चमकाकर धोया और सबसे नमस्ते करके बोली :

"अरे, मेरी मुर्ग़ी कहां गई?"

"वहीं अलावघर के नीचे देख लो।"

"मैं देख चुकी हूं, वहां नहीं है।"

लोमड़ी लगी बैठकर रोने :

"हाय, मेरी मुर्ग़ी कहां गई? मुर्ग़ी ही मेरी दौलत थी, वही मेरा ख़ज़ाना था, उसे भी चुरा लिया! मैं तो लुट गई!"

इसके बाद वह मालिक से बोली :

"मेरी मुर्ग़ी यहीं खोई है। लाओ, मुर्ग़ी नहीं, तो बत्तख दो!"

मजबूर होकर मालिक को मुर्ग़ी के बदले में बत्तख देनी पड़ी।

लोमड़ी ने बत्तख लेकर बोरे में डाली और आगे चल दी।

लोमड़ी भागती रही, भागती रही कि फिर अन्धेरा हो गया, रास्ते में ही रात हो गई। उसने एक झोंपड़ी देखी, भीतर पहुंचकर बोली :

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमड़ी दीदी!"

"मेहरबानी करके रात यहीं बिता लेने दीजिए!"

"अरे, लोमड़ी बहन, हमारी झोंपड़ी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहां से लाएं?"

"फ़िक्र न करें। मैं तख़्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोड़कर सो ज़ाऊंगी। किसी तरह रात काट लूंगी।"

झोंपड़ी के मालिक ने कहा :

"अच्छा, तो रात तुम यहीं बिता लो!"

"लेकिन अपनी बत्तख कहां ले जाऊं?"

"उसे हंसों के बाड़े में छोड़ दो।"

लोमड़ी ने वैसा ही किया। और रात में, जब सभी लोग सो गए तो लोमड़ी ने चुपके से उठकर बत्तख को खा डाला फिर उसके नुचे हुए पंखों को एक कोने में छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुंह चमकाकर धोया और सबसे नमस्ते करके बोली :

"मेरी बत्तख कहां गई?"

तब मालिक बोला:

"शायद हंसों के साथ उसे भी बाहर निकाल दिया है?"

"हंसोंवाले बाड़े में जाकर देखा, बत्तख वहां नहीं थी।"

लोमड़ी पहले की तरह लगी बैठकर रोने:

"हाय, मेरी बत्तख! वही मेरी दौलत थी, वही मेरा खज़ाना था। उसे भी चुरा लिया। हाय, मैं लुट गई! मेरी बत्तख यहीं गुम हुई है! लाओ; बत्तख नहीं, तो हंस दो!"

मजबूर होकर मालिक को बत्तख के बदले में हंस देना पड़ा। लोमड़ी ने हंस को लेकर बोरे में डाल लिया और आगे बढ़ ली।

वह चलती रही, चलती रही कि रास्ते में शाम हो चली। उसने एक झोंपड़ी देखी, वहां पहुंचकर बोली:

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमड़ी दीदी!"

"मेहरबानी करके रात यहीं बिता लेने दीजिए!"

"माफ़ करना, लोमड़ी बहन, हमारी झोंपड़ी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहां से लाएं?"

"फ़िक्र न करें! मैं तख़्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोड़कर सो जाऊंगी। किसी तरह रात काट लूंगी।"

झोंपड़ी के मालिक ने कहा:

"अच्छा, तो रात तुम यहीं बिता लो!"

"लेकिन अपना हंस कहां ले जाऊं?"

"उसे मेमनेवाले बाड़े में छोड़ दो।"

लोमड़ी ने वैसा ही किया। रात में जब सभी लोग सो गए तो लोमड़ी ने चुपके से उठकर हंस को खा डाला और उसके नुचे हुए पंखों को एक कोने में छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुंह चमकाकर धोया, सबसे नमस्ते की और बोली:

"लेकिन मेरा हंस कहां गया? मेमनेवाले बाड़े में जाकर देखा – हंस वहां नहीं मिला।"

तब लोमड़ी ने मालिक से कहा:

"मैं जहां कहीं गई, मैंने रात कहीं भी गुज़ारी, लेकिन ऐसा अनर्थ तो मेरे साथ कभी नहीं हुआ!"

"शायद मेमनों ने उसे कुचल दिया है," मालिक बोला।

लोमड़ी लगी अपना पुराना राग अलापने:

"ख़ैर, जो है, सो है! लाओ, हंस नहीं, तो मेमना दो!"

मजबूर होकर मालिक को हंस के बदले में मेमना देना पड़ा। लोमड़ी ने मेमने को अपने बोरे में छिपा लिया और फिर आगे चल दी। वह दौड़ती रही, दौड़ती रही, फिर रात हो गई। रास्ते में उसने एक झोंपड़ी देखी। वहां जाकर प्रार्थना करने लगी:

"मेहरबानी करके रात यहीं गुज़ार लेने दीजिए!"

"माफ़ करना, लोमड़ी बहन। हमारी झोंपड़ी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहां से लाएं?"

"फ़िक्र न करें! मैं तख़्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोड़कर सो जाऊंगी। किसी तरह रात काट लूंगी।"

झोंपड़ी के मालिक ने कहा:

"अच्छा, तो रात तुम यहीं बिता लो!"

"लेकिन अपना मेमना कहां ले जाऊं?"

"बाड़े में छोड़ दो।"

लोमड़ी ने वैसा ही किया। और रात में जब सभी लोग सो गए तो लोमड़ी ने चुपके से उठकर मेमने को खा डाला। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुंह चमकाकर धोया, सबसे नमस्ते की और फिर अपना वही राग अलापने लगी:

"अरे, मेरा मेमना कहां गया?"

लोमड़ी दहाड़े मार-मारकर रोने लगी:

"मैं जहां कहीं गई, मैंने रात कहीं भी गुज़ारी, लेकिन ऐसा अनर्थ तो मेरे साथ कभी नहीं हुआ!"

मालिक ने कहा:

"शायद मेरी बहू ने ही उसे बैलों के साथ-साथ बाड़े के बाहर हांक दिया हो?"

इस पर लोमड़ी बोली:

"मुझे इससे क्या लेना-देना? लाओ, मेमना नहीं, तो अपनी बहू ही दो!"

फिर क्या? क़ोहराम मच गया। ससुर रोया, सास रोई और बच्चे बिलखने लगे। उधर लड़के ने लोमड़ी के बोरे में चुपके से एक कुत्ता डालकर बोरे का मुंह रस्सी से बांध दिया और बोला:

"ले, पकड़!" लोमड़ी ने खुश होकर कुत्तेवाला बोरा संभाला और उसे उठाकर आगे चल दी। बोरा उठाए चलती रही और बीच-बीच में यह गुनगुनाती रही:

"मुर्ग़ी के बदले में बत्तख पाई, बत्तख के बदले में पाया हंस, हंस के बदले में मिला मेमना, मेमने के बदले में मिली बहू!"

बोरा ज़ोर-ज़ोर से हिचकोले खा रहा था, भीतर बैठा हुआ कुत्ता गुर्रा रहा था।

पर लोमड़ी ने समझा:

"शायद बहू डर के मारे रो रही है! ठहरो, एक नज़र तुम्हें देख तो लूं! आख़िर कैसी हो तुम?"

लोमड़ी ने बोरे का मुंह पकड़ा और उसे खोलने लगी। जैसे ही उसने बोरे का मुंह खोला, "भौं!" की आवाज़ के साथ उछलता हुआ कुत्ता निकल आया। लोमड़ी की तो जैसे जान ही निकल गई। वह सिर पर पैर रखकर भागी, कुत्ता था कि उसके पीछे-पीछे दौड़ता चला जा रहा था। लोमड़ी आगे-आगे जंगल की तरफ़ दौड़ रही थी और कुत्ता जी-जान से उसे पकड़ने पर तुला था। उसे बस दबोचने ही वाला था कि लोमड़ी अपनी मांद में घुसकर बैठ गई। लोमड़ी मांद में और कुत्ता मांद के ऊपर। लोमड़ी की मांद भी ऐसी थी कि कुत्ता अन्दर घुस न सकता था। लोमड़ी मज़े से मांद में बैठी पूछने लगी:

"मेरे प्यारे-प्यारे कान, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागे जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौड़ाया जैसे?"

उसके कानों ने जवाब दिया:

"लोमड़ी दीदी, लोमड़ी दीदी, हमें था बस यही ध्यान, स्वर्णतुल्य है खाल तुम्हारी, कुत्ता उसे नोच लेगा।"

"प्यारे-प्यारे कान मेरे! मैं इस उपकार के लिए तुम्हें सोने के कुण्डल उपहार में दूंगी!"

फिर लोमड़ी अपनी टांगों से पूछती है:

"मेरी प्यारी-प्यारी टांगो, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागीं जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौड़ाया जैसे?"

उसकी टांगों ने जवाब दिया:

"लोमड़ी दीदी, लोमड़ी दीदी, हमें था बस यही ध्यान, स्वर्णतुल्य है खाल तुम्हारी, कुत्ता उसे नोच लेगा। इसीलिए हम भागीं ऐसे, जान बचाकर जैसे-तैसे, तुमको हमें बचाना था, तुरन्त भागकर आना था।"

"प्यारी-प्यारी टांगो, तुम्हें धन्यवाद! मैं तुम्हारे लिए चांदी की नालवाले सोने के जूते खरीद दूंगी।"

इसके बाद लोमड़ी ने अपनी दुम से पूछा:

"मेरी भारी-भरकम दुम, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागी जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौड़ाया जैसे?"

लोमड़ी की दुम ने इस प्रकार जवाब दिया:

"मैंने यह सोचा था, बहना, साफ़-साफ़ मुझको है कहना, मैंने जो दुम फटकारी थी, टांग में लंगड़ी मारी थी। चाह रही थी मैं कहना, तुम्हें सिखाए कुत्ता क्यों ना! चम-चम चमके खाल तुम्हारी, चाह रही थी वह नोचे!"

यह सुनकर लोमड़ी को बड़ा गुस्सा आया। फिर क्या था? लोमड़ी ने अपनी मांद से दुम बाहर निकाल दी:

"ठहर जा, अभी मज़ा चखाती हूं तुझे! ले, कुत्ते, मेरी दुम को जी भरके नोच ले!"

कुत्ते ने लोमड़ी की दुम ऐसे धर दबोची कि सारी की सारी दुम ही उखाड़ डाली।

तब लोमड़ी खरगोशों के यहां जा पहुंची। उन्होंने देखा कि लोमड़ी बेदुम हो चुकी है, और उसका मजाक़ उड़ाने लगे, उस पर हंसने लगे। लेकिन लोमड़ी बोली:

"अरे, दुम भले नहीं है, लेकिन झूमर नाच तुम सबसे अच्छा नाच सकती हूं!"

"वह कैसे?"

"ऐसे! मुझे बस तुम सबकी दुम एक दूसरे के साथ बांधनी होगी–इसके बाद तुरन्त सीख जाओगे!"

"तो फिर बांध दो हमारी दुमें!"

लोमड़ी ने उनकी दुमें एक दूसरी के साथ बांध दीं और ख़ुद छलांग लगाकर एक टीले पर चढ़ गई और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी:

"जान बचाओ! भागो, भेड़िये आ रहे हैं!"

सारे ख़रगोश अपनी-अपनी जान बचाकर ऐसे भागे, ऐसे भागे कि उन सबकी पूंछें उखड़ गईं। जब उन सबने एक दूसरे की दुमों को देखा, तो वे जड़ से उखड़ी हुई थीं!

वे सब मिलकर लोमड़ी से बदला लेने की योजना बनाने लगे। लोमड़ी ने उनकी बातें चुपके से सुन लीं। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया कि अब ख़ैरियत नहीं है। फिर क्या था? लोमड़ी ने सोचा कि उस जंगल से ही खिसक लिया जाए। लोमड़ी रफ़ू-चक्कर हो गई। और ख़रगोश तब से आज तक बिना दुम के जी रहे हैं।

सेर्को

एक आदमी के घर में सेर्को नामक एक बहुत बूढ़ा कुत्ता पला था। एक दिन उस आदमी ने बूढ़े कुत्ते को घर से निकाल दिया। निस्सहाय सेर्को मैदान में भटकता फिरने लगा। वह सचमुच बेहद दुखी था! मन ही मन सोच रहा था: "कितने वर्षों तक मैंने मालिक की रखवाली की, उसकी दौलत की देखभाल की और जब बुढ़ापा आया तो मैं एक टुकड़ा रोटी पाने का हक़दार न रहा। मुझे अपने घर से ही निकाल दिया।" तभी एक भेड़िया दिखाई दिया। उसने पास आकर पूछा:

"तुम यहां किसलिए भटक रहे हो?"

"मालिक ने निकाल दिया है, दर-दर की ठोकरें खा रहा हूं," सेर्को ने उसे उत्तर दिया।

भेड़िये ने कहा:

"कोई ऐसी तरकीब सोचें, जिससे कि मालिक तुम्हें फिर वापस बुला ले?"

सेर्को बहुत खुश हुआ:

"भाई, तुम्हारा बड़ा उपकार होगा! मैं इस उपकार का बदला अवश्य चुका दूंगा।"
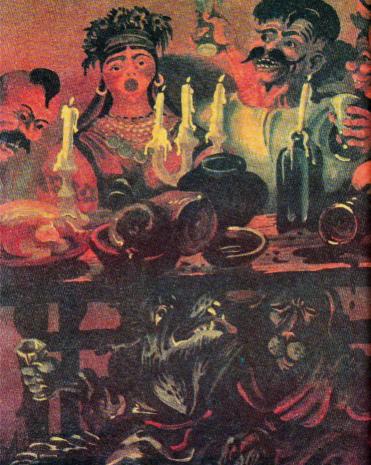
भेड़िये ने तरकीब सोच निकाली और बोला :

"अच्छा, तो सुनो। जब तुम्हारे मालिक लोग फ़सल कटाई के लिए जाएंगे और मालकिन अपने बच्चे को झाड़ी के नीचे सुला देगी, तो तुम उस जगह पहुंच जाना ताकि मुझे पता चल सके कि वह कहां पर है। मैं बच्चे को उठाकर भागने लगूंगा और तुम उसे मुझसे छुड़ाने लगना। तब मैं डरने का बहाना करके बच्चे को छोड़ दूंगा।"

तो लो, मालिक, मालकिन फ़सल कटाई के लिए खेत पर आ पहुंचे। मालकिन ने बच्चे को झाड़ी के नीचे लिटा दिया और खुद निश्चिन्त होकर फ़सल काटने लगी। अचानक न जाने कहां से भेड़िया वहां आ धमका। उसने बच्चे को धर दबोचा और खेत में दौड़ चला।

सेर्को भेड़िये का पीछा करने लगा। उसका मालिक भी बड़े ज़ोर से चिल्लाया :

"पकड़, सेर्को, पकड़!"

सेर्को ने भेड़िये को धर पकड़ा, बच्चे को छुड़ाकर उठा लाया और मालिक के सामने लिटा दिया। तब मालिक झोले में से रोटी और चरबी का एक टुकड़ा निकालकर सेर्को से बोला :

"ले, सेर्को, खा! यह तेरी बहादुरी की सौग़ात है। आज तूने मेरे बच्चे की जान बचाई है।"

शाम को खेत से लौटते समय मालिक सेर्को को भी अपने साथ घर लेता आया। मालिक ने पत्नी से कहा :

"सुनो, आज बढ़िया से बढ़िया खाना पकाओ!"

थोड़ी देर में खाना बन गया। मालिक ने सेर्को को कुर्सी पर बैठाया और खुद उसके बग़ल में बैठ गया और मालकिन से बोला :

"खाना परोस दो। चलो, खाना खाते हैं।"

मालकिन ने मेज़ पर खाना परोस दिया, मालिक ने रकाबी में ढेर सारा गरमागरम गोश्त डाला और फूंक मार-मारकर सेर्को को देने लगा, ताकि कहीं उसकी ज़बान न जल जाए।

सेर्को मन ही मन सोचने लगा :

"जो भी हो, मुझे भेड़िये के उपकार का बदला चुकाना ही होगा।"

इसके लिए उसे अनुकूल अवसर भी मिल गया। जल्दी ही मालिक की बड़ी बेटी का विवाह था। सेर्को खेत की ओर गया, वहां पर भेड़िये को ढूंढ़कर उससे बोला:

"इतवार की शाम को हमारे बगीचे में आ जाना। मैं तुम्हें घर के अंदर पहुंचा दूंगा। तुम्हारे उपकार का बदला उपकार से चुकाऊंगा।"

इतवार आया तो भेड़िया उस जगह पहुंच गया, जहां सेर्को ने उससे मिलने का वायदा किया था। उस दिन मालिक की बेटी के विवाह की दावत हो रही थी। सेर्को भेड़िये को घर के अंदर ले गया और उसे मेज़ के नीचे छिपा दिया। फिर सेर्को ने मेज़ से वोद्का की एक बोतल उठाई, गोश्त का एक बड़ा टुकड़ा लिया और भेड़िये के सामने लाकर रख दिया। मेहमानों ने कुत्ते की पिटाई करनी चाही पर मालिक ने बीच में ही उन्हें रोक दिया:

"सेर्को को मत मारो! मैं उसका अहसानमन्द हूं। जब तक वह ज़िंदा है मैं उसके उपकार का बदला चुकाता रहूंगा।"

सेर्को बढ़िया-बढ़िया चर्बीदार गोश्त के टुकड़े ला-लाकर भेड़िये को देता रहा। भेड़िये ने खूब दावत उड़ाई। सेर्को ने भेड़िये को इतना खिलाया-पिलाया कि वह मस्ती में झूम उठा। भेड़िया बोला:

"भाई, मैं तो अब गाना गाऊंगा!"

बेचारा सेर्को डर गया।

"भाई, यहां गाना मत गाओ। क्यों अपनी शामत बुलाना चाहते हो? बेहतर हो कि तुम थोड़ी वोद्का और ले लो। बस, ज़बान बन्द रखो!"

भेड़िये ने थोड़ी वोद्का और पी ली। उससे खामोश न रहा गया। वह बोला:

"अब तो मैं गाता हूं!"

और जैसे ही भेड़िये ने मेज़ के नीचे से गला फाड़कर गाना शुरू किया, सारे मेहमान अपनी जगह से उछल पड़े। उन्होंने इधर-उधर देखा और मेज़ के नीचे भेड़िये को बैठा पाया। कुछ लोग तो भयभीत होकर भागे और कुछ ने भेड़िये को पीटने के लिए डंडे उठाए। लेकिन सेर्को भेड़िये के ऊपर पसर गया, जैसे कि उसका गला घोंट रहा हो। मालिक ने कहा:

"भेड़िये को मत मारो, नहीं तो सेर्को को मार डालोगे! वह खुद उससे निपट लेगा – उसे कोई मत छुए!"

सेर्को भेड़िये को खदेड़ता हुआ खेत में ले आया और बोला:

"तुमने मेरा भला किया था, आज मैंने भी तुम्हारा भला कर दिया।"

और फिर वे विदा हो गए।

शेर कुएं में कैसे डूबा

यह क़िस्सा बहुत पुराना है। घने जंगलों में कहीं से एक शेर आ पहुंचा। वह भारी-भरकम डील-डौलवाला, बड़ा ख़ूंखार शेर था। उसके दहाड़ते ही सभी वन्य जीव पत्तों की तरह थर-थर कांपने लगते थे। जब शिकार का पीछा करता तो रास्ते में जो भी आता उसे चीर डालता। जंगली सूअरों के झुण्ड पर झपटता, तो सभी को मार डालता, जबकि अपने आहार के लिए सिर्फ़ एक ही रखता। जंगल के सारे जीव शेर से आतंकित थे। ऐसी विषम स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए? सभी जानवर आपस में विचार-विमर्श करने लगे।

भालू ने कहा:

"सज्जनो, शेर एक-एक दिन में दस-दस जानवरों को मार डालता है, कभी-कभी तो बीस-बीस जानवर मारे जाते हैं। पर खाने के नाम पर वह एक या दो जानवर से अधिक नहीं खाता। जबकि शेष जीव बेकार ही मारे जाते हैं, क्योंकि शेर को तो रोज़ ताज़ा शिकार चाहिए। वह बासी गोश्त नहीं खाता। इस तरह दिन-ब-दिन हालत ख़राब होती जा रही है। हमें चाहिए अपने दूत भेजकर उसे समझा-बुझा दें..."

इस पर भेड़िया बोला:

"जाओ, बात करके तो देखो! वह तो हमारी बात सुनेगा ही नहीं।"
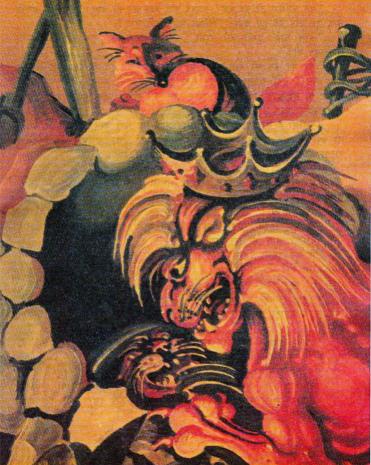
"पर कोशिश तो कर देखें! शायद कोई बात बन ही जाए।" भालू ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा। "लेकिन भेजा किसे जाए?"

"भालू भाई, तुम्हीं चले जाओ," भेड़िये ने कहा। "तुम सबसे बड़े और ताक़तवर हो।"

"यह मेरे बस की बात नहीं। अगर वह मुझ पर टूट ही पड़ा, तो मैं उसे क़तई पछाड़ नहीं सकता। ऐसे में मेरी ताक़त के क्या मायने? भेड़िया भाई, बेहतर तो यह होता कि तुम ही उसके पास चले जाते! तुम मुझसे ज़्यादा चुस्त और फुर्तीले हो!"

"फुर्तीला हूं तो क्या? तुम्हीं सोचो, अगर वह मेरी जान के पीछे पड़ गया, तो क्या मैं जान बचाकर भाग पाऊंगा? अरे भाई, सोच-समझकर कोई दूसरा रास्ता निकालो, हमारी ताक़त और फुर्ती काम न देगी।"

यह सुनते ही हिरन ने कहा:

"सज्जनो, आप जानते हैं कि यह मसला कितना गम्भीर है। हमें सोच-समझकर उचित तरकीब खोज निकालनी होगी—बात कैसे चलाई जाए, ताकि वह नाराज़ न हो।"

"तो भाई हिरन, तुम्हीं उसके पास चले जाओ। तुम बुद्धिमान भी हो और सोच-समझकर बात भी कर सकते हो।"

"मैं खुद इसका ज़िम्मा नहीं लेता। मैंने तो सिर्फ़ राय दी थी कि शेर से बात करना कोई मामूली काम नहीं है। उससे बात करने का इल्म आना चाहिए!"

"तो फिर किसे भेजें शेर के पास?"

"चलो, लोमड़ी को भेज दें। वह बड़ी चालाक है। शेर से चिकनी-चुपड़ी बात करके हमारी समस्या का हल खोज निकालेगी। शेर को सारी बात समझा सकेगी।"

"ख्याल अच्छा है!" सारे वन्य जीव खुशी से उछल पड़े। "लोमड़ी के लिए यह कोई मुश्किल काम नहीं!"

लोमड़ी को बुलाकर भालू ने कहा:

"लोमड़ी बहन, तुम्हें शेर के पास जाकर सारी बात समझानी होगी।"

"आखिर मुझसे कौन-सा अपराध हो गया है? कोई दूसरा क्यों नहीं चला

जाता? अगर कोई भी वहां जाने के लिए राज़ी नहीं, तो फिर पांसा फेंककर अपनी क़िस्मत आज़मा लेते हैं। जिसके नाम पांसा गिरेगा, वही शेर से मिलने जाएगा।"

"नहीं, लोमड़ी बहन! इस तरह फ़ैसला करना उचित न होगा: मान लो, किसी ऐरे गैरे नत्थू खैरे का नाम आ ही गया तब क्या होगा? वह शेर से प्रार्थना करने, उसे समझाने के बजाय ऊट-पटांग बोलकर सारा काम ही बिगाड़ देगा। और वह खूंखार शेर नाराज़ होकर हम सबकी खाल खींच लेगा। नहीं, बस फ़ैसला हो गया है – तुम्हें ही जाना होगा।"

लोमड़ी उदास हो गई। असमंजस में थी कि वह क्या करे: शेर के पास न जाए तो आफ़त, और जाए, तो जाने क्या बीते? लोमड़ी उधेड़बुन में पड़ी सोचती रही, सोचती रही, थोड़ी देर बाद बोली:

"ठीक है, मैं वहां जाऊंगी। जाकर क़िस्मत आजमाती हूं। लगता है, मेरी क़िस्मत में यही लिखा है..."

लोमड़ी बड़ी देर तक जंगल में इधर-उधर घूमती रही – शेर के पास जाने से डर रही थी। वह कभी जंगल के एक छोर तक जाती, तो कभी दूसरे तक और इस तरह बार-बार सोचती जा रही थी: कैसे शेर को चकमा दिया जाए? वह मृत्युभय से थर-थर कांप रही थी। इस बीच अचानक उसे एक कुआं दिखलाई दिया। लोमड़ी ने आव देखा न ताव, आत्महत्या का निर्णय कर डाला: "रक्तपिपासु शेर के जबड़े में दम तोड़ने से बेहतर है कुएं में डूबकर मर जाना।"

लोमड़ी कुएं पर गई, उसने कुएं का चक्कर लगाया, कुछ सूंघा, फिर कुएं में झांककर देखा – वहां तो अथाह पानी भरा था। उसने ज़रा ध्यान से देखा, पानी के अन्दर से भी एक लोमड़ी उसे घूर-घूरकर देख रही थी। वह तुरन्त अनुमान न लगा सकी कि कुएंवाली लोमड़ी तो उसकी परछाईं मात्र थी। पानी में से तो उसका ही प्रतिबिम्ब झलक रहा था। लोमड़ी ने अपनी थूथनी हिलाकर इशारा किया, तो नीचे की लोमड़ी ने भी वैसा ही जवाब दिया। ऊपर से लोमड़ी ने अपनी ज़बान बाहर निकालकर उसे चिढ़ाया, तो उसने भी चट से ज़बान बाहर निकालकर उसे चिढ़ा दिया। "अब समझी! यह तो मेरी ही परछाईं है! मैं शेर को धोखा देने की कोशिश करूंगी, अगर वह इस रहस्य को नहीं जानता है तो उसे कुएं तक ले आऊंगी। फिर बस, काम बन जाएगा!"

झट से लोमड़ी शेर से मिलने चल दी। वह मन्द-मन्द मुस्कान बिखेरती जल्दी-जल्दी चली जा रही थी। शाम घिर आई। लोमड़ी वनराज के शिविर के नज़दीक बढ़ती चली आ रही थी और शेर अपनी डरावनी आवाज़ में दहाड़ रहा था।

लोमड़ी ने बड़े अदब से वनराज को सिर झुकाकर प्रणाम किया और बोली :

"महाराज, मुझे प्राणदान दें। हुक्म करें, महाराज, कि मैं, ग़रीब, आपके चरणों में अपनी प्रार्थना प्रस्तुत करूं। मैं, तुच्छ लोमड़ी, आपकी शरण में आई हूं। यहां आने की वजह मैं अभी विस्तार से बताती हूं। हमारे जंगल के सभी जीवों ने मिलकर हम तीन जनों को – दो खरगोशों को और मुझे – भोर से ही आपको जन्म-दिन की बधाई देने के लिए भेजा था। हम लोग आपके दरबार में हाज़िर होने के लिए जल्दी-जल्दी चले आ रहे थे। लेकिन इस बीच रास्ते में हम लोगों को एक जानवर मिल गया। उसकी शक्ल-सूरत हूबहू आपसे मिलती थी। वह पूछने लगा : 'तुम लोग कहां जा रहे हो ?' और मैंने उत्तर दिया : 'वनराज शेर के पास ! जानवरों ने हमें भेजा है, ताकि हम वहां जाकर उन्हें बधाई दे सकें।' और वह जानवर हम लोगों पर बुरी तरह गरजा : 'खबरदार, यहां पर कोई दूसरा शेर कैसे रह सकता है ? शेर मैं हूं, सारे जंगल में मेरा राज है। तुम सबको मेरी आज्ञा का पालन करना होगा। मैं तुम्हें क़तई नहीं छोड़ूंगा – तुम हमारी प्रजा हो !' महाराज, मैंने उसे हर तरह से मनाया, रोयी, गिड़गिड़ाई। पर वह तो अपनी बात पर अड़ा रहा। माना ही नहीं। मैंने कहा : 'यह कैसे हो सकता है ? वनराज हमारा इन्तज़ार कर रहे होंगे, वही हमारा राजा हैं। वह हम पर नाराज़ होंगे और इसका बदला सभी वन्य जीवों से लेंगे।' मगर वह अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और बोला : 'बहुत देखे हैं ऐसे राजा-महाराजा ! मुझे उससे क्या लेना-देना ? अगर चाहूं, तो उसे एक झपट्टे में खा जाऊं !' बड़ी देर तक उसकी मिन्नतें करती रही, बड़ी मुश्किल से इस बात के लिए उसे राज़ी किया कि अकेली मुझे ही आपके पास जाने दे।"

गुस्से से आग-बबूला शेर ने गरजते हुए पूछा :

"वह गुस्ताख कहां रहता है ?"

"वहां, पत्थर के क़िले में।"

फिर क्या था? शेर उछला और ऐसे दहाड़ा, ऐसे दहाड़ा कि जंगल में उसकी गूंज दूर-दूर तक फैल गयी और लगा कि कहीं कोई दूसरा शेर दहाड़ रहा है।

लोमड़ी उसे उकसाते हुए बोली:

"महाराज, अब तो ख़ुद ही सुन लिया आपने कैसे वह दहाड़ रहा है।"

शेर का ख़ून और अधिक खौला:

"मैं उस बदमाश के टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा! तो यह हिमाक़त, वह मुझे ललकारने का साहस कर सकता है! यह मेरा जंगल है। जल्दी से चलकर मुझे उसका घर दिखाओ।"

लोमड़ी उसे कुएं की ओर ले चली। वे कुएं के पास पहुंच गए तो शेर ने पूछा:

"कहां है वह, दिखाओ!"

लोमड़ी बोली:

"जी, वह यहीं, इस पत्थर के क़िले में रहता है। मुझे उधर क़रीब जाते हुए भी डर लगता है, कहीं मुझे खा न जाए। आप देख लीजिए।"

शेर कुएं की जगत पर खड़ा होकर अन्दर झांकने लगा। उसने देखा कि एक दूसरा शेर उसकी तरफ़ देख रहा है। उसने गुस्से से मुंह खोलकर दांत दिखाए, तो उस शेर ने भी वैसे ही गुस्साते हुए झट से अपना मुंह खोलकर दिखा दिया। तब शेर ज़ोर से दहाड़ता हुआ कुएं में कूद गया और पानी में डुबकियां लगाने लगा। कुएं की दीवारें पत्थर की थीं, पंजे उन पर टिकते न थे और बच निकलने का कोई रास्ता न था। शेर कुएं में इधर-उधर हाथ-पैर मारता रहा, छटपटाता रहा और अन्त में उसका दम टूट गया। लोमड़ी शेर के डूबने तक वहीं बैठी रही और जैसे ही शेर कुएं में डूबा लोमड़ी वन्य जीवों के पास सरपट दौड़ चली।

लोमड़ी ख़ुश नज़र आ रही थी, जानवरों ने अनुमान लगाया कि कोई ख़ुश ख़बरी लेकर आ रही है। जैसे ही लोमड़ी उन तक पहुंची, सारे वन्य जीव उससे पूछने लगे:

"तुम शेर से मिलकर आ रही हो या हमें कोई चकमा दे रही हो?"

"शेर से मिलने गई थी। अब उस शेर को अपनी स्मृति में बसा लेना : एक था शेर जो डूब गया और मैंने उसे धोखा दिया।"

"कैसे तूने शेर को धोखा दिया?"

उसने विस्तार से पूरा क़िस्सा सुना डाला। वन्य जीव मारे ख़ुशी के उछलने लगे, नाचने और थिरकने लगे। इतने ख़ुश थे कि उनकी ख़ुशी का शब्दों में वर्णन कर पाना कठिन है।

हंस, केकड़ा और मछली

नदी के किनारे एक हंस तैर रहा था। वह गर्दन झुकाए पानी में देख रहा था। एक मछली तैरती हुई उधर निकल आई। मछली रुककर हंस से पूछने लगी :

"हंस भाई, मेहरबानी करके जरा यह तो बताओ कि जाड़े में जब नदी बर्फ़ से ढंक जाएगी, तब तुम उड़कर कहां चले जाओगे?"

"तुम्हें इससे क्या?"

"इस बार जाड़े में मैं भी कहीं और जाकर रहना चाहती हूं। यहां तो बर्फ़ के नीचे ताज़ी हवा के बिना दम घुटने लगता है।"

"जाड़े भर मैं गरम देशों में जाकर रहता हूं।"

"मुझे भी अपने साथ ले चलना।"

"ठीक है, चली चलना। हंसी-खुशी समय कट जाएगा। मौज ही मौज रहेगी।"

हंस और मछली की यह बातचीत केकड़ा सुन रहा था। वह बोला :

"भाई, मुझे भी अपने साथ ले चलना।"

"ठीक है। तुम भी हमारे साथ चलना। हंसी-खुशी समय कट जाएगा। मौज ही मौज रहेगी। पतझड़ आने तक इन्तज़ार करो, जब उड़ने का समय आएगा मैं तुम्हें बतला दूंगा।"
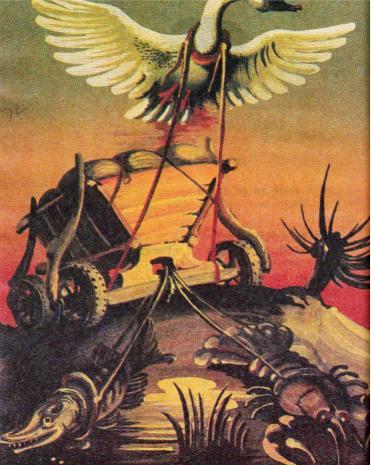
हंस ने यही सोचा होगा : यदि वे पानी में तैर सकते हैं, तो उड़ना भी जानते ही होंगे!

गर्मी का मौसम बीता, पतझड़ का मौसम आ पहुंचा। तब हंस ने याद दिलाते हुए कहा :

"देखो, अब गर्म देशों को उड़ जाने का वक़्त आ गया है। यात्रा की तैयारियां कर लो, कल दोपहर हम यहां से उड़ चलेंगे।"

मछली ने केकड़े को भी सूचना दे दी। केकड़ा सोच-विचार में पड़ गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोला :

"लेकिन, बहन, सफ़र में हमारा गुज़ारा कैसे होगा? भोजन के बिना काम कैसे चलेगा? रास्ते का खाना तो बांध ही लें, ताकि सफ़र में भूखा न रहना पड़े।"

"लेकिन सारा सामान किस पर लादकर ले चलोगे?" मछली ने केकड़े से पूछा।

"एक गाड़ी में सब लाद लेंगे और उसे जोतकर ले चलेंगे। हंस के साथ मिलकर हम तीनों गाड़ी खींच लेंगे। बस, काम आसान हो जाएगा।"

केकड़े और मछली ने, एक गाड़ी का इन्तज़ाम किया, घास को बटकर गाड़ी खींचने के लिए रस्सियां बनाईं और हंस का इंतज़ार करने लगे। दूसरे दिन दोपहर में हंस उड़ता हुआ आया और बोला :

"हां तो, भाइयो, तैयार हो न? मैं तो उड़ रहा हूं।"

"हम एकदम तैयार हैं। बस, मेहरबानी करके यह सामान खींचने में मदद कर दो। हम तीनों इस गाड़ी में जुत जाते हैं और यात्रा के लिए चल पड़ते हैं।"

"ठीक है, मेरे पैर में रस्सी बांध दो।"

केकड़े ने हंस के पैर में रस्सी बांध दी, और अपनी रस्सी अपने चंगुल में दबोच ली। तीसरी रस्सी का छोर मछली ने अपने दांतों में दबा लिया।

"अच्छा, भाइयो, अब इसे तीनों साथ मिलकर खींचते हैं!"

केकड़े ने पीछे की तरफ़ ज़ोर लगाया और मछली तीर की तरह पानी में पहुंच गई। हंस अपने पंख फड़फड़ाता हुआ आसमान में उड़ गया। सारी रस्सियां टूट गईं। और गाड़ी पर लदा सारा माल-असबाब ज्यों

का त्यों पड़ा रहा – टस से मस न हुआ। उस तीनों में कौन दोषी था, कौन निर्दोष – यह कोई न जान सका। और न तो इस बात का कोई फ़ैसला ही करने बैठा कि असलियत क्या थी? सिर्फ़ मेंढकियों को इतनी हंसी आई, इतनी हंसी आई कि उनका हंसते-हंसते दम फूलने लगा। वे यह सारा करिश्मा देखकर लोट-पोट हो गईं। उनको सबसे ज्यादा हैरानी इस बात की थी कि मछली और केकड़ा अपनी औक़ात भूलकर ऐसी बेवक़ूफ़ी में क्यों पड़े?

शेर राजा कैसे बना

एक बार जानवरों ने मिलकर एक सभा की – राजा किसे बनाया जाए, ताकि इस राजा से सभी डरें ही नहीं, बल्कि उसे न्यायी जानकर उसकी आज्ञाओं का पालन भी करें। लेकिन राजा का चुनाव न किया जा सका, क्योंकि जानवरों की इस सभा में सभी जानवर एकत्रित न हो पाए थे। आखिर बड़े और शक्तिशाली जानवरों को शामिल किए बिना राजा का चुनाव कैसा? तब यह निर्णय किया गया कि छोटे-बड़े सारे जानवरों को फिर से एकत्रित करके एक और बड़ी सभा की जाए जिससे राजा का उचित चुनाव किया जा सके।

जानवरों की इस विशाल सभा में सभी जानवर आकर एकत्रित हुए जिनमें हाथी, शेर, बाघ, दरियाई घोड़ा, गण्डा, भालू, भेड़िया, हिरन, ऊंट, लोमड़, खरगोश, जंगली सूअर, ज़ेबरा, बकरी, भेड़, घोड़ा, गाय, कुत्ता, बिल्ली, गंधमार्जार, धानीमूष, चूहा, चुहिया समेत दुनिया के सभी जीव वहां पर मौजूद थे, शायद गदहा भी था।

जब सभी जीव एकत्रित हो गए तो हिरन ने आगे बढ़कर कहा:

"शक्तिवान महानुभावो, गुस्ताखी माफ़ हो, हम निकम्मे, नाचीज़ जानवरों ने मिलकर आपको यहां आमंत्रित करने का गुनाह किया है।

हम लोग आप महानुभावों में से किसी एक को अपना राजा बनाना चाहते हैं।"

हाथी बोला :

"भाइयो, मैं इस उचित निर्णय का स्वागत करता हूं। सच तो यह है कि न्याय और व्यवस्था क़ायम करने का यह फ़ैसला काफ़ी पहले ही हो जाना चाहिए था। ऐसे राजा का चुनाव आवश्यक है, जो जंगल में न्याय व्यवस्था क़ायम कर सके, घूसखोरी और अराजकता के विरुद्ध क़दम उठा सके, अपराधी को न्यायसंगत दण्ड दे सके। यह आपके ऊपर निर्भर है कि आप लोग अपना राजा किसे बनाते हैं, इस मुद्दे पर अच्छी तरह सोच-समझकर फ़ैसला कीजिए। वैसे मैं खुद भी राजा बन सकता हूं। डील-डौल में बड़ा और शक्तिशाली भी हूं। लेकिन मुझे इसमें विशेष रुचि नहीं है। मैं राजा बनूं या न बनूं मेरे लिए सब बराबर है।"

शेर से न रहा गया। वह जानवरों को धकियाता हुआ आगे आकर बोला :

"नहीं, सज्जनो! हाथी की बात में मत आइए। हाथी इस योग्य नहीं कि उसे सारे जानवरों का राजा बनाया जाए। खुद ही देख लीजिए, कैसा डील-डौल है उसका? भारी और सुस्त जानवर है। तेज़ दौड़ नहीं सकता। राजा तो मैं ही बन सकता हूं। सभी मेरा कहना मानेंगे, मेरी आज्ञा का पालन करेंगे। मैं फुर्तीला, सुन्दर और शक्तिशाली हूं।"

यह सुनते ही एक लोमड़ झटपट आगे आया और एक ठूंठ पर चढ़कर बोलने लगा :

"हम लोग यह समझते हैं कि आप दोनों महानुभाव हमारे राजा के पद के योग्य हैं। लेकिन इस शुभ कार्य में मतभेद, झगड़े और खून-खराबे की गुंजाइश न रहे इसलिए बेहतर है कि हम गुप्त मतदान करके यह तय कर लें कि आप दोनों में से राजा कौन बनेगा। अभी हम आपसे थोड़ी दूर चले जाते हैं, वहां सलाह-मशविरा कर लेंगे।"

लोमड़ की बात सभी को पसन्द आई। सभी जानवर उसकी जय-जयकार करने लगे।

सभा स्थल से ज़रा हटकर जानवरों में गरमागरम बहस शुरू हो गई। सबसे कमज़ोर और असहाय जानवरों ने चिल्लाना शुरू किया :

"हाथी को ही राजा बनाया जाए! वह सबसे बुद्धिमान जानवर है। वह छोटे-बड़े सभी के साथ उचित न्याय भी कर सकेगा।"

लेकिन शक्तिशाली और फुर्तीले जानवरों ने शेर का पक्ष लिया। और वे ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने-चिल्लाने लगे :

"शेर को ही राजा बनाया जाए! वह न केवल हाथी से फुर्तीला है, बल्कि सुन्दर भी है। वही हम सबका राजा बन सकता है।"

कई जानवरों ने पांसा फेंककर फ़ैसला करने की सलाह दी।

लोमड़ मन ही मन भयभीत था कि शेर नाराज़ हो जाएगा, उसने लोमड़ से अपने पक्ष में बोलने के लिए कह रखा था। धमकाया भी था कि यदि लोमड़ उसे राजा न बना सका तो शेर लोमड़ को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। इसीलिए लोमड़ शेर को राजा बनाने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। आख़िर उसे अपनी जान भी तो प्यारी थी।

बस, लोमड़ ने आव देखा न ताव शेर की वकालत करने के लिए मैदान में कूद पड़ा। पहले की तरह झपटकर आगे आया और एक ऊंचे से ठूंठ पर चढ़कर बोलने लगा :

"सज्जनो, कृपया ध्यान दें! बहुत-से जानवर यह चाहते हैं कि राजा हाथी को बनाया जाए। यह सच है कि हाथी एक बुद्धिमान, शक्तिशाली जानवर है, वह रक्तपिपासु नहीं है और दूसरों को भी किसी का ख़ून बहाने नहीं देगा। लेकिन अब आप ख़ुद ही सोचिए कि एक सुस्त, तोन्दियल जानवर हमारा राजा कैसे बन सकता है? उसके राजा बनते ही हमारे सारे दुश्मन गुलछर्रे उड़ाएंगे। अब से कहीं ज़्यादा आवारागर्दी और लूटपाट करेंगे। राजा का उन्हें कोई डर ही न रहेगा। वे तो अच्छी तरह से जानते हैं कि हाथी उनका कुछ न बिगाड़ पाएगा – वह जब तक उनका पीछा करेगा, वे रफ़ू-चक्कर हो जाएंगे। मेरा ख़्याल है कि सबकी भलाई के लिए शेर को ही राजा बनाना उचित होगा। वह फुर्तीला, बुद्धिमान और बलशाली है। ज़ाहिर है कि शेर अपराधियों को दण्डित करने में भी पीछे नहीं रहेगा और सभी उससे डरते रहेंगे। अपराधी तो शायद ही उसके पंजे से बचकर

निकल पाए। शेर तो जिसे चाहे पकड़ सकता है।"

"यह सब तो ठीक है," हिरन ने अपनी राय दी। "लेकिन यह तो बताओ कि न्याय कहां है? जिसे चाहें उसे ही हमें अपना राजा बनाना चाहिए। अच्छा यही होगा कि पांसा फेंककर फ़ैसला कर लिया जाए, ताकि किसी को कोई एतराज न हो।"

"यही ठीक रहेगा!" सभी एकसाथ चिल्लाए।

"लेकिन पांसा फेंकेंगे कैसे?"

"देखो," हिरन ने समझाते हुए कहा। "जो लोग शेर के पक्ष में मतदान करना चाहें, वे इस कोटर में एक अखरोट डालकर अपना मत देंगे और इसी तरह हाथी के पक्ष में मतदान करनेवाले बलूत का बीज डालकर अपना मत प्रगट करेंगे।"

"यह तो तुमने अच्छी सोची!" सब चिल्लाए। "चलो ऐसे ही करते हैं।"

जानवरों ने अखरोटों और बलूत के बीजों की एक ढेरी लगा दी। लोमड़ पिछली टांगों पर खड़ा होकर बोला:

"तो चलिए, मतदान शुरू करें।"

सब बारी-बारी से ढेरी के पास आने लगे और अपनी पसंद से अखरोट या बलूत का बीज लेकर कोटर में डालने लगे। रक्तपिपासु, हिंसक जानवर अखरोट ले रहे थे, और घास-पात खानेवाले जानवर बलूत के बीज। लोमड़ ने देखा कि शेर के पक्ष में फीका मतदान चल रहा है और हाथी का पलड़ा भारी पड़ रहा है। उसने चालाकी बरतने की सोची। वह जानवरों के पास जा-जाकर, आंख मारने लगा, जैसे यह कह रहा हो:

"श्रीमान जी, अखरोट लीजिए!"

लेकिन नन्हे, कमज़ोर जानवरों के कान में फुसफुसाकर कहता: "बलूत के बीज नहीं, अखरोट उठाओ, नहीं तो शेर नाराज़ हो जाएगा और तुम्हें मेंढक की तरह दबोच लेगा। और मैं भी बाद में तुम सबसे निपट लूंगा, तुम्हारा जीना दूभर हो जाएगा।" नन्हे जानवर भयभीत होकर अखरोट उठा लेते। जब खुद धूर्त लोमड़ की बारी आई तो उसने एक अखरोट डालने के बजाय कोटर में

चुपके से मुट्ठी भर अखरोट झोंक दिए।

मतदान के बाद जब अखरोट और बलूत के बीज गिने गए तो उनकी संख्या बराबर थी।

यह देखकर भालू ने कहा :

"भाइयो, अब हम क्या करें? इसमें तो कोई चाल है। फिर से मतदान होना चाहिए। लेकिन इस बार यह ध्यान रखना होगा कि कोई एक से अधिक मत न डाले और न कोई किसी को अपने पक्ष में धमकाए या फुसलाए।"

लोमड़ उचककर आगे आया और बोला :

"सज्जनो, अब फिर से चुनाव नहीं किया जा सकता। फिलहाल हम लोग यह घोषित कर दें कि शेर और हाथी के पक्ष में बराबर-बराबर मत डाले गए हैं। और उन दोनों में से हमारा राजा कौन बनेगा यह फ़ैसला बाद में किया जाएगा।"

और वे चल दिए शेर और हाथी को अपना फ़ैसला सुनाने।

लोमड़ ने फिर से आगे आकर बोलना शुरू किया :

"माननीय महानुभावो, हमारे समाज द्वारा मिस्टर शेर और मिस्टर हाथी में से किसी एक को राजा बनाने के लिए मतदान किया गया था। हम सबने बलूत के बीज और अखरोट कोटर में डाले थे – यह फ़ैसला करने के लिए कि राजा कौन बने? मतगणना के बाद यह पता चला कि आप दोनों के पक्ष में बराबर-बराबर मत डाले गए हैं। अब आगे क्या किया जाए, इस मसले पर हमें सोचना होगा। मेरे ख्याल में फ़ैसला इस तरह हो सकता है : मिस्टर शेर और मिस्टर हाथी की दौड़ हो जाए। जो दौड़कर आगे निकल जाए वह राजा, पिछड़ जाए सो प्रजा। चाहें तो आप लोग अभी दौड़ सकते हैं।"

हाथी ने कहा :

"मैं अपने स्वभाव से तेज दौड़नेवाला प्राणी नहीं – प्रकृति ने मुझे ऐसा ही बनाया है। लेकिन मेरे ख्याल से राजा का काम है राज करना, तेज़ दौड़ना-भागना तो नहीं। उसके लिए आवश्यक है कि राज्य में न्याय व्यवस्था क़ायम रहे छोटे-बड़े सबके लिए समान, निरपेक्ष न्याय हो। और रही पकड़-धकड़, भाग-दौड़ की बात, वह काम मेरी आज्ञा से दूसरे भी कर सकते हैं।"

"अच्छा, तो ठीक है। एक दूसरा रास्ता यह भी हो सकता है: आप लोगों में से जो सबसे ऊपर छलांग लगा जाए—वह राजा, नहीं तो प्रजा।"

हाथी ने ज़ोरदार विरोध किया:

"नहीं, मैं छलांग नहीं लगा सकता। वैसे ही मैं भारी डील-डौलवाला जानवर हूं।"

"तब तो शेर को ही राजा बना दिया जाए!" शेर के समर्थक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और दहाड़ने लगे।

हाथी ने ज़रा संयत स्वर में कहा:

"भाइयो, मैं राजा बनाया जाऊं या नहीं—इससे मेरी सेहत पर असर नहीं पड़ता। लेकिन ऐसा मनमाना चुनाव तो सरासर अन्याय है। जबकि सच तो यह है कि शेर जो कुछ कर सकता है, वह मेरे लिए मुमकिन नहीं और जो मैं कर सकता हूं, वह शेर के लिए संभव नहीं। अगर ऐसी ही बात है तो शेर मुझसे कुश्ती लड़ ले। अगर वह मुझे पछाड़ दे तो उसे ही राजा बना दिया जाए।"

लोमड़ उदास हो गया लेकिन झटपट उसने एक और चाल सोच निकाली:

"ख़ैर, आपकी ही बात मान ली जाती है। निर्णय कुश्ती से ही होगा! लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी है। सभी थके-मांदे, भूखे-प्यासे हैं। बेहतर हो कि कुश्ती का प्रोग्राम सुबह नाश्ते के बाद रखा जाए। लेकिन सज्जनो, ध्यान रहे कि आप लोग यह मल्ल-युद्ध देखने के लिए सुबह तड़के ही न पहुंच जाएं। ज़ाहिर है कि मिस्टर शेर और मिस्टर हाथी सबके सामने कुश्ती लड़ना पसन्द न करेंगे। उचित यही है कि हम लोग ज़रा देर से आएं और यह जान लें कि मल्ल-युद्ध का विजेता कौन रहा? किसने किसे पछाड़ा?"

सभी ने लोमड़ की बात मान ली। इधर रात होते ही हाथी को नींद सताने लगी। वह जंगल में सोने चला गया और एक बलूत वृक्ष का, जिसका तना बहुत मोटा नहीं था, सहारा लेकर सो गया। हाथी हमेशा खड़े-खड़े ही सोते हैं। अगर भारी-भरकम डील-डौलवाला हाथी पसरकर लेट जाए, तो बिना मदद के उठ ही न पाए। थोड़ी दूर खड़ा लोमड़ हाथी पर नज़र टिकाए था। जब उसने देखा कि

हाथी गहरी नींद सो गया है, तो वह शेर के पास भागता हुआ आया और बोला:

"हुजूर, बस, जल्दी से चलिए। हाथी सो गया है। झटपट उसका पत्ता साफ़ कर दिया जाए।"

"क्या करें हम?" शेर ने पूछा। "हाथी को पछाड़ने की ताक़त मुझमें कहां? उसकी नींद खुल जाएगी और मैं उसे हरा न पाऊंगा।"

"हुजूर, उसे मारने या पछाड़ने की ज़रूरत नहीं। मैं तो आपसे दूसरी ही बात कह रहा था। हाथी अपनी आदत के अनुसार पेड़ का सहारा लेकर सोता है। हम लोग पेड़ को दांत से काटकर गिरा देंगे। पेड़ के साथ-साथ हाथी भी धराशायी हो जाएगा। और तब हम घोषणा कर देंगे: 'हुजूर ने हाथी को कुश्ती में पछाड़ दिया'।"

"अक्ल की बात सोची है तूने। लेकिन मैं अकेला सुबह होने तक पेड़ को न काट पाऊंगा। दांतों का बुरा हाल हो जाएगा। तुम जाकर मदद के लिए किसी को बुला लाओ।"

लोमड़ दौड़कर एक दर्जन भेड़ियों को बुला लाया। वे सब मिलकर बलूत का पेड़ काटने लगे। वे भोर होने तक पेड़ काटते रहे, तने पर दन्ताघात करते रहे, बस, थोड़ी-सी क़सर बाक़ी रह गई थी। बलूत का पेड़ ज़रा-सा झुक चुका था, लेकिन अभी गिरा न था। अब क्या किया जाए? सुबह का उजाला फैलता जा रहा था और हाथी की नींद भी टूट सकती थी। पेड़ गिरने का नाम न ले रहा था। लोमड़ ने काम बिगड़ता देखकर अक्ल दौड़ाई। उसने तीन भालुओं को बुलाकर कहा:

"हमारे भावी महाराजा महामहिम गजराज ने इस बलूत के पेड़ पर मधु-मक्खियों का छत्ता देखा है। रात में सोने से पहले गजराज ने आप लोगों से शहद का इन्तज़ाम करने के लिए कहा था। गजराज की नींद खुलने से पहले उनकी आज्ञा का पालन किया जाए, अन्यथा आप दण्ड के भागी हो सकते हैं।"

तीनों भालू खुशी-खुशी बलूत के पेड़ पर चढ़ गए। इसी वक़्त लोमड़ ने ऊपर देखते हुए धीरे से कहा:

"उस ओर चढ़ जाइए! हां, हां, ठीक वहीं पर," लोमड़ ने चिड़िया के

घोंसले की तरफ़ इशारा किया, जो पेड़ के झुके हुए हिस्से में झलक रहा था। तीनों भालू बलूत के शिखर तक चढ़ते गए, पेड़ का तना वज़न पड़ने से एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ ढह गया। और हाथी पीठ के बल धड़ाम से गिर पड़ा। इस तरह वह चारों खाने चित्त हो गया। तमाम कोशिशों के बाद भी खुद न उठ पाया। उधर पेड़ से गिरते ही तीनों भालुओं का तत्काल दम निकल गया।

नाश्ते के बाद एक-एक कर सारे जानवर इकट्ठा होने लगे। अजीब दृश्य था। हाथी नीचे और शेर ऊपर। नज़दीक ही धूर्त लोमड़ अपनी दुम हिलाता जा रहा था। जब सारे जानवर एकत्रित हो गए, तो धूर्त लोमड़ ने कहा :

"सज्जनो, अब आप खुद ही देख लीजिए। हमारे सिंहराज कितने शक्तिशाली हैं, उन्होंने हाथी को धराशायी कर दिया है। हाथी ने नीचे गिरते वक़्त बलूत को पकड़ना चाहा, लेकिन सिंहराज ने हाथी के साथ बलूत को भी गिरा डाला। नाहक बलूत वृक्ष को मज़बूत माना जाता है, ज़रा-सा झटका न बर्दाश्त कर सका, टूट गया। और तो और, तीन भालुओं ने भी हाथी का साथ देना चाहा, लेकिन धन्य है सिंहराज! उन्होंने उन भालुओं को ऐसा उछालकर फेंका कि अंतड़ियां तक बाहर निकल आईं! खुद ही देख लीजिए, सामने मरे पड़े हैं!"

इस हादसे से जानवर भयभीत होकर कांपने लगे। सभी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा :

"सिंहराज ही हमारे अन्नदाता हैं, वही हमारे राजा हैं!"

उस क्षण से सभी जानवरों ने भय खाकर शेर को ही अपना राजा मान लिया। अब शेर जैसे ही जंगल में दहाड़ता, सभी जानवर भय से कांपने लगते।

राजा बनते ही शेर ने अपनी मदद के लिए तीन गवर्नर नियुक्त किए। भेड़िये को चरागाह, बाघ को जंगल और लोमड़ को खेत-खलिहान का गवर्नर बनाया गया।

गवर्नरों ने सिर झुकाकर सिंहराज के प्रति कृतज्ञता प्रगट की और अपना कार्यभार संभालने चल पड़े।

इधर जानवरों में बातें होने लगीं :

"आखिर भेड़िया और लोमड़ में कौन-से सुरखाब के पर लगे हैं, जो गवर्नर

बना दिए गए? हमारी बिरादरी में इज़्ज़तदार जानवरों की कमी नहीं। उनसे अच्छे जानवर मौजूद हैं, उन्हें तो गवर्नर नहीं बनाया गया।"

हिरन तपाक से बोला:

"हां, दोस्तो, दाल में कुछ काला है! हम ईमानदारी और सच्चाई से राजा का मन नहीं जीत सकते। मुझे इस बारे में पहले ही शक था – शेर भला इतनी आसानी से हाथी को पछाड़ सकता है! इसमें ज़रूर कोई चाल थी। लोमड़ अपनी धूर्तता के लिए पहले ही बदनाम है और हो सकता है उसी ने कोई दांव खेला हो। रही भेड़ियों की बात, यक़ीनन उन सबने शेर की मदद की होगी और इसीलिए उन्हें रातों-रात गवर्नर बना दिया गया। मैं बाघ के बारे में कुछ नहीं कहता – वह शक्तिशाली जानवर है और वह गवर्नर की प्रतिष्ठा के योग्य है। और फिर उसकी उपेक्षा कर पाना शेर के लिए मुमकिन नहीं – वह शेर से नाराज़ होकर सारा काम बिगाड़ सकता है। शक्ति में भी बाघ शेर-से कम नहीं।"

"भाइयो, मैंने भी यही सोचा था," भालू ने ज़ोर से कहा। "अरे, यह तो अन्धा भी बता सकता है कि कोई चाल खेली गई है। हाथी की आंख में धूल झोंकी गई है। साथ ही हमारे तीन भाइयों को मौत के घाट उतार दिया। मेरा अनुमान है कि भेड़ियों ने मिलकर बलूत का वृक्ष दांत से काटकर ..."

"हां! यही बात है!" सभी चिल्लाए।

अचानक लोमड़ वहां से गुज़रता दिखा। सब चुप हो गए।

"श्च, श्च! चुप! शैतान सुन लेगा, तो मुसीबत आ जाएगी। हम सबकी सिंहराज के यहां पेशी हो जाएगी। और हमें काले कोस पहुंचा दिया जाए-गा!"

लोमड़ ने रुककर पूछा:

"यह क्या तमाशा है? कोई साज़िश तो नहीं कर रहे हो?"

"भाई, आप भी खूब हैं! अरे, हम लोग तो शेर महाराज के राजतिलक की खुशियां मना रहे हैं, आपस में बातें कर रहे हैं। अहो भाग्य, ऐसा राजा और इतने बुद्धिमान, न्यायप्रिय गवर्नर बड़े नसीब से मिलते हैं।"

"अच्छा, यदि ऐसा है तो कोई बात नहीं। ख्याल रहे, मजमा जुटाना ग़ैरक़ानू-नी है। आइन्दा ऐसी ग़लती न हो।"

तब से सभी जानवर अपनी-अपनी अलग ज़िन्दगी जीने लगे। घास-पात खाने-वाले जीव शान्तिप्रिय जीवन बिताते, जबकि हिंसक जानवर खूनी डकैतियां डालते, लूटपाट करते और दुर्बल जानवरों का जीना दूभर करते। लेकिन राजा और क़ानून के सामने अपने को सच्चा ठहराने के लिए वे यही साबित करते कि जो कुछ वे करते हैं, अपनी मनमर्ज़ी से नहीं, बल्कि न्याय और व्यवस्था के लिए अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हैं। जब कभी राजा क़सूरवार से पूछता: "तुमने खरगोश को क्यों मार डाला?" तो अपराधी जानवर भट से कहता: "हुज़ूर, वह आपका मज़ाक़ उड़ा रहा था, आपकी हत्या के लिए प्रजा को भड़का रहा था।" राजा अपने गवर्नरों का विश्वास कर लेता और उनकी वफ़ादारी के लिए तरह-तरह के इनाम, तमगे या पदक देकर उन्हें अलंकृत करता।

लोमड़ खेत-खलिहान की गवर्नरी से ऊब गया। खेतों में शिकार के नाम पर मिलता ही क्या था – मामूली चूहे और छोटे-छोटे जीव। लेकिन उसका जी करता कि वह मुर्ग़ियों और बत्तखों पर हाथ साफ़ करे, उन्हें चटखारे ले-लेकर मज़े से खाए। लोमड़ वनराज के पास पहुंचकर बोला:

"महाराज, मुझे मुर्ग़ियों की देख-रेख का कार्यभार सौंप दिया जाए। दुश्मनों से उनकी रक्षा करना ज़रूरी है।"

"इन नाचीज़ मुर्गे-मुर्ग़ियों का मसला कहां से आ टपका?" वरनाज ने दहाड़ते हुए पूछा। "अरे, मुर्ग़ीखानों में कौन-सी आफ़त आ गई?"

"महाराज, गंध-मार्जार और चूहों ने उत्पात मचा रखा है। वे असहाय मुर्ग़ियों और उनके चूज़ों को जीने नहीं देते। एक मुर्गे ने मुझ से शिकायत की है और यह भी कहा है कि उसकी प्रार्थना आप तक पहुंचा दूं। ऐसा न हो कि सब आपकी हंसी उड़ाएं और कहें कि आप राज-काज नहीं देख पा रहे हैं। सब तरफ़ अव्यवस्था फैल रही है।"

शेर ने ऐसा रुख अपनाया, जैसे उसे धूर्त लोमड़ की बात पर विश्वास हो गया है। लोमड़ खुशी-खुशी दौड़ता हुआ गांव में पहुंचा। उसी रात से उसने मुर्ग़ीखानों की जांच शुरू कर दी। जितनी बार उन्हें गिनता, हर जांच में दो-तीन मुर्ग़ियां हड़प जाता।

एक बार कोई आदमी लोमड़ की घात में बैठ गया और उसे मुर्ग़ीखाने में ही

दुम से धर पकड़ा। लोमड़ को खूब पीटा गया। उसकी ऐसी धुनाई की गई कि लोमड़ के होश उड़ गए। वह बेदम-सा हो गया। फिर उस आदमी ने लोमड़ की दुम रस्सी से बांधकर उसे बाड़े पर लटका दिया। आदमी को यह आशंका थी कि होश आते ही लोमड़ भाग जाएगा। जब वह आदमी सोने चला गया, तो लोमड़ को होश आया और वह जान बचाने की तरकीब सोचने लगा। भागने की कोशिश में हाथ-पांव मारने लगा।

देर तक कोशिशें करता रहा पर रस्सी टूटने का नाम न ले रही थी—काफ़ी मज़बूत जो थी। तब लोमड़ ने अपनी दुम से ही छुटकारा पाने का निर्णय किया। दुम न सही, ज़िन्दा तो रह लूंगा! वह अपनी दुम काटने लगा, यद्यपि यह बड़ा पीड़ादायक अनुभव था। बस, दुम कटकर अलग होते ही लोमड़ नौ दो ग्यारह हो गया।

खेत में पहुंचकर सोचने लगा: अब क्या किया जाए? अपनी प्रजा को मुंह कैसे दिखाऊंगा? सब मेरी उपेक्षा करेंगे और मेरी आज्ञा नहीं मानेंगे। राजा साहब के सामने तो और भी छीछालेदर होगी। अगर कहीं उन्होंने दुम के बारे में पूछ लिया तो क्या होगा? आखिर बेदुम का गवर्नर होना कितने शर्म की बात है! अच्छा होता कि उस आदमी ने मुझे मार डाला होता! शर्मनाक ही सही पर ज़िन्दगी तो गुज़ारनी ही पड़ेगी। खरगोश की मांद में चलते हैं, घाव सूखने तक वहीं रहेंगे।

लोमड़ खरगोश के यहां पहुंचा और दरवाज़े पर दस्तक देकर बोला:

"दरवाज़ा खोलो, रात बिता लेने दो। मैं तुम्हारे काम आऊंगा!"

"मैं दरवाज़ा नहीं खोलूंगा। मेरा बड़ा परिवार है, छोटे-छोटे बच्चे हैं। वैसे ही जगह की दिक़्क़त है।"

"लेकिन मैं कहता हूं, दरवाज़ा खोलो! जानते हो मैं कौन हूं? मैं खेत-खलिहानों का गवर्नर और घरेलू पक्षी विभाग का मैनेजर हूं। गांव में राजा का फ़रमान लेकर आया हूं।"

खरगोश ने लोमड़ की बड़ी-बड़ी बातें सुनते ही डरकर दरवाज़ा खोल दिया। लोमड़ खरगोश के घर में पहुंचा, नरम-नरम बिस्तर पर सो गया और उसके बच्चों को एक किनारे ढकेल दिया।

इधर खरगोश अपने बच्चों के लिए चारा लेने गया, उधर लोमड़ को भूख लगी। उसने झट से खरगोश के एक बच्चे को खा लिया।

खरगोश चारा लेकर घर पहुंचा। अपने बच्चों को खाना खिलाने लगा कि देखता क्या है – एक बच्चा ग़ायब है। खरगोश ने लोमड़ से पूछा :

"माननीय महोदय, मेरा एक बेटा कहां है? वह दिख नहीं रहा है।"

"दो कौड़ी की औक़ात, इत्ती बड़ी बात! तू मुझसे अपने बच्चों के बारे में पूछ रहा है! मैं तेरा कौन हूं? नौकर या धाय? तू आबादी बढ़ाता फिरे और मैं उन्हें हर घड़ी गिनता-सहेजता फिरूं – कितने हैं, कितने नहीं। तुझे अगर जान प्यारी है तो मुझसे टकराना मत, नहीं तो समझ लो हमारे सिंहराज, महा-राज का पंजा तुम्हें जहन्नुम रसीद कर देगा।"

खरगोश मांद से निकलकर बाहर आया और रोने लगा। फिर से बच्चों के लिए चारा-पानी का जुगाड़ करने निकल पड़ा। घर लौटा, इस बार भी एक बच्चा ग़ायब था। खरगोश ने कुछ न कहा, अपने शेष बच्चों को खाना खिलाने के बाद वह अपने घर से बाहर आकर फूट-फूटकर रोने लगा।

इसी वक़्त एक दूसरा ख़रगोश कहीं भागता चला जा रहा था। अपने संबंधी को रोता देखकर क़रीब आकर पूछने लगा :

"भाई, क्यों रो रहे हो?"

"क्यों न रोऊं? मेरी मांद में लोमड़ घुसा बैठा है। मेरे बच्चों को खाता है, डर के मारे मैं कुछ कह नहीं पाता। और ऊपर से धमकाता है : 'राजा के पास ले जाऊंगा, वह तुझे भी खा जाएगा।'"

"भाई, लेकिन तुम राजा से मिलकर अपना दुखड़ा तो सुना ही सकते हो।"

"खूब कही, नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़! भैया, राजा के यहां जाना, न जाना बराबर है – राजा भी वैसा ही है। अगर शिकायत करें तो राजा के कारिन्दे उसे बीच में दबा देंगे – वे अपने प्रियजनों का बुरा क्यों चाहेंगे?"

दोनों खरगोश अपनी-अपनी राह चल दिए।

उदास ख़रगोश अपने घर लौटा, लेकिन वहां तो सभी बच्चे ग़ायब थे। खरगोश ऐसा डरा कि अपनी मांद के बाहर ही बैठकर दहाड़ें मारता हुआ रोने

लगा। थोड़ी दूर पर एक भूरा भेड़िया कहीं भागता चला जा रहा था, उसने खरगोश को देखा, रुककर पूछने लगा:

"भैया खरगोश, खैरियत तो है? तुम रो क्यों रहे हो?"

"क्यों न रोऊं? मेरा तो सर्वनाश हो गया। लोमड़ ने मेरे घर पर कब्ज़ा कर लिया है, मेरे मासूम बच्चों को खा गया और अब मुझे भी खाने की घात लगाए है। अब तो अपने घर में घुसने से डर लगता है।"

"भाई, तुम दुखी मत हो। मैं उसे अभी निकाल बाहर करता हूं।"

फिर वे दोनों घर पहुंचे। भेड़िये ने दस्तक दी और बोला:

"तुम कौन हो? बाहर निकलो!"

"मैं लोमड़ हूं। मुझसे कौन अकड़ रहा है?"

"ओह! लोमड़ भाई, तुम हो!" भूरे भेड़िये ने कहा। "तुम्हें शर्म नहीं आती, कमज़ोर लोगों पर जुर्म ढाते हो। मैं आग्रह करता हूं कि घर छोड़कर चले जाओ!"

"भेड़िया भाई, यह तुम्हारा महकमा नहीं। मेरे काम में दखलन्दाज़ी ठीक नहीं। अपने इलाक़े में जाकर इन्तज़ाम देखो। रही मेरी बात, उसे मैं खुद देख-समझ रहा हूं।"

भेड़िये ने देखा कि कोई परिणाम नहीं निकल रहा है, वह राजा के यहां लोमड़ की शिकायत लेकर पहुंचा। सिंहराज ने हिरन को आदेश दिया कि वह अपराधी लोमड़ को तत्काल दरबार में हाज़िर करे। जैसे ही लोमड़ को दरबार में हाज़िर किया गया, सिंहराज ने ज़ोर से दहाड़ा:

"तू मेरे राज्य में अव्यवस्था फैला रहा है!"

लोमड़ घुटनों के बल, सिर झुकाकर बैठ गया और विनीत स्वर में बोला:

"महाराजाधिराज, मौत के घाट उतारने से पहले मेरी प्रार्थना सुन ली जाए!"

"कहो, अपनी सफ़ाई में क्या कहना चाहते हो?"

"अन्नदाता! मुझे मालूम है कि भेड़िये ने ईर्ष्यावश मेरी शिकायत की है। और अगर सच-सच कहा जाए तो सारा अपराध भेड़िये का है। मुझे उसने अकारण

बदनाम किया है। खरगोश के बच्चों को मैंने नहीं, भेड़िये ने खाया है। मैंने खरगोश की मदद की तो भेड़िये ने मेरी दुम ही काट ली और मैं खुद मरते-मरते बचा। हुजूर, खुद ही देख लें कि कैसे उसने मेरी दुम कुतरकर मुझे अपमानित किया है। मैं तो अब कहीं का न रहा। और तो और, वह सारा गुनाह मुझ पर ही मढ़ रहा है। आप खुद ही देख लीजिए, महाराज!"

शेर बड़ी देर तक सोचता रहा, मनन करता रहा, फिर फ़ैसला सुनाते हुए बोला:

"मुमकिन है, तुम ही सच कहते हो। फिलहाल तुम्हें गवर्नर के पद से हटाया जाता है और दरबारी खुफ़िया पुलिस का निदेशक बनाया जाता है। रही भेड़िये की बात, मैं उसे दण्डित करूंगा।"

शेर ने भेड़िये को बुलाने के लिए हरकारा भेजा और खुद उधेड़-बुन में पड़ गया। यह कहना कठिन है कि उन दोनों में से कौन गुनहगार है और कौन निर्दोष। लगता है कि दोनों झूठ बोल रहे हैं। और उन दोनों में से किसे जिन्दा छोड़ा जाए, यह विचारणीय मसला है। लोमड़ धूर्त है, उसकी बेजा हरकत साफ़-साफ़ दिखलाई पड़ती है। लेकिन उसे दण्डित करना उचित न होगा। उसी ने तो अपनी धूर्तता से शेर को राजगद्दी पर बिठाया था। और भेड़िये ने क्या किया है? यही न कि उसने बलूत का पेड़ काटकर गिराने में एड़ी-चोटी का पसीना बहा दिया था। लेकिन यह कौन-सा बड़ा काम है? काटने-कुतरने का काम तो कोई मूरख भी कर सकता है। ठीक है, भेड़िये को ही दण्ड देना उचित होगा। दोनों को बेदाग छोड़ना मुमकिन नहीं।

सिंहराज के दरबार में भेड़िया पेश किया गया। शेर ने उसे अपनी बात कहने या सफ़ाई देने तक का मौक़ा न दिया। बस, शेर ने आव देखा न ताव भेड़िये को अपने भारी पंजों में दबोचकर मार डाला। जब भेड़ियों ने सिंहराज का अन्याय देखा तो उन्होंने विचार-विमर्श करना शुरू किया। आखिर धूर्त लोमड़ियों और खुद सिंहराज से बदला कैसे लिया जाए? फिर जंगल में बग़ावत की ऐसी आग भड़की कि सारे भेड़िये झुण्डों में इकट्ठे होकर लोमड़ियों के घरों पर ज़बर्दस्त हमले करने लगे। देखते ही देखते उनके बेशुमार घर तबाह हो गए, बूढ़े और जवान लोमड़-लोमड़ियों को मौत के घाट उतारा गया।

क्या पता यह युद्ध कहीं ज्यादा समय तक चला होता, लेकिन तब तक गांव के लोग हिंसक जानवरों के उत्पात से तंग आ चुके थे। हर क्षण कभी मुर्गी, कभी भेड़, कभी बछड़ा ग़ायब होता रहता। फिर एक दिन सारे गांववालों ने मिलकर हंकवा लगाया। शेर को पकड़कर सीखचों में जकड़ दिया गया, बहुत-से भेड़ियों को मार डाला। शेष जानवर सिर पर पैर रखकर वहां से दूर भाग गए और तब से उस इलाक़े में लोग अमन-चैन से रहने लगे।

तेलेसिक

पुराने ज़माने की बात है। कहीं कोई बूढ़ा अपनी बुढ़िया के साथ ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहा था। उन दोनों को एक ही सबसे बड़ा दुख था – वे सन्तानहीन थे। जीवन का यह सूनापन उन्हें अक्सर सताता: "बुढ़ापे में दो जून की रोटी का सहारा कौन बनेगा? हमारे दुख-सुख कौन सुनेगा? कौन हमें कन्धा देगा?" एक दिन उदास बुढ़िया ने बूढ़े पति से कहा:

"अरे, सुनते हो, जंगल में जाओ और लकड़ी काटकर एक नन्हा-सा पालना और कठबबुआ बना दो। उसे ही पालने में सुलाकर जी बहला लूंगी।"

बूढ़े ने पहले इसे बुढ़िया की सनक समझा, कठबबुआ और पालना बनाने के लिए राज़ी न हुआ। लेकिन बुढ़िया ने अपनी ज़िद न छोड़ी, कठपुतला बनाने के लिए वह बार-बार कहती रही। एक दिन बूढ़े ने सोचा कि चलो, बुढ़िया के मन-बहलाव के लिए खिलौना बना ही दिया जाए। बूढ़े ने लकड़ी काटकर सुन्दर-सा पालना और कठपुतला बनाया। बुढ़िया उस कठपुतले को नन्हे-से पालने में लिटाकर, झूला झुलाकर यह गीत गाने लगी:
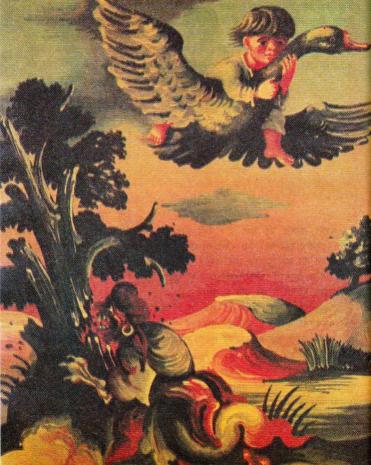
"नयनों का तारा, तेलेसिक,
मां का प्यारा तेलेसिक,
खीर पकाई, दलिया बनाया,
तब न आया, तेलेसिक।"

बुढ़िया उस क्षण तक मगन होकर पालना झुलाती रही, जब तक कि उसे नींद न आ गई। बूढ़े पति-पत्नी की सुबह आंख खुली तो वे हैरान होकर देखते रह गए। पालने में पड़ा हुआ कठपुतला नन्हे सुकुमार बेटे में बदल गया। वे दोनों खुशी से फूले न समाए और उन्होंने अपने बेटे का नाम रखा तेलेसिक।

वह शिशु दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा और एक दिन सुंदर नवयुवक बन गया। बूढ़े बाबा और बुढ़िया ने खूब खुशियां मनाईं।

एक दिन तेलेसिक ने कहा:

"पिता जी, मेरे लिए सोने की नाव और चांदी की डांड़ बना दीजिए। मैं मछली पकड़ने जाऊंगा, खाने-पीने का इंतज़ाम करूंगा।"

बूढ़े ने बेटे के लिए स्वर्ण नौका और चांदी की डांड़ बनाई – लकड़ी की नाव पर सोने का क़ीमती पत्तर चढ़ाया और लकड़ी की डांड़ पर चांदी मढ़ दी। तेलेसिक नदी पर नाव खेता हुआ मछली मारने चल पड़ा। इस तरह वह मछलियां पकड़ता और माता-पिता की ज़रूरतें पूरी करता, बूढ़ी मां उसके लिए खाना लाती और हर बार यह कहती:

"देखो, बेटे! जब मैं तुम्हें आवाज़ दूं – तट की तरफ़ नाव लेकर चले आना, अगर कोई दूसरा आवाज़ दे – तब इधर मत आना, आगे बढ़ जाना।"

एक दिन सुबह बूढ़ी मां बेटे के लिए नाश्ता लेकर नदी किनारे आई और ज़ोर-ज़ोर से यह गीत गाने लगी:

"तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनारे जोहूं बाट!"

तेलेसिक ने यह सुनते ही अपनी नाव से कहा:

"नाव, री नाव, झट बढ़ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे!"

तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुंच गया। नाव तट पर ठहरा दी। खा-पीकर स्वर्ण नौका को चांदी की डांड़ से खेता हुआ फिर मछली पकड़ने चल दिया।

उधर अज़दहे ने यह सुन लिया था कि तेलेसिक की मां अपने बेटे को कैसे बुलाती है। अजदहा नदी तट पर आकर ज़ोर-ज़ोर से भद्दी आवाज़ में गाने लगा:

"तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनारे जोहूं बाट!"

तेलेसिक ने जब यह सुना तो बोला:

"यह मेरी मां की आवाज तो नहीं! नाव, री नाव, आगे बढ़ चल! नाव, री नाव, आगे बढ़ चल!"

स्वर्ण नौका चांदी की डांड़ के सहारे आगे बढ़ चली। और अजदहा देर तक घात लगाए वहां खड़ा रहा। बाद में उकताकर खाली हाथ अपने घर लौट गया।

उधर तेलेसिक की मां ने खाना बनाया, उसे लेकर नदी किनारे पहुंची और बेटे का नाम लेकर उसे बुलाने लगी:

"तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनारे जोहूं बाट!"

बेटे ने मां की पुकार सुनी और उसने अपनी नाव से कहा:

"नाव, री नाव, झट बढ़ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे।"

तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुंच गया। उसने भर पेट खाना खाया, पानी पिया, पकड़ी हुई मछलियां मां को सहेजीं और फिर अपनी नाव खेता हुआ आगे बढ़ गया।

अजदहे ने पहले की तरह नदी किनारे आकर भद्दी आवाज़ में तेलेसिक का नाम लेकर वही गीत गाना शुरू किया:

"तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनारे जोहूं बाट!"

तेलेसिक को ऐसा लगा कि यह उसकी मां की आवाज़ नहीं है। फिर वह डांड़ घुमाते हुए बढ़ चला:

"नाव, री नाव, आगे बढ़ चल, नाव, री नाव, आगे बढ़ चल!"

यह सुनते ही नाव आगे बढ़ गई।

अजदहे ने देखा कि कोई दांव नहीं लग रहा है। निराश होकर वह लोहार के पास पहुंचा:

"लोहार, लोहार! मेरी भद्दी आवाज़ तेलेसिक की मां की आवाज जैसी सुरीली कर दो।"

लोहार ने ठोंक-पीटकर अजदहे की भद्दी आवाज़ ठीक कर दी। अजदहा नदी किनारे पहुंचकर तेलेसिक का नाम पुकारते हुए गाने लगा:

"तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनारे जोहूं बाट!"

तेलेसिक ने सोचा कि मां खाना लेकर आ गई है। वह अपना नाव से बोला:

"नाव, री नाव, झट बढ़ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे।"

बस, तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुंच गया। अजदहा इसी ताक में बैठा ही था। उसने तेलेसिक को नाव में से बाहर खींच लिया और उसे घसीटता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।

घर के दरवाज़े पर आकर बोला:

"अल्योन्का बेटी, दरवाज़ा खोल!"

अल्योन्का ने दरवाज़ा खोल दिया, अजदहा तेलेसिक को भीतर घसीटता हुआ बोला:

"अल्योन्का बेटी, अलावघर में खूब आग जलाओ, अंगारे दहकाओ और तेलेसिक को भून पकाओ। तब तक मैं मेहमानों को न्योता देकर आता हूं – मिलकर दावत उड़ाएंगे।"

अजदहा मेहमानों को बुलाने उड़ चला।

इधर अल्योन्का ने अलावघर में खूब आग जलाई और अंगारे दहकाकर तेलेसिक से कहने लगी:

"तेलेसिक, बेलचे पर बैठ जाओ!"

वह बोला:

"मुझे तो पता नहीं, कैसे बैठना है।"

"चलो, वक़्त बरबाद मत करो!" अल्योन्का ने चीखकर कहा।

तेलेसिक बेलचे पर अपना हाथ रख दिया।

"ऐसे?" तेलेसिक ने पूछा।

"अरे, ऐसे नहीं! अच्छी तरह बैठ जाओ।"

तेलेसिक बेलचे पर अपना सिर टिका दिया और बोला:

"शायद इस तरह?"

"अरे, यूं नहीं, मूरख! अपना समूचा शरीर टिकाकर बैठ जाओ।"

"पर कैसे? शायद इस तरह?" यह कहकर उसने अपना पैर बेलचे पर टिका दिया।

"तुम भी अजीब हो! ऐसे नहीं!"

"अगर ऐसा ही है तो एक बार बैठकर दिखा दो। मुझे इसका इल्म नहीं!"

अल्योन्का बेलचे पर बैठकर दिखाने लगी। अभी वह बैठी ही थी कि तेलेसिक ने बेलचे समेत उसे उठाया और दहकते अलावघर में झोंककर उसका दरवाज़ा बन्द कर दिया। इसके बाद तेलेसिक ने अजदहे के घर में ताला लगाया और मेपल के एक ख़ूब ऊंचे पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद अपने दोस्तों और मेहमानों के साथ अजदहा घर पहुंचा:

"अल्योन्का बिटिया, दरवाज़ा खोलो!"

घर के अन्दर से कोई न बोला।

"अल्योन्का बिटिया, दरवाज़ा खोलो!"

फिर कोई उत्तर न मिला।

"अरी, अल्योन्का, मई! कहां जा मरी?"

अजदहे ने घर का दरवाज़ा खोला। मेहमानों को घर में बुलाया। सब खाने की मेज़ पर बैठ गए। अजदहे ने अलावघर का दरवाज़ा खोला। भुना हुआ मांस निकालकर मेहमानों को परोस दिया। सब खाने लगे – तेलेसिक का मांस खा रहे हैं, उन्हें तो यही ख़्याल था।

जब वे छककर खा-पी चुके तो घर से बाहर निकलकर हरी घास पर टहलने लगे:

"तेलेसिक का खाकर मांस, झूम-झूमकर टहलो आज!"

मेपल के पेड़ पर बैठा तेलेसिक बोला:

"अल्योन्का का खाकर मांस, झूम-झूमकर टहलो आज!"

"यह आवाज़ कहां से आ रही है?" वे सोचने लगे और फिर से गाने लगे:

"तेलेसिक का खाकर मांस, झूम-झूमकर टहलो आज!"

तेलेसिक ने भी फिर वही राग छेड़ा:

"अल्योन्का का खाकर मांस, झूम-झूमकर टहलो आज!"

सब हैरान हुए: "यह कौन बोल रहा है?"

आओ, उसे ढूंढ़ा जाए! लगे सब चप्पा-चप्पा छानने। उन्होंने देख लिया कि तेलेसिक तो मेपल के पेड़ पर बैठा हुआ है। वे सब मेपल के नीचे पहुंचे और पेड़ काटने लगे। वे उसे काटते रहे, काटते रहे, पर पेड़ कट नहीं रहा था। बहुत मज़बूत था, कइयों के दांत टूट गए। वे भागे-भागे लोहार के पास पहुंचे, बोले:

"लोहार, लोहार! हमारे लिए खूब पैने दांत बना दो ताकि मेपल का पेड़ काटा जा सके!"

लोहार ने ठोंक-पीटकर खूब पैने दांत बना दिए। उसके बाद फिर वे मेपल के नीचे पहुंचकर पेड़ काटने में जुट गए। मेपल कटकर गिरने ही वाला था...

इस बीच मेपल के ऊपर से हंसों की पांत उड़ती हुई गुज़र रही थी। तेलेसिक ने हंसों से कहा:

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हंसो,
सबके प्यारे-प्यारे हंसो!
आओ, आओ, साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुंचाओ!"

लेकिन हंसों ने कहा:

"हम अगली पांत के हंस हैं! तुम बिचली पांत के हंसों से मदद मांगो।"

उधर अजदहे पेड़ काटने में जी-जान से जुटे थे... हंसों की एक और पांत ऊपर से गुज़री। तेलेसिक ने बिचली पांत के हंसों से कहा:

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हंसो,
सबके प्यारे-प्यारे हंसो,
आओ, आओ, साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुंचाओ!"

लेकिन इस पांत के हंसों ने कहा:

"हम बिचली पांत के हंस हैं! आखिरी पांत के हंसों से मदद मांगो।"

मेपल चटकने लगा था। अजदहे थोड़ा सुस्ता लेने के बाद फिर पेड़ काटने लगे। इस तरह सुस्ता-सुस्ताकर पेड़ काटते रहे... हंसों की एक और पांत पेड़ के ऊपर से गुजरी। तेलेसिक ने उनसे विनयपूर्वक कहा:

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हंसो,
सबके प्यारे-प्यारे हंसो!
आओ, आओ, साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुंचाओ!"

लेकिन उन हंसों ने भी इनकार कर दिया:

"आखिरी हंस से मदद मांगना।" यह कहकर वे आगे बढ़ गए।

तेलेसिक करता भी तो क्या? उधर एक-एक क्षण पहाड़-सा भारी लग रहा था। पेड़ अब गिरने ही वाला था। इसी क्षण आकाश पर एक हंस उड़ता दिखा – बिल्कुल अलग और अकेला था। शायद अपने भाइयों से पिछड़ गया था। धीरे-धीरे उनकी ओर उड़ता आ रहा था। तेलेसिक ने उस हंस से कहा:

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हंस,
सबसे प्यारे-प्यारे हंस!
घर पहुंचाकर साथ निभाओ,
संकट आया जान बचाओ!
अजदहे सारे जुटे हुए हैं,
मुझे मारने अड़े हुए हैं।
भैया मेरे, प्यारे हंस,
उजले-उजले न्यारे हंस!"

यह सुनते ही हंस को उस पर दया आ गई। उसने कहा:

"आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ!"

हंस ने तेलेसिक को अपनी पीठ पर बैठा लिया और उसे लेकर उड़ चला। पर वह बहुत थका हुआ था – ऊंची उड़ान नहीं भर पा रहा था। अजदहे ने देखा

कि तेलेसिक हंस की पीठ पर बैठा हुआ उड़ा चला जा रहा है। वह उसका पीछा करने लगा। बस, वह पकड़ने ही वाला था। झपट्टा मारने भर... लेकिन हंस झट से कतराकर आगे निकल गया।

थका-मांदा हंस तेलेसिक के घर के चबूतरे पर उतरा और उसे पीठ से उतारकर बाड़े में चारा चुगने लगा। और तेलेसिक चबूतरे पर बैठा, चुपके-चुपके घर की आहट लेने लगा। बूढ़े माता-पिता क्या कर रहे हैं? बुढ़िया ने कचौड़ियां बनाई थीं, चूल्हे से कचौड़ियां उतारती और कहती जाती :

"यह कचौड़ी तुम्हारे लिए है और यह मेरे लिए!"

इसी वक्त तेलेसिक घर के बाहर से बोला :

"और मेरे लिए?"

बुढ़िया ने फिर चूल्हे से कचौड़ियां उतारीं और बोली :

"यह कचौड़ी तुम्हारे लिए और यह मेरे लिए!"

तेलेसिक ने फिर से कहा :

"और मेरे लिए?"

"उन्हें सुनाई पड़ा। लेकिन यह किसकी आवाज़ है?"

"तुमने सुना, जैसे कोई पुकार रहा है?"

"शायद तुम्हें ऐसे ही लगा हो?" बूढ़े ने कहा।

बुढ़िया फिर से कचौड़ियों का हिसाब लगाने लगी :

"यह तुम्हारे लिए, यह मेरे लिए!"

"और मेरे लिए?" चबूतरे से तेलेसिक ने कहा।

"कुछ भी हो, कोई बुला रहा है!" बुढ़िया ने कहा। उसने खिड़की से बाहर झांका तो देखा – चबूतरे पर उसका प्यारा बेटा तेलेसिक खड़ा है!

बूढ़े माता-पिता ने झट से बाहर आकर बेटे को गले से लगा लिया और खुशी-खुशी उसे घर के अन्दर ले आए।

हंस बाड़े में घूम-घूमकर दाना चुग रहा था। बुढ़िया ने उसे देखकर कहा :

"अहा, कितना सुन्दर हंस है! अभी उसे काटकर पकाती हूं!"

लेकिन तेलेसिक ने मां से कहा :

"नहीं, मां, इस हंस को मत मारो, इसे भर पेट दाना चुगाओ। अगर वह मेरी सहायता न करता, तो मैं कभी का मर गया होता। इसने ही मेरी जान बचाई है।"

उन सबने खुशी-खुशी हंस को बढ़िया दाना चुगाया, ठण्डा-ठण्डा पानी पिलाया और रास्ते के लिए थोड़ा-सा दाना पंखों के नीचे सहेजकर बांध दिया। इस तरह वह हंस अपनी राह उड़ चला।

जादुई अण्डा

किसी भूले-बिसरे ज़माने का बहुत पुराना क़िस्सा है। तब लवा पक्षी राजा था और चुहिया रानी। उनके पास अपना एक खेत था। एक बार खेत में उन्होंने गेहूं बोया। फ़सल पकी तो उसे काटकर वे गेहूं का बंटवारा करने लगे। गेहूं का एक दाना बच गया। चुहिया बोली :

"लाओ, मुझे दे दो!"

लवा पक्षी बोला :

"नहीं, यह मेरा है!"

"आओ, गेहूं का यह दाना कुतरकर आधा-आधा बांट लें।"

लवा पक्षी उस दाने का बंटवारा करने ही जा रहा था कि चुहिया ने झट से दाना मुंह में दबाया और दौड़कर अपनी बिल में घुस गई। फिर क्या था? राजा लवा ने सारे पक्षियों को इकट्ठा करके चुहिया रानी के विरुद्ध निर्णायक युद्ध शुरू कर दिया। उधर रानी चुहिया ने अपनी सहायता के लिए सारे जीव-जन्तुओं की फ़ौज बुला ली।

लवा राजा और चुहिया रानी के बीच दिन भर घमासान लड़ाई होती रही। दोनों की फ़ौजें लड़ते-लड़ते थक गईं। शाम हुई तो युद्ध थमा और फ़ौजें विश्राम करने लगीं। रानी चुहिया ने देखा कि युद्ध में भुनगे नदारद
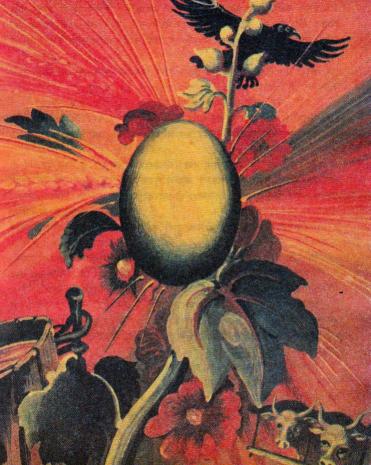
हैं। उसने आदेश दिया कि इलाक़े के सारे भुनगों को हाज़िर किया जाए। बस, आदेश देने भर की देर थी। देखते ही देखते सारे भुनगे उड़-उड़कर इकट्ठे होने लगे। चुहिया ने उन्हें आदेश दिया कि वे रात में ही जाकर पक्षियों के पंखों के नन्हे परों को कुतर डालें।

दूसरे दिन तड़के सवेरे ही चुहिया रानी ने युद्ध का आह्वान किया। उसने ललकारते हुए कहा :

"उठो, युद्ध भूमि में फ़ैसला हो जाए!"

पक्षियों ने चुहिया रानी की ललकार सुनी, पर वे उठने की कोशिश करते ही गिर पड़ते। और जन्तु उन्हें चिथड़े कर डालते। चुहिया रानी ने लवा राजा पर विजय प्राप्त कर ली।

उधर एक उक़ाब यह समझ गया कि अब ख़ैरियत नहीं है, वह पेड़ पर ही बैठा रहा। इसी वक़्त एक शिकारी वहां से गुज़र रहा था, उसने देखा कि उक़ाब पेड़ पर बैठा है। शिकारी ने उक़ाब को मारने के लिए जैसे ही निशाना साधा, उक़ाब ने विनयपूर्वक कहा :

"नौजवान शिकारी, मुझे मत मारो, मैं वक़्त ज़रूरत पर तुम्हारे काम आऊंगा!"

शिकारी ने दुबारा निशाना लगाया, उक़ाब ने फिर अपनी बात दोहराई :

"भाई, मुझे मत मारो, बेहतर हो कि अपने साथ घर ले चलो। तब तुम्हें मेरी क़ीमत का पता चल पाएगा!"

शिकारी ने एक बार फिर निशाना लगाया, उक़ाब पहले की तरह गिड़गिड़ाते हुए बोला :

"भाई, मुझे मत मारो! मुझे अपने साथ घर ले चलो – मैं तुम्हारे काम आऊंगा!"

शिकारी ने उक़ाब की बात पर विश्वास कर लिया। उसने पेड़ पर चढ़कर उक़ाब को घोंसले में से निकाला और उसे अपने घर ले आया। घर आने पर उक़ाब ने शिकारी से कहा :

"भाई, पंख मज़बूत होने तक मुझे तुम मांस खिलाकर मेरी परवरिश करो।"

शिकारी साल भर उक़ाब को मांस खिलाता रहा। एक दिन वह शिकारी से बोला :

"मुझे आज़ाद कर दो, मैं उड़कर देखता हूं मेरे पंख उग आए हैं या नहीं।"

शिकारी ने उक़ाब को आज़ाद कर दिया। उक़ाब उड़ने लगा। उड़ता रहा, उड़ता रहा, जब दोपहर हुई तो वापस लौटकर शिकारी से बोला :

"भाई, अभी कसर रह गई है।"

शिकारी ने उक़ाब की बात मान ली और फिर से साल भर तक उक़ाब मांस खाता रहा। साल भर बाद वह फिर से उड़ा... सारा दिन उड़ता रहा, शाम होने पर वापस लौटकर शिकारी से बोला :

"भाई, अभी वह बात नहीं आई है।"

शिकारी ने उक़ाब को फिर से साल भर तक मांस खिलाया और फिर उक़ाब उड़ा। वह खूब ऊपर तक उड़ा, बदलों तक उड़ा। नीचे उतरने के बाद शिकारी से बोला :

"धन्यवाद, नेकदिल नौजवान! तुमने मुझे नया जीवन दिया है। तुम अब आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ!"

शिकारी ने पूछा :

"लेकिन क्यों?"

उक़ाब ने कहा :

"बैठो तो!"

शिकारी उक़ाब की पीठ पर बैठ गया।

उक़ाब उसे उड़ाकर बादलों के पार ले गया और वहां से उसने शिकारी को गिरा दिया। शिकारी हवा में कलाबाज़ी खाने लगा, ज़रा-सी देर में उक़ाब ने उसे बीच में ही पकड़ लिया। उक़ाब ने शिकारी से कहा :

"कहो, कैसा लगा?"

"बस, जान ही निकल गई थी!"

उक़ाब बोला :

"यही हाल मेरा भी हुआ था जब तुमने पहली बार निशाना साधा था। आओ, फिर बैठ जाओ।"

स्पष्ट है कि शिकारी उक़ाब की पीठ पर नहीं बैठना चाहता था, लेकिन कोई चारा न था। शिकारी फिर बैठ गया।

उक़ाब उसे फिर बादलों के पार ले गया और वहां से उसे छोड़ दिया। लेकिन ज़मीन पर गिरने से पहले उसने शिकारी को लपककर पकड़ लिया। फिर उक़ाब ने पूछा :

"कहो, कैसा लगा?"

"ऐसा लगा जैसे मेरी सारी हड्डियां ही बिखर गई हों।"

तब उक़ाब ने कहा :

"यही हाल मेरा भी हुआ था जब तुमने दूसरी बार निशाना साधा था। आओ, मेरी पीठ पर फिर बैठ जाओ।"

शिकारी उक़ाब की पीठ पर बैठ गया।

उक़ाब उसे फिर उड़ाकर बादलों के पार ले गया और वहां से उसने उसे छोड़ दिया। ज़मीन पर गिरने से ऐन पहले उसे पकड़ लिया।

"कहो, इस बार कैसा लगा?"

"ऐसा लगा जैसे मैं मर ही चुका होऊं।"

तब उक़ाब ने कहा :

"यही हालत मेरी भी हुई थी, जब तुमने तीसरी बार निशाना साधा था। ख़ैर, अब हमारा हिसाब चुकता हो गया। आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ। अब तुम्हें उड़ाकर अपने राज में ले चलता हूं।"

वे दोनों उड़ते रहे, उड़ते रहे, सफ़र तय करते रहे और आख़िर उक़ाब के चाचा के घर पहुंचे। उक़ाब ने कहा :

"जब तुम चाचाजी के पास जाओगे, तब तुमसे पूछेंगे : 'तुमने कहीं मेरे भतीजे को तो नहीं देखा है?' तब तुम कहना : 'जादुई अण्डा दीजिए, उसे अभी हाज़िर किए देता हूं'।"

शिकारी घर पहुंचा, उक़ाब के चाचा ने उससे पूछा :

"तुम यहां अपनी मर्ज़ी से आए हो या किसी और की मर्ज़ी से?"

उसने उत्तर दिया:

"बहादुर कज़्ज़ाक जहां भी जाता है, अपनी मर्ज़ी से जाता है।"

इस पर उक़ाब के चाचा ने पूछा:

"तुमने कहीं मेरे भतीजे को देखा है? मेरा भतीजा लड़ने गया था, तब से उसका कोई हाल नहीं मिला। तीन गर्मियां बीत गईं। जाने वह कहां होगा?"

शिकारी बोला:

"जादुई अण्डा दीजिए, अभी हाज़िर किए देता हूं।"

लेकिन वह बोला:

"जादुई अण्डा सौंप देने से तो अच्छा है कि वह कभी न मिले।"

शिकारी वहां से निराश होकर लौट आया। उक़ाब ने कहा:

"चलो, अब आगे उड़ चलें।"

वे उड़ते रहे, उड़ते रहे और अन्त में उक़ाब के भाई के पास पहुंचे। यहां भी वही हुआ, जो चाचा के यहां हुआ था। शिकारी को जादुई अण्डा नहीं मिला। फिर वे वहां से उड़कर पिता के घर पहुंचे। उक़ाब ने शिकारी से कहा:

"घर में जाओ, जब वे मेरे बारे में पूछें, तब तुम कहना: 'जादुई अण्डा दीजिए, उसे अभी हाज़िर किए देता हूं'।"

शिकारी उक़ाब के घर पहुंचा। वहां माता-पिता ने पूछा:

"तुम अपनी मर्ज़ी से आए हो या किसी और की मर्ज़ी से?"

"बहादुर कज़्ज़ाक जहां भी जाता है, अपनी मर्ज़ी से जाता है।"

उन्होंने फिर सवाल किया:

"तुमने मेरे बेटे को तो नहीं देखा है? युद्ध में गया था, चौथी गर्मी बीत गई है। पर मेरे बेटे का कहीं पता नहीं लगा। शायद रणक्षेत्र में शहीद हो गया है?"

इस पर शिकारी बोला:

"जादुई अण्डा दीजिए, अभी उसे हाज़िर किए देता हूं।"

उक़ाब के पिता ने कहा:

"भाई, तुम अण्डे का क्या करोगे? चाहो तो मैं तुम्हें धन-दौलत से मालामाल कर दूं।"

लेकिन उसने कहा:

"मुझे दौलत नहीं चाहिए, जादुई अण्डा दीजिए!"

"अच्छा, तो मैं तुम्हें जादुई अण्डा दे दूंगा। बस, तुम मेरे बेटे को जल्दी से यहां ले आओ!"

शिकारी ने उक़ाब को लाकर पिता के सामने हाज़िर कर दिया। माता-पिता अपने बिछुड़े बेटे को पाकर खूब खुश हुए। पिता ने शिकारी को जादुई अण्डा देते हुए कहा:

"देखो, इसे संभालकर ले जाना। कहीं रास्ते में फट न जाए। घर पहुंचने पर एक बाड़ा बनवाना और तभी इसे फोड़ना।"

शिकारी घर की राह चल पड़ा। वह चलता रहा, चलता रहा कि अचानक उसे प्यास लगी। पास ही उसे एक कुआं दिखा। उसने कुएं से पानी खींचा और जैसे ही पानी पीने चला कि जादुई अण्डा बाल्टी से टकराकर फूट गया। और उस अण्डे के भीतर से मवेशी निकल-निकलकर बाहर आने लगे। वह इन मवेशियों को हंकाता हुआ कभी इस ओर तो कभी उस ओर भगाता रहा, लेकिन उन्हें क़ाबू में न कर पाया। सारे के सारे मवेशी छितर-बितर हो गए। बेचारा सिर पकड़कर बैठ गया, चीखता-चिल्लाता रहा पर सब बेकार। अचानक एक अजदहा उधर आया। वह बोला:

"अगर मैं सारे मवेशियों को फिर से अण्डे के भीतर हांक दूं तो तुम मुझे क्या दोगे?"

शिकारी ने पूछा:

"लेकिन तुम्हें क्या चाहिए?"

वह बोला:

"तुम मुझे वह दोगे जो तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर में आया है?"

शिकारी ने कहा:

"हां, दूंगा।"

अजदहे ने सारे के सारे मवेशियों को हांककर अण्डे की भीतर बन्द कर दिया। फिर उसने अण्डे को अच्छी तरह चिपकाकर शिकारी को दे दिया।

वह जादुई अण्डा लेकर घर पहुंचा। और देखता क्या है कि उसके घर बेटा हुआ है। शिकारी ने सिर पीट लिया:

"ओह, मेरे बेटे! मैंने तो तुम्हें अजदहे को दे डाला है!"

पति-पत्नी बहुत दुखी हुए। फिर आंसू पोंछकर बोले:

"खैर, अब क्या किया जाए? रोने-पीटने से क्या होगा? किसी तरह जीना ही होगा।"

शिकारी ने एक बड़ा-सा बाड़ा बनवाया, बाड़े के अन्दर अण्डा फोड़ा गया। अण्डा फोड़ते ही बाड़े भर में मवेशी ही मवेशी भर गए। शिकारी खूब धनवान हो गया।

ज़िन्दगी के दिन कटते रहे, कटते रहे... इधर बेटा बड़ा हो गया। एक दिन वह बोला:

"पिताजी, आपने मुझे अजदहे को दे दिया है। अब मैं उसके पास ही जाता हूं – जो होगा देखा जाएगा।"

और शिकारी का बेटा अजदहे के यहां चला आया। लड़के को देखते ही अजदहा बोला:

"आओ, तीन काम कर लाओ। अगर काम कर लिए तो घर जाने दूंगा। नहीं तो तुम्हें खा जाऊंगा!"

अजदहे के घर के पास एक लम्बा-चौड़ा घास का मैदान था। दूर-दूर तक नज़र दौड़ाओ पर उसका ओर-छोर न मिलता था। अजदहे ने पहला काम उसे सौंपते हुए कहा:

"रात भर में इस घास के मैदान को साफ़ करके इसमें हल चलाओ, गेहूं बोने के बाद फ़सल उगाओ, उसे काटो और गेहूं का अंबार लगाओ। फिर इसी गेहूं से मेरे लिए पावरोटी भी पकाओ। सुबह जब मैं सोकर उठूं, तो पावरोटी नाश्ते के लिए तैयार मिले!"

वह बांका जवान चक्कर में पड़ गया – एक रात में इत्ता बड़ा काम। वह सिर

झुकाए अपनी राह चला जा रहा था। कहीं थोड़ी दूर पर पत्थर का एक स्तंभ था और इस स्तंभ में अजदहे की लड़की चुनी हुई थी। स्तंभ से सिर टिकाकर नौजवान रोने लगा। स्तंभ के अंदर से लड़की ने पूछा :

"क्यों रो रहे हो?"

लड़के ने कहा :

"रोऊं क्यों न? अजदहे ने ऐसा काम बताया है, जिसे मैं उमर भर में कभी न कर पाऊंगा, एक रात की तो बात दूर रही।"

लड़की ने फिर पूछा :

"लेकिन उसने तुम्हें कौन-सा काम बताया है?"

नवयुवक ने सब विस्तार से कह सुनाया। तब लड़की बोली :

"तुम्हारा यह काम एक शर्त पर ही कर सकती हूं। तुम्हें मुझसे शादी करनी होगी! बोलो, मंजूर है?"

लड़के ने कहा :

"हां, मंजूर है।"

अजदहे की लड़की ने कहा :

"तो जाओ, सो जाओ, कल जरा जल्दी उठ जाना—पावरोटी लेकर दे देना।"

फिर क्या था? घास के मैदान में जाकर उसने सीटी बजाई और लो, मैदान में दबादब जुताई, बुआई होने लगी—सुबह होते न होते उसने नई फ़सल के गेहूं से बढ़िया पावरोटी बनाकर तैयार कर दी। नवयुवक उसे लेकर अजदहे के यहां पहुंचा। पावरोटी उसने मेज़ पर रख दी।

अजदहे की नींद खुली तो वह हैरान रह गया। सामने मैदान में गेहूं का अंबार लगा हुआ था। तब वह बोला :

"तो तुमने पहला काम पूरा कर लिया। अब मैं दूसरा काम बतलाता हूं। वह जो पहाड़ है, उसे खोद डालो ताकि द्नेपर नदी वहां से बहने लगे। द्नेपर के किनारे अनाज रखने के लिए गोदाम बना दो जिससे कि जहाज यहां आकर लंगर डाल सकें और गेहूं बेचा जा सके। सुबह जब मैं उठूं तो सब कुछ तैयार हो।"

लड़का फिर पत्थर के स्तंभ के पास आकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। अजदहे की बेटी ने फिर पूछा:

"क्यों रो रहे हो?"

लड़के ने फिर अपनी व्यथा सुना दी, अजदहे ने जो कहा था वह सब बतला दिया।

अजदहे की बेटी बोली:

"जाओ, सो जाओ। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

उसने ज़ोर से सीटी बजाई और देखते ही देखते पहाड़ फट गया, द्नेपर नदी कल-कल करती हुई वहां पर बहने लगी। नदी के किनारे अनाज के गोदाम बनाए जाने लगे... तब उसने आकर लड़के को जगाया, ताकि वह जहाज़ से आनेवाले सौदागरों के हाथ गेहूं बेच सके।

अजदहा सोकर उठा। उसने आश्चर्य से मुंह फाड़ लिया। नौजवान से जो-जो कहा गया था, वह सब उसने कर डाला था।

तब अजदहे ने तीसरा काम करने के लिए कहा:

"जाओ, अब तुम सुनहरा खरगोश पकड़ो और सुबह होते ही मेरे घर ले आओ!"

वह फिर उस स्तंभ के पास पहुंचा और फूट-फूटकर रोने लगा। अजदहे की बेटी ने लड़के से पूछा:

"इस बार तुम्हें कौन-सा काम करना है?"

वह बोला:

"अब मुझे सुनहरा खरगोश पकड़ना है।"

तब अजदहे की बेटी ने कहा:

"यह काम आसान नहीं! कौन जाने उसे कैसे पकड़ना है? खैर, चलो, उस चट्टान की ओर चलते हैं।"

जब वे चट्टान के पास पहुंचे तो अजदहे की बेटी ने कहा:

"तुम मांद के मुंह पर खड़े हो जाओ। मैं उसे खदेड़ूंगी, तुम उसे पकड़ना। हां, चौकस रहना: जो कोई भी मांद से बाहर आए, उसे तुरन्त पकड़ लेना–

वही सुनहरा खरगोश होगा!"

अजदहे की बेटी अंदर जाकर खदेड़ने लगी। देखते ही देखते उस मांद के अन्दर से फनफनाता हुआ काला सांप निकल भागा। लेकिन लड़के ने उसे नहीं पकड़ा। लड़की जब मांद से निकलकर बाहर आई तो उसने पूछा:

"कहो, कोई बाहर नहीं निकला?"

"नहीं। एक काला सांप रेंगता हुआ निकला था और मैंने डरकर उसे छोड़ दिया।"

लड़की ने कहा:

"वाह रे तुम! वही सुनहरा खरगोश था! लेकिन इस बार ध्यान रखना। मैं जाकर उसे हांकती हूं। जैसे ही कोई मांद से निकले और यह कहे कि यहां सुनहरा खरगोश नहीं है, तुम उसका यक़ीन मत करना, बस, झट से उसे दबोच लेना।" अजदहे की बेटी अंदर जाकर फिर खदेड़ने लगी। अचानक वहां से एक बिल्कुल ही जर्जर बुढ़िया निकलती दिखलाई दी। बुढ़िया ने उस लड़के से पूछा:

"बेटे, यहां तुम किसका इन्तज़ार कर रहे हो?"

वह बोला:

"सुनहरे खरगोश का।"

बुढ़िया ने उत्तर दिया:

"सुनहरा खरगोश और वह भी यहां? बेकार अपना वक़्त बरबाद कर रहे हो।"

यह कहने के बाद बुढ़िया आगे बढ़ गई। इधर अजदहे की लड़की आकर पूछने लगी:

"क्या खरगोश नहीं निकला? यहां से कोई नहीं गुज़रा?"

लड़के ने कहा:

"हां, एक बुढ़िया दिखलाई पड़ी थी, उसने पूछा कि मैं यहां क्या ढूंढ़ रहा हूं। मैंने कहा – सुनहरा खरगोश, लेकिन बुढ़िया ने कहा – यहां तो वह नहीं है, और तब मैंने उसे जाने दिया।"

"हाय रे, यह तुमने क्या किया! अरे, यह सुनहरा खरगोश ही था। अब

वह तुम्हें कहीं न मिल पाएगा। सुनो, ऐसा करते हैं: मैं अपना रूप बदलकर सुनहरा ख़रगोश बन जाऊंगी और तुम मुझे ले जाकर मेज़ पर छोड़ देना। हां, ध्यान रखना कि तुम मुझे अजदहे के हाथों में न सौंप देना, नहीं तो वह रहस्य जान लेगा और तब हम दोनों की शामत आ जाएगी। वह हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।"

अजदहे की बेटी झट से सुनहरा ख़रगोश बन गई। लड़के ने उसे लाकर अजदहे के यहां मेज़ पर रख दिया और बोला:

"लो, यह रहा सुनहरा ख़रगोश। अब मैं यहां से जाता हूं।"

"ठीक है, तुम अब जा सकते हो!"

नवयुवक वहां से चल पड़ा।

जैसे ही अजदहा घर से बाहर निकला, सुनहरा ख़रगोश फिर सुन्दरी बन गया और वह दौड़कर नवयुवक के पास जा पहुंची। अब वे जान हथेली पर रखकर भागने लगे। इस बीच अजदहा समझ गया कि यह सुनहरा ख़रगोश नक़ली था, उसकी बेटी ने ही रूप बदल लिया था। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने बेटे छोटे अजदहे को पीछा करने भेजा ताकि वह लड़की को पकड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। भगोड़ों को भी ख़तरे का आभास हो गया – धरती थर-थर कांपने लगी थी... तब युवती बोली:

"हमारा पीछा हो रहा है। मैं गेहूं की फ़सल बन जाती हूं और तुम बूढ़े बाबा। जब तुमसे पूछा जाए: 'तुमने किसी युवक-युवती को इधर से गुज़रते तो नहीं देखा है?' तब तुम कहना कि जब इस फ़सल की बुआई हो रही थी, तब एक युवक-युवती इधर से गुज़रे थे।"

लो, छोटा अजदहा वहां आ धमका। बूढ़े से पूछने लगा:

"क्यों, बाबा, तुमने किसी युवक-युवती को इधर से गुज़रते तो नहीं देखा?"

बूढ़े ने जवाब दिया:

"हां, देखा है।"

तब छोटे अजदहे ने पूछा:

"कब देखा था?"

बूढ़े ने कहा:

"तब, जब खेत में गेहूं की बुआई हो रही थी।"

छोटा अजदहा बोला:

"अरे, बाबा, गेहूं की फ़सल तो काटने का वक़्त आ गया है, पर वे दोनों तो अभी कल ही भागे हैं।"

यह कहते हुए छोटा अजदहा वापस लौट गया। उधर अजदहे की बेटी ने फिर से मनुष्य का रूप धारण कर लिया और बूढ़ा बाबा ग़ायब होकर एक हट्टा-कट्टा नौजवान बन गया। युवक-युवती फिर से भागने लगे।

छोटा अजदहा घर लौट आया। तब अजदहे ने पूछा:

"कहो, उनको नहीं पकड़ पाए? रास्ते में कोई नहीं मिला?"

बेटा बोला:

"हां, मिला तो था। एक बूढ़ा खेत की रखवाली कर रहा था। मैंने पास जाकर पूछा कि उसने किसी युवक-युवती को तो नहीं देखा है, शायद यहां नज़दीक से गुज़रे हों। लेकिन उसने कहा: 'हां, वे इधर आए थे, लेकिन उन दिनों जब गेहूं बोया जा रहा था। पर अब तो वह फ़सल काटने लायक़ हो गई है।' यह सुनते ही मैं वापस चला आया।"

तब अजदहे ने कहा:

"अरे, यह तूने क्या किया? वे लोग वहीं पर मौजूद थे! जल्दी उनका पीछा करो!"

छोटा अजदहा फिर से उड़ चला। धरती दहल उठी। उन दोनों ने यह भांप लिया कि अब खैरियत नहीं। झट से लड़की ने कहा:

"मैं अपना रूप बदलकर पुराना क़िला बन जाती हूं और तुम सैनिक। जब छोटा अजदहा तुमसे पूछे: 'तुमने अमुक व्यक्तियों को देखा है?' तब तुम कहना: 'हां, तब देखा था जब यह क़िला बन रहा था'।"

छोटा अजदहा उस सैनिक के पास आया और पूछने लगा:

"सैनिक, क्या तुमने एक नौजवान जोड़े को इधर से गुज़रते हुए देखा है?"

"हां, तब देखा था जब यह क़िला बन रहा था।"

इस पर छोटा अजदहा बोला:

"खूब अक़्ल पाई है तूने! अरे, वे तो कल ही घर से भागे हैं और यह क़िला तो जाने कब बना था।"

यह कहकर बेटा अजदहा वापस लौट गया और बाप से बोला:

"एक क़िले के पास मैंने एक सैनिक देखा। मैंने उससे पूछा तो यह पता चला कि वे दोनों वहां से तब गुज़रे थे, जब क़िला बन रहा था। और क़िला न जाने कब बना था, जबकि वे तो कल ही ग़ायब हुए हैं।"

तब अजदहे ने कहा:

"अरे, बुद्धू, तूने उस सैनिक को मारकर उस क़िले को क्यों नहीं ढहा डाला? ये दोनों वही लोग थे। अब मुझे खुद उनकी खबर लेने के लिए जाना होगा।"

अजदहा हवा की चाल से उड़ चला। धरती दहल उठी, तपने लगी और वे दोनों समझ गए कि इस बार बड़ा अजदहा उनका पीछा कर रहा है।

तब लड़की ने लड़के से कहा:

"अब हम बेमौत मारे गए। अब मेरा बाप अजदहा खुद भागता-चला आ रहा है। चलो, मैं तुम्हें नदी बना देती हूं और खुद कवाई मछली बन जाऊंगी।"

अजदहा दौड़कर वहां पहुंचा और नदी से बोला:

"तो कहो? तुम दोनों भाग निकले?"

फिर क्या था? देखते ही देखते अजदहे ने बड़े-बड़े जबड़ेवाले पाइक मच्छ का रूप धारण कर लिया और कवाई मछली का पीछा करने लगा। लेकिन जैसे ही वह कवाई पर झपटने लगता, वह घूमकर अपने नुकीले डैने उसकी ओर कर देती, सो वह उसे दबोच न पाता। बड़ी देर तक वह कवाई का पीछा करता रहा लेकिन उसे पकड़ न पाया। तब उसने समूची नदी पी जाने का निर्णय किया। वह नदी का पानी पीता गया, पीता गया और इतना ज़्यादा पी गया कि... उसका पेट ही फट गया।

तब उस लड़की ने, जिसने मछली का रूप धारण कर लिया था, नदी से कहा:

"अब डरने की कोई बात नहीं। चलो, तुम्हारे माता-पिता के यहां चलते

हैं। बस, इतना ध्यान रखना: घर में पहुंचकर सबसे गले मिलना सिर्फ़ भतीजे से गले न मिलना, क्योंकि उसे गले लगाते ही तुम मुझको भूल जाओगे।"

युवक अपने घर पहुंचा, सबसे गले मिला और असमंजस में पड़ गया: "आखिर अपने भतीजे से क्यों न मिला जाए? लोग बुरा मानेंगे।" उसने आगे बढ़कर उस लड़के को गले लगा लिया। भतीजे से गले मिलते ही वह सुन्दरी को भूल गया।

थोड़ा समय बीता या ज्यादा – यह तो नहीं मालूम, लेकिन एक दिन युवक ने शादी करने का निर्णय किया। उसे एक अच्छी-सी लड़की बतलाई गई। उस लड़की को तो वह कभी का भूल चुका था, जिसने उसे अजदहे से बचाया था। इस तरह एक दूसरी लड़की के साथ शादी तय कर दी गई।

विवाह से पूर्व एक शाम को गांव की सभी लड़कियों को वर के घर मिठाइयां बनाने और गीत गाने का न्योता दिया गया। उस लड़की को भी बुलाया गया, जिसके साथ वह अजदहे के यहां से भागा था, हालांकि गांव में कोई नहीं जानता था कि यह लड़की कौन है और कहां से आई है। सब मिलकर मिठाइयां बनाने और गीत गाने लगीं। उस लड़की ने गुंधे मैदे का एक कबूतर और एक कबूतरनी बनाकर उसे ऊपर की ओर उछाल दिया। वे जीवित होकर उड़ने लगे। कबूतरनी गुटरगूं करते हुए बोली:

"कबूतर, कबूतर! क्या तुम भूल गए कि मैंने तुम्हारे लिए घास का मैदान साफ़ कर गेहूं बोया था और उस गेहूं के आटे से मैंने पावरोटी पकाई थी, ताकि तुम अजदहे को ले जाकर दे सको?"

कबूतर ने उत्तर दिया:

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

उसने फिर पूछा:

"तुम यह भी भूल गए कि कैसे मैंने पहाड़ हटाया था, और द्नेपर का रुख मोड़ा था ताकि नदी पर व्यापारियों के जहाज़ आएं और तुम उन्हें गेहूं बेच सको?"

लेकिन कबूतर ने उत्तर दिया:

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

फिर कबूतरनी ने कहा:

"तुम यह भी भूल बैठे कि हम लोग कैसे सुनहरा खरगोश पकड़ने गए थे? तुम मुझे भुला बैठे?"

कबूतर ने फिर वही दोहराया:

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

तब बांके युवक को उस सुंदरी का ध्यान आया। दोनों की धूम-धाम से शादी हो गई। और वे अब तक खुशी-खुशी जिन्दगी के दिन बिता रहे हैं।

चरवाहा

यह कहानी पुराने जमाने की है। कहीं एक किशोर चरवाहा रहता था। भेड़ें चराना, दीन-दुनिया से बेखबर और मस्त रहना – यही उसका काम था। एक बार आसमान से एक पत्थर आ गिरा। पत्थर भी खूब बड़ा और भारी-भरकम था, यही कोई चार मन का रहा होगा। चरवाहा इस पत्थर से मन बहलाया करता था। कभी उसे अपने कोड़े से बांध लेता, कभी उसे हवा में खूब ऊपर उछाल देता और खुद सारे दिन के लिए सोने चला जाता। जब सोकर उठता तो देखता कि पत्थर अभी हवा में उड़ रहा है और जैसे ही वह गिरता, जमीन के भीतर तक धंस जाता। मां उसे डांटती-फटकारती :

"कैसा मूरख है रे, तू? इत्ते बड़े पत्थर से खिलवाड़ करता है! नाभ खिसक जाएगी।"

जबकि उसे खरोंच तक न आती।

एक बार उस राजा पर संकट आया, जिसके राज्य में चरवाहा रहता था – एक बहुत बड़ा अजदहा वहां आ पहुंचा। बारह-बारह मन के पत्थर लेकर वह अपने लिए एक महल बनाने लगा। और तुर्रा यह कि राजा अपनी बेटी उसे सौंप दे।

राजा भयभीत हो गया। उसने सारे राज्य में अपने हरकारे भेजे और डुग्गी

पिटवाई कि ऐसा कोई सूरमा भी है, जो उस दैत्य अजदहे को पराजित कर सके, उसकी चुनौती का मुंहतोड़ जवाब दे सके। बड़ी छानबीन की गई पर ऐसा पराक्रमी योद्धा न मिल सका। लेकिन इसी दौरान यह खबर चरवाहे तक पहुंची। जब उसने सुना तो डींग मारने लगा:

"मैंने तो उस अजदहे को अपने कोड़े की एक फटकार से मार डाला होता।"

शायद उसने मज़ाक़ में ही ऐसा कहा हो, लेकिन यह खबर उस राजा तक पहुंची और राजा ने उसे तुरन्त बुला भेजा। चरवाहे को राजा के सामने हाज़िर किया गया। राजा ने उसे ग़ौर से देखा। अरे, यह तो बहुत छोटा है! बोला:

"तुम तो बहुत छोटे हो!"

यह सच है कि चरवाहा अभी किशोर ही था। लेकिन उसने जवाब दिया:

"आप फ़िक्र न करें।"

राजा ने चरवाहे की मदद के लिए पूरी दो रेजिमेंटें दे दीं। चरवाहा उन सैनिकों के पास आकर इस तरह आदेश देने लगा जैसे बीस बरस से फ़ौज में रहा हो। ऐसे अनोखे सेनापति को देखते ही राजा ने आश्चर्य से कहा:

"बहुत खूब!"

सिपाहियों को लेकर चरवाहा अजदहे का सामना करने चल दिया। उसके महल से थोड़ी दूर पर वे ठहर गए। चरवाहे ने अपने सैनिकों को वहीं छोड़ दिया और बोला:

"देखो, जब अजदहे के महल से धुआं निकले तो समझना कि मैंने उसे मार डाला। और अगर लपटें निकलें तो मुझे मरा समझ लेना।"

चल पड़ा वह नौजवान अकेला। सैनिकों को वहीं पर छोड़ गया था। वह अजदहा भी इतना शक्तिशाली था कि अपने आसपास किसी को फटकने न देता था। बस, एक सांस में उसे मार डालता था। चरवाहे को देखते ही अजदहे ने आग-सी तपती सांस छोड़ी। लेकिन वह टस से मस न हुआ।

"यहां आने की वजह बताओ! दोस्ती करने आए हो या दुश्मनी?"

"दोस्ती करने नहीं, युद्ध के लिए ललकारने आया हूं," चरवाहे ने कहा।

"जाओ, अभी तीन साल तक और खेलो-खाओ, तब मेरा मुक़ाबला करना," अजदहे ने कहा।

"नहीं, फ़ैसला इसी क्षण होना है।"

"लेकिन तुम मेरा मुक़ाबला कैसे करोगे?"

"यह देखो, इस कोड़े से।"

उसका कोड़ा भी ऐसा-वैसा न था। समझो पूरे सांड़ की खाल से बना था और उसके सिरे पर पत्थर बंधा हुआ था।

"तो चलो, करो अपना वार!" अजदहे ने कहा।

"नहीं, पहले तुम वार करो!"

अजदहे के पास एक बारह हाथ लम्बी बड़ी मज़बूत तलवार थी, लोहे की या फ़ौलाद की। उसने पूरे ज़ोर से चरवाहे पर वार किया और लो, तलवार टुकड़े-टुकड़े हो गई!

"संभलो! अब मैं वार करता हूं!"

यह कहते ही चरवाहे ने अपने कोड़े से ऐसा प्रहार किया कि अजदहा एक ही वार में लम्बा हो गया और उसके महल की चिमनी से धुआं उठने लगा।

उसके सैनिक खुशियां मनाने लगे, विजय-ध्वनि होने लगी, गीत गाए जाने लगे। खुद राजा ने उस नवयुवक की अगवानी की और उसे आदर-सत्कार के साथ अपने महल में ले गया। राजा ने अपनी बेटी की शादी चरवाहे के साथ कर दी और उनके लिए एक महल बनवा दिया। शादी के बाद चरवाहा और राजा की बेटी उस महल में रहने लगे।

लेकिन बात यहीं खत्म न हुई। दूसरे राजाओं में कानाफूसी शुरू हो गई: "राजा ने अपनी बेटी चरवाहे के साथ ब्याह दी!" राजा को भी अफ़सोस होने लगा। सो उसने एक शाही फ़रमान राज के कोने-कोने में भिजवा दिया कि क्या हमारे राज में कोई ऐसा सूरमा भी है जो चरवाहे को पराजित कर सके? ऐसे

दो आदमी मिले। राजा ने उन्हें चरवाहे के पास लड़ने के लिए भेज दिया। चरवाहा अपने महल में बैठा किताब पढ़ रहा था और भांप गया था कि उससे लड़ने आ रहे हैं।

उधर वे दोनों चरवाहे के पास आ पहुंचे। उसने उनसे पूछा:

"कहो, बांके जवानो, लड़ने आए हो या दोस्ती करने?"

"बेशक, लड़ने!"

"तो चलो, प्रहार करो!" चरवाहे ने कहा।

फिर क्या था? उनमें से एक सूरमा ने बाएं कन्धे की ओर से प्रहार किया – तलवार टूटकर खण्ड-खण्ड हो गई। और दूसरे ने दाईं ओर से तिरछा वार किया, सिर्फ़ क़मीज़ ही फटकर रह गई। तब चरवाहे की बारी आई, उसने उन दोनों को पकड़कर ऐसी ज़ोर से दबाया कि उनकी हड्डी-पसली चूर-चूर हो गई। तब उसने उन हड्डियों को समेटकर मुट्ठी में दबाया और क्रोध से तमतमाते हुए राजा के सामने पहुंचकर बोला:

"कहो, यह देख रहे हो? अब तुम्हारा भी यही हाल होगा!"

यह सुनते ही राजा सिर पर पांव रखकर भागा। और उस वक़्त से अब तक वहां का राजपाट चरवाहा संभाल रहा है।

खलड़ीउधेड़ किरील

बहुत पुराने ज़माने की बात है। कीयेव नगर में एक राजा राज करता था। नगर से थोड़ी दूर पर एक विशालकाय अजदहा रहता था। इस ख़ूंख़ार अजदहे ने सारे राज्य में आतंक फैला रखा था। अजदहा हर साल एक युवक या युवती की बलि लेता था। एक बार ख़ुद राजकुमारी की बारी आई। राजा करता भी तो क्या? आख़िर नगरवासियों ने भी तो अपने प्रियजनों का बिछोह सहा है – उसे भी वैसा ही करना पड़ा। राजा ने अपनी बेटी को अजदहे के पास भेज दिया।

और राजकुमारी भी ग़ज़ब की सुन्दरी थी। ऐसी रूपवती कि उसके रूप का बखान न कहकर सुनाया जा सके, न लिखकर रचा जा सके।

उस सुन्दर राजकुमारी को देखते ही अजदहा मुग्ध हो गया।

एक दिन राजकुमारी ने अजदहे के प्रति प्रेम प्रदर्शित करते हुए पूछा :

"इस दुनिया में क्या कोई ऐसा भी इनसान है, जो तुम्हारी ताक़त को चुनौती दे सके?"

"हां, एक आदमी है," अजदहे ने कहा। "वह कीयेव में द्नेपर नदी के तट पर रहता है। आदमी भी ग़ज़ब का है। वह अपनी झोंपड़ी गरमाने के लिए जैसे ही आग जलाता है, वैसे ही धुएं का बादल आसमान को ढंक लेता है। और
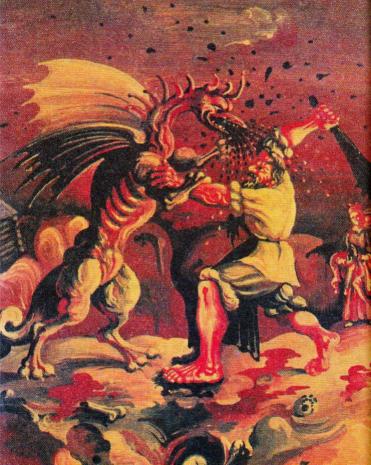
जब नदी पर खाल भिगोने के लिए जाता है, तो एक नहीं, बारह-बारह खालें मज़े से उठाकर ले जाता है। वे खालें दनेपर के जल में पानी सोखकर खूब भारी हो जाती है। मैं उन्हें पकड़ लेता हूं – लेकिन उस मरदूद को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता: खालें खींचकर निकालता है तो साथ में मुझे भी घसीटने लगता है। बस इसी आदमी से मैं डरता हूं।"

राजकुमारी उधेड़-बुन में पड़ गई। सोचने लगी कि किस तरह यह ख़बर अपने घर भेजी जाए और कैसे जान बचे। उसके आसपास कोई था ही नहीं, सिर्फ़ एक कबूतर था। जब वह कीयेव में पिता के यहां हंसी-खुशी के दिन गुज़ार रही थी, तब उसने यह कबूतर पाला था। इस तरह वह देर तक खोई-खोई, विचारसागर में डूबती-उतराती रही। फिर उसने पिता को पत्र लिखा:

"पिताजी, कीयेव नगर में किरील नाम का एक आदमी रहता है, उसे लोग खलड़ीउधेड़ भी कहते हैं। कृपया मेरी आपबीती उस तक पहुंचाकर, उस आदमी को किसी तरह समझा-बुझाकर राज़ी कर लें, ताकि वह ख़ौफ़नाक अजदहे से टक्कर ले। क्या वह मुझ बदनसीब को दैत्य अजदहे के चंगुल से निकालना और इस नारकीय गुलामी से छुटकारा दिलाना नहीं चाहेगा? पिताजी, उससे विनयपूर्वक कह-सुनकर या उपहारों की भेंट देकर, जैसे भी वह मेरी मदद के लिए राजी हो, उसे अवश्य मना लीजिए। पर इस बात का ज़रूर ख्याल रखिएगा कि कोई उल्टी-सीधी बात कहकर उसे नाराज़ न कर दें। मैं ईश्वर से सदैव उसकी और अपनी ख़ैर मनाती रहूंगी।"

इस प्रकार राजकुमारी ने चिट्ठी लिखकर कबूतर के परों के नीचे बांध दी और उसे खिड़की में से उड़ा दिया। कबूतर बादलों के पार उड़ गया और राजकुमारी के घर पर आ पहुंचा। जब बच्चों ने उस कबूतर को देखा तो लगे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने:

"पिताजी, पिताजी, वह देखिए, बहन के पास से कबूतर आया है!"

राजा उसे देखते ही खुश हुआ। लेकिन तुरन्त उदास होकर विचारों में खो गया। दुखी मन से सोचने लगा: "क्या हत्यारा अजदहा मेरी बेटी को खा गया?" फिर उसने कबूतर को अपनी ओर बुलाया और देखा कि उसके पंखों के नीचे

एक पत्र बंधा हुआ है। राजा अपनी बेटी का पत्र पढ़ने लगा। पत्र पढ़कर राजा ने झटपट अपने राज्य के सभी बुजुर्गों को बुलाया और पूछा :

"क्या हमारे राज्य में किरील खलड़ीउधेड़ नाम का कोई आदमी रहता है?"

"हां, महाराज! वह द्नेपर नदी के किनारे रहता है।"

"क्या उपाय किया जाए कि वह हमारे काम आ सके?"

उन सबने मिलकर आपस में राय-मशविरा किया। उसके बाद उनमें से सबसे अधिक उम्र और अनुभव के धनी वृद्धजनों को उसके पास भेजा गया। वे उसकी झोंपड़ी पर पहुंचे, उन्होंने झोंपड़ी का दरवाज़ा खोला। उन सबका भय से बुरा हाल हो रहा था। उन्होंने देखा कि खलड़ीउधेड़ उनकी ओर पीठ किए ज़मीन पर बैठा है और हाथ से ही बारह खालें मुलायम करता जा रहा है। उन्होंने उसे बुलाने के लिए खखारा।

खलड़ीउधेड़ डर गया और बारह खालें एकसाथ चर्र-चर्र करके फट गईं। खलड़ीउधेड़ ने मुड़कर देखा, वे लोग सिर झुकाकर बोले : "भाई, राजा ने हम लोगों को तुम्हारे पास विनयपूर्वक यह सन्देश देकर भेजा है कि ..." और खलड़ीउधेड़ न उनकी ओर देखता है और न उनकी बात ही सुनता है। उसे बड़ा गुस्सा आ रहा था कि उनकी वजह से ही उसका इतना नुक़सान हो गया है।

वे वृद्धजन फिर उससे विनयपूर्वक कहने लगे और घुटनों के बल खड़े होकर मिन्नतें करने और गिड़गिड़ाने लगे ... लेकिन खलड़ीउधेड़ उनकी कोई भी बात सुनने को तैयार न था! वे लोग उसे देर तक मनाते, गिड़गिड़ाते रहे और जब उसने उनकी एक न सुनी तो मायूस होकर वापस चले गए।

अब क्या किया जाए? राजा उदास था और वृद्धजनों को अपनी हार का पछतावा था।

इसके बाद यह तय किया गया कि नौजवानों को उसके पास भेजा जाए।

नौजवान उसकी झोंपड़ी पर पहुंचे। और लगे प्रार्थना करने, गिड़गिड़ाने। पर खलड़ीउधेड़ मुंह लटकाए, नाक सुड़सुड़ाता हुआ बैठा रहा, सुनी अनसुनी करता रहा। उसे उन खालों के फट जाने का इतना अफ़सोस जो था!

अब राजा ने नन्हे-मुन्ने बच्चों को उसे मनाने के लिए भेजा। नन्हे-मुन्ने बच्चे

आए और प्रार्थना करने लगे। फिर जैसे ही वे घुटनों के बल खड़े होकर रोने लगे, तो खलड़ीउधेड़ द्रवित हो उठा। वह खुद भी रोने लगा। फिर आंसू पोंछते हुए बोला :

"अरे, नन्हे-मुन्नो! अब चुप हो जाओ। तुम्हारी खुशी के लिए मैं अजदहे से लड़ूंगा!"

खलड़ीउधेड़ राजा के पास आकर बोला :

"मुझे बारह पीपे राल और बारह ठेले सन के दिलाओ।"

राजा ने राल और सन मंगवा दिया। खलड़ीउधेड़ ने सन को अपने शरीर पर खूब अच्छी तरह लपेटा और फिर सारी की सारी राल से सन को खूब भिगो लिया। फिर उसने चार मन की तलवार उठाई और खूंखार अजदहे से भिड़ने चल पड़ा।

"किरील, तुम मुझसे लड़ने आए हो या दोस्ती करने?" अजदहे ने उससे पूछा।

"तुझसे दोस्ती? तुझसे लड़ने आया हूं, दुष्ट!"

फिर क्या था? दोनों भिड़ गए – धरती कांपने लगी। अजदहा लपककर अपने दांतों से झपट्टा मारता और किरील के शरीर से राल का टुकड़ा उधेड़ लेता, फिर से लपककर झपट्टा मारता और सन का टुकड़ा नोच लेता। किरील अपनी तलवार से अजदहे पर ऐसा वार करता कि उसे जमीन में धंसा देता। अजदहे के अंग-अंग से लपटें निकल रही थीं, वह तीखी गर्मी से झुलसा जा रहा था। वह जल्दी से द्नेपर नदी में प्यास बुझाने और ठण्डा होने के लिए भागा। इस बीच किरील खलड़ीउधेड़ ने फिर से अपने शरीर पर ढेर सारा सन लपेटा और उस पर भली-भांति राल पोत दी।

दुष्ट अजदहा नदी से निकलकर खलड़ीउधेड़ की ओर लपका तो उसने तलवार का ज़ोरदार वार किया। अजदहा थोड़ा हटकर फिर लपका, इस बार किरील ने संभलकर तलवार से लगातार कई वार किए।

किरील अजगर के दांत खट्टे करता जा रहा था, वह बिना रुके प्रहार पर प्रहार करता रहा, धुएं का बादल-सा उठने लगा, चिनगारियां उड़ने लगीं। किरील

ने दुष्ट अजदहे को जलाकर खाक कर डाला, जैसे लोहार अपनी भट्ठी में लोहा गला डालता है। दैत्याकार अजदहा मुश्किल से सांस ले रहा था। उसके नीचे धरती तक कराह रही थी, आततायी के भार से दबी जा रही थी।

टीलों पर जमा लोग बुत बने यह युद्ध देख रहे थे, हाथ बांधे प्रतीक्षा कर रहे थे कि अब आगे क्या होगा? तभी अजदहे ने तड़फड़ाकर दम तोड़ दिया। लोग किरील की वाहवाही करने लगे।

सो, किरील ने अजदहे को मार डाला और राजा की बेटी को दैत्य के चंगुल से छुड़ाकर पिता को सौंप दिया।

ओह

यह कहानी बड़ी पुरानी है। तब शायद हमारे बाप-दादे भी पैदा न हुए थे। उन दिनों एक ग़रीब आदमी किसी तरह दो जून की रोटी जुटाकर अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। पति-पत्नी के अलावा उस परिवार में एक बेटा भी था, पर ऐसा निखट्टू कि किसी को नसीब न हो। वह दिन-दिन भर बेकार वक़्त गंवाया करता और अलावघर पर बैठा रहता। बूढ़ी मां उसे खाना देती तो मज़े से खा लेता और खाना न मिलता तो भूखा ही बैठा रहता। घर के किसी काम से उसे मतलब न था। बस, मक्खियां मारा करता था।

मां-बाप बेटे के लिए परेशान रहते। एक दिन बूढ़ा पिता बोला:

"बेटे, तेरी काहिली से जी भर चुका है। आखिर हम क्या करें? तू हमारी छाती का कांटा बन गया है! सभी बच्चे मां-बाप की मदद करते हैं, उन्हें सहारा देते हैं और तू मटरगश्ती करता है!"

बूढ़े मां-बाप देर तक दुखी होते रहे, रोते-कलपते रहे। पर कोई लाभ न हुआ। एक दिन बुढ़िया ने कहा:
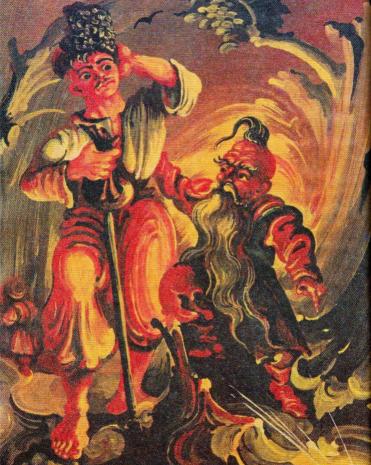
"बाबा, ज़रा औलाद का ख्याल करो। लड़का सयाना हो गया है, लेकिन पूरा काठ का उल्लू है। इसे कोई काम सीखने के लिए ही भेज दो – शायद पराये लोग ही इसे कुछ सिखा दें।"

पिता ने बेटे को खेत में काम करने भेज दिया। लड़का वहां तीन दिन रहा और भाग खड़ा हुआ। फिर अलावघर पर बैठकी जमाकर मक्खियां मारने लगा।

बूढ़े पिता ने पुत्र को डांटा-फटकारा और उसे दर्ज़ी के यहां काम सीखने के लिए भेज दिया। वह दर्ज़ी के यहां से भी भाग निकला। उसे लोहार और मोची का काम सीखने के लिए भी भेजा गया – कोई असर न पड़ा। लड़का फिर भागकर घर आ गया और अपने पुराने अड्डे अलावघर पर जा बैठा। पिता पुत्र से परेशान हो गया। आखिर अब क्या किया जाए? बूढ़े ने एक युक्ति सोची और लड़के से बोला:

"ठहर, बच्चू, अब तुझे काले कोसों भेजे देता हूं, वहां दूसरे राजा का राज है। देखता हूं कि अब तू कैसे भागता है?"

बाप-बेटे चल पड़े, थोड़ी देर चले या देर तक चलते रहे – यह तो नहीं मालूम। पर चलते-चलते वे एक काले बियावान जंगल में जा पहुंचे। वे थककर चूर हो गए थे। अचानक उन्होंने एक जला हुआ ठूंठ देखा। बूढ़ा सुस्ताने के लिए उस ठूंठ पर बैठ गया और बोला:

"ओह, मैं आज कितना थक गया हूं!"

इतना कहते ही न जाने कहां से एक छोटा-सा बूढ़ा, जिसके शरीर पर बेपनाह झुर्रियां थीं और घुटनों तक लम्बी, हरी दाढ़ी हवा में फहरा रही थी, वहां आकर बोला:

"बोलो, क्या चाहिए?"

बूढ़ा हैरान था: यह अनोखा आदमी कहां से आ टपका, और बोला:

"मैंने तो तुम्हें नहीं बुलाया।"

"कैसे नहीं बुलाया? ठूंठ पर बैठते ही तुमने कहा था: 'ओह!'"

"हां, मैं थक गया था। थकान के कारण मेरे मुंह से 'ओह!' निकल पड़ा। और, भाई, तुम कौन हो?"

"मैं जंगल का राजा ओह हूं। तुम कहां जा रहे हो?"

"लड़के को काम से लगाने या कोई हुनर सिखाने के लिए परदेश ले जा रहा हूं। शायद भले लोगों की संगत में अक़्ल की चार बातें सीख जाए, अपने गांव में तो पड़ा-पड़ा बरबाद ही होगा। जहां-जहां इसे काम पर लगाया – भागकर चला आया। बस, दिन-दिन भर अलावघर पर बैठा रहता है!"

"चलो, इसे यहीं छोड़ दो, मेरे यहां काम करेगा और शऊर की बातें सीखेगा। बस, शर्त यह है कि तुम साल भर बाद अपना बेटा लेने आओगे और उसे पहचानकर ही घर ले जाओगे – अगर न पहचान पाए तो उसे मेरे यहां एक साल और बिताना होगा। बोलो, मंजूर है?"

"हां, मंजूर है," बूढ़े बाप ने कहा।

उसके बाद उन्होंने एक दूसरे के हाथ पर हाथ मारा। और इस तरह शर्त पक्की करके बूढ़े बाप ने बेटे को ओह के पास छोड़ा और अपने घर की ओर चल पड़ा।

ओह उस लड़के को एक दूसरी दुनिया में ले आया। ज़मीन के नीचे पाताल लोक में ओह का हरा घर था। उस घर में सब कुछ हरे रंग का था: घर की दीवारें, रसोई, पलंग, फ़र्नीचर! यहां तक कि ओह की पत्नी और बच्चे भी हरे रंग के थे। और घर के नौकर-चाकर भी इसी रंग के थे। ओह ने लड़के को बैठाया और खाना लाने के लिए कहा। उसे वहां हरे रंग की रोटी और हरा शोरबा खिलाया गया। और जब उसने पानी पिया तो वह भी हरा था।

"अच्छा, अब काम का वक़्त हो गया है। जाओ, जंगल से लकड़ी काट लाओ।"

लड़का चल पड़ा। लकड़ी काटना तो दूर रहा, घास पर लेटकर खर्राटे भरने लगा। ओह् जंगल में पहुंचा, वहां उसने लड़के को सोता हुआ पाया। ओह् ने तुरन्त अपने नौकर को आवाज़ दी और लकड़ियां इकट्ठी करने के लिए कहा, फिर उसने लड़के को लकड़ी के ढेर पर लिटाकर नीचे से आग लगा दी।

वह युवक जलकर भस्म हो गया! ओह् ने उस राख को हवा में उड़ा दिया, मगर एक कोयला राख से गिर गया। ओह् ने उस कोयले पर प्राण-जल छिड़क दिया। पानी छिड़कते ही वह लड़का ऐसे उठ बैठा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

ओह् ने उसे फिर से लकड़ी काटकर लाने के लिए भेजा। वह फिर सो गया। ओह् ने पहले की तरह आग जलाने का हुक्म दिया। जब आग दहकने लगी तो फिर उसे आग में झोंक दिया, राख हवा में छितरा दी और कोयले पर प्राण-जल छिड़क दिया। युवक जीवित हो गया और एक ऐसा नौजवान बनकर निकला कि उसे देखते ही बनता था! ओह् ने उसे तीसरी बार भी जलाकर राख कर दिया, फिर से कोयले पर प्राण-जल छिड़का – इस तरह एक निखट्टू लड़का एक सुडौल, कर्मवीर नौजवान बन गया। वह भी ऐसा, जिसके बारे में न सोचा गया, न अनुमान ही लगाया गया, सिर्फ़ परीकथाओं में ही ऐसे नायकों के रूप-गुण का बखान किया जाता है!

इस तरह वह युवक साल भर तक ओह् के घर में रहा। उधर पिता अपना बेटा वापस लेने चल पड़ा। जंगल में उसी जले हुए ठूंठ पर बैठकर बोला:

"ओह्!"

ओह् उस ठूंठ के नीचे से बाहर निकल आया:

"नमस्ते, दादा।"

"नमस्ते, ओह। मैं बेटे को लेने आया हूं।"

"आओ, पहचानकर बेटे को ले जाओ! यदि उसे न पहचान पाए तो तुम्हारा बेटा मेरे यहां एक साल और काम करेगा।"

वे दोनों हरे घर में पहुंचे। ओह ने एक थैला बाजरा बिखरा दिया, देखते ही देखते गौरैयों का झुंड बाजरे पर टूट पड़ा।

"जाओ, अपने बेटे को पहचान लो!"

बूढ़ा बाप अपने बेटे को ढूंढ़ने लगा। सभी चिड़ियां तो एक जैसी थीं। वह बेटे को न पहचान पाया।

"अब तुम घर जाओ," ओह ने कहा। "अभी साल भर तक तुम्हारा बेटा यहीं रहेगा।"

दूसरा साल आया। बूढ़ा ओह से मिलने चल पड़ा। जंगल मे आकर उसी ठूंठ पर बैठ गया:

"ओह!"

यह सुनते ही ओह ठूंठ के नीचे से बाहर निकल आया। "आओ, अपने बेटे को पहचान लो।" यह कहकर ओह उस बूढ़े को अपने बाड़े में ले आया। वहां सिर्फ़ भेड़ें ही भेड़ें थीं। बूढ़ा बाप फिर अपने बेटे को न पहचान पाया।

"अब तुम घर जाओ," ओह ने कहा। "एक साल और तुम्हारा बेटा यहीं रहेगा।"

बूढ़ा बाप दुखी हो गया। लेकिन करता भी तो क्या? शर्त ही ऐसी थी। बूढ़ा घर लौट गया।

तीसरा साल आया। बूढ़ा फिर अपने बेटे को लेने चल पड़ा। वह जंगल से होकर चला जा रहा था कि लगा एक मक्खी उसके कान के पास भनभना रही है।

बूढ़े ने हाथ हिलाकर उसे भगा दिया। लेकिन थोड़ी देर में फिर वही मक्खी

बूढ़े के कान पर आ बैठी। अचानक बूढ़े के कान में सुनाई दिया :

"पिताजी, मैं आपका पुत्र हूं। ओह ने मुझे तरह-तरह की विद्याएं सिखला दी हैं। मैं यहां नज़र बचाकर आपकी मदद करने आया हूं। वह आपको फिर मुझे पहचानने के लिए कहेगा और बहुत-से कबूतरों को चारा चुगने के लिए छोड़ देगा। आप किसी कबूतर को न चुनिएगा, सिर्फ़ उसी कबूतर को पहचानकर चुन लीजिएगा, जो छाती में सिर गड़ाए बैठा होगा और दाना नहीं चुग रहा होगा।"

बूढ़ा खुश होकर बेटे से थोड़ी देर और बतियाना चाहता था, लेकिन मक्खी भनभनाते हुए कहीं दूर उड़ गई।

बूढ़ा जले हुए ठूंठ के पास पहुंचकर बोला :

"ओह!"

ठूंठ के नीचे से ओह निकलकर बाहर आया और उसे पाताल लोक में ले गया। उसे अपने हरे घर में ले आया, ज़मीन पर दाना छितरा दिया और सारे कबूतर उसे जल्दी-जल्दी चुगने लगे। वे सारे के सारे एक जैसे लग रहे थे।

"हां, तो अपने बेटे को पहचान लो।"

सभी कबूतर दाना चुगने में लगे हुए थे, लेकिन एक कबूतर अपने पंख फुलाए, छाती में सिर गड़ाए बैठा था और दाना नहीं चुग रहा था।

"वह रहा मेरा बेटा!"

"अच्छा, तो तुम बेटे को पहचान ही गए। अब तुम इसे ले जा सकते हो।"

ओह ने उस कबूतर को पकड़कर अपनी बाईं तरफ़ उड़ा दिया। और वह पलक झपकते ही ऐसा फुर्तीला नौजवान बन गया कि बस देखते ही रह जाओ। बूढ़ा पिता खुशी से उछल पड़ा, बेटे को उसने सीने से लगाया, प्यार से चूमा और आंख भरकर देखा। बेटा भी इतने दिन बाद पिता से मिलकर बहुत खुश हुआ।

पिता-पुत्र घर की राह चल पड़े। बेटा अपने बारे में वह सब बतला रहा था कि कैसे उसने तीन वर्ष ओह के यहां बिताए।

"बेटे, तुम तीन साल तक ओह के यहां रहे, लेकिन कोई कमाई नहीं हुई, हम लोग वैसे ही ग़रीब बने रह गए। लेकिन मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं। ग़नीमत है कि तू सही-सलामत वहां से लौट आया!"

"पिताजी, अफ़सोस मत करिए, सब ठीक हो जाएगा।"

पिता-पुत्र चले जा रहे थे कि अचानक उन्हें जंगल में शिकारी मिले, दूसरे इलाक़े के ज़मींदार लोग लोमड़ी का शिकार करने आए थे। लड़के ने झट से शिकारी कुत्ते का भेस बना लिया और पिता से बोला:

"ज़मींदार लोग तुमसे शिकारी कुत्ते का सौदा करेंगे। तीन सौ रूबल में बेच देना, बस पट्टा न बेचना।"

यह कहकर वह खुद एक लोमड़ी के पीछे भागा और उसे दबोच लिया। शिकारी बूढ़े के पास झट से पहुंचे। उनमें से एक ने कहा:

"बाबा, यह तुम्हारा कुत्ता है?"

"हां, मेरा है।"

"लाजवाब कुत्ता है! उसे बेच डालो!"

"खरीद लो!"

"कितने का बेचोगे?"

"तीन सौ रूबल में, लेकिन पट्टे के बिना दूंगा।"

"कुत्ते के पट्टे में कौन-सी खास बात है? इससे बढ़िया पट्टा खरीद लेंगे। लो, रक़म संभालो और कुत्ते को हमारे हवाले करो।"

शिकारी ने कुत्ता खरीदा और उसे लोमड़ी को पकड़ने के लिए छोड़ दिया। लेकिन वह लोमड़ी का शिकार करने के बजाय जंगल में कहीं ग़ायब हो गया। कुत्ता फिर से युवक बन गया और अपने पिता के पास आ पहुंचा।

पिता ने कहा :

"बेटा, सिर्फ़ तीन सौ रूबल में क्या होगा? यह तो ऊंट के मुंह में जीरा है। घर-गृहस्थी और झोंपड़ी की मरम्मत में ही खर्च हो जाएगा। लेकिन गुज़ारा करने के लिए क्या बचा?"

"पिताजी, चिन्ता न कीजिए। रास्ते में अभी चिड़ीमार मिलेंगे, बटेर का शिकार कर रहे होंगे। मैं बाज़ बन जाऊंगा और तुम मुझे उनके हाथ तीन सौ रूबल में बेच देना, बस टोपी मत बेचना।"

वे मैदान पार करते हुए अपने घर चले जा रहे थे, इतने में चिड़ीमार आ पहुंचे। उन्होंने बूढ़े के हाथ में एक बाज़ देखा। एक चिड़ीमार ने कहा :

"बाबा, इस बाज़ को बेच डालो।"

"खरीद लो।"

"कितने का बेचोगे?"

"तीन सौ रूबल में, लेकिन टोपी के बिना दूंगा।"

"हमें तुम्हारी टोपी नहीं चाहिए! हम इसके लिए मखमल की टोपी बनवा देंगे।"

बूढ़े ने तीन सौ रूबल लेकर बाज़ को बेच दिया। और फिर घर की राह चल पड़ा।

जैसे ही चिड़ीमार-शिकारियों ने उस बाज़ को बटेरों पर छोड़ा, वह सीधे जंगल में उड़ गया और नीचे ज़मीन से टकराते ही फिर बांका जवान बनकर झट से अपने पिता के पास पहुंच गया।

पिता ने कहा :

"हां, अब थोड़ा गुज़र-बसर हो जाएगा!"

"पिताजी, अभी तो कसर रह गई है। जब हम लोग मेले के क़रीब पहुंचेंगे, मैं घोड़ा बन जाऊंगा और तुम मुझे वहां बेच देना। तुम्हें एक हज़ार रूबल मिल

जाएंगे। बस, मेरी लगाम मत बेचना।"

वे दोनों मेले में आ पहुंचे। बेटे ने घोड़े का रूप धारण कर लिया। वह भी ऐसा चंचल और फुर्तीला कि क़रीब आने में डर लगे। बूढ़ा मुश्किल से उसकी लगाम संभाल रहा था, लगता था अभी हाथ से छूटी कि छूटी। घोड़ा सुमों से ज़मीन खोद रहा था। देखते ही देखते उस घोड़े के इर्द-गिर्द खरीदार और तमाशबीन इकट्ठे होने लगे। घोड़े का मोल-भाव शुरू हो गया।

"लगाम के बिना घोड़े की क़ीमत एक हज़ार रूबल है। इससे कम में न बेचूं-गा।"

"घोड़े की लगाम हमारे किस काम की! हम ज़री के कामवाली बढ़िया लगाम खरीद लेंगे," सौदागरों ने कहा।

सौदागर पांच सौ रूबल देने लगे। लेकिन बूढ़ा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। अचानक एक काना जिप्सी वहां आकर मोल-भाव करने लगा:

"बोलो, इस घोड़े का क्या लोगे?"

"लगाम के बिना एक हज़ार रूबल।"

"बाप रे, इत्ता महंगा और वह भी लगाम के बिना। यह लो पांच सौ रूबल, लगाम समेत घोड़ा बेच दो।"

"रहने दो, हाथ न लगाना।"

"अच्छा, चलो, छह सौ रूबल ले लो।"

वह जिप्सी मोल-भाव करता हुआ अपनी क़ीमत पर अड़ा रहा। जब सौदा न पटा तो बोला:

"अच्छा, बाबा, लो, एक हज़ार रूबल ही ले लो, बस लगाम के साथ दे दे।"

"नहीं, लगाम मेरी है!"

"भले आदमी, कहीं तुमने बिना लगाम का घोड़ा भी बिकते देखा है? लगाम

के बिना मैं उसे तुम्हारे हाथ से लूंगा कैसे?"

"घोड़ा खरीदो या न खरीदो – मैं इसकी लगाम न बेचूंगा।"

"अरे बाबा, लगाम के पांच रूबल और दे दूंगा। लाओ, घोड़ा मुझे दो!"

बूढ़े ने सोचा: "दो कौड़ी की लगाम के पांच रूबल मिल रहे हैं। आखिर उसे बेचने में हर्ज ही क्या है?"

बूढ़े ने लगाम समेत घोड़ा बेच दिया।

दोनों ने हाथ पर हाथ मारकर सौदे की बात पक्की की। बूढ़ा घर की ओर चल पड़ा। उधर जिप्सी खरीदार उचककर घोड़े पर सवार हो गया। लेकिन यह जिप्सी कोई और नहीं, खुद ओह था। उसने लड़के को चकमा दे ही दिया! घोड़ा तीर की तरह उड़ चला। वह पेड़ों से ऊपर और बादलों से नीचे, हवा से बातें करता उड़ता चला जा रहा था। वह ओह को गिराने की कोशिशें कर रहा था, लेकिन उसे गिरा न पाया।

और लो, वे सीधे धरती के नीचे, पाताल लोक में जा पहुंचे। घोड़े को पेड़ से बांधकर ओह घर के अंदर गया।

"यह लो, शैतान के बच्चे को पकड़ लाया," ओह ने अपनी पत्नी से कहा। "शाम को इसे ले जाकर पानी पिला लाना।"

शाम को ओह की पत्नी घोड़े को पानी पिलाने नदी पर ले गई। पानी पीते-पीते घोड़ा गहरे पानी में उतरने लगा। ओह की पत्नी उसके पीछे-पीछे चली। उसे बुरा-भला कह रही थी लेकिन वह था कि गहरे पानी में उतरता ही जा रहा था। अचानक घोड़े ने सिर झटका, लगाम औरत के हाथ से छूट गई। घोड़ा पानी में कूदा और कवई मछली बन गया। ओह की पत्नी चिल्लाने लगी, ओह झपटकर भागता हुआ आया, पलक झपकते पाइक मच्छ बन गया और लगा कवई का पीछा करने। पाइक ने कहा:

"प्यारी कवई, प्यारी कवई, जरा सिर इधर तो घुमाओ, आओ, दो बातें कर लें।"

लेकिन कवई ने उत्तर दिया:

"मुझसे बात करनी है, तो बोलती जाओ, मुझे तो सिर घुमाए बिना ही सुनाई दे रहा है।"

बहुत देर तक पाइक मच्छ कवई का पीछा करता रहा। कवई मछली थक गई। तभी उसने नदी के किनारे एक शाही स्नानागार देखा। राजा की बेटी वहां नहाने आई थी। कवई अब रक्तमणि जड़ी सोने की अंगूठी बन गई और राजकुमारी के पैर से जा टकराई। राजकुमारी ने अंगूठी देखी।

"अहा, कितनी सुन्दर अंगूठी है!" राजकुमारी ने उसे उठाकर अंगुली में पहन लिया।

घर लौटकर राजकुमारी ने अंगूठी की प्रशंसा करते हुए कहा:

"पिताजी, देखिए, मैंने कितनी सुन्दर अंगूठी पड़ी पाई है!"

राजा उस सुन्दर अंगूठी की कारीगरी और रक्तमणि देखकर मन ही मन बहुत खुश हुआ।

ओह् ने देखा कि कवई मछली अंगूठी बनकर राजमहल में पहुंच गई है। उसने भी आव देखा न ताव जौहरी का भेस बनाया और राजदरबार में जा पहुंचा:

"महाराजाधिराज की जय हो! गुस्ताखी माफ़ हो, हुजूर! मैं आपके दरबार में एक जरूरी काम से आया हूं। मेहरबानी करके राजकुमारी से कहकर मेरी अंगूठी वापस दिलवा दीजिए। मैं उसे अपने राजा के लिए ले जा रहा था कि वह अचानक नदी तट पर गिर गई। मुझे पता चला कि राजकुमारी को वह मिली है।"

राजा ने राजकुमारी को बुलवाया।

"बेटी, वह अंगूठी वापस कर दो। उसका मालिक लेने आया है।"

राजकुमारी रोने और पैर पटकने लगी :

"पिताजी, अंगूठी मैं नहीं दूंगी। इसे मुंह मांगी क़ीमत देकर खरीद लीजिए।"

ओह् भी हार माननेवाला न था। बोला :

"महाराज, अगर यह अंगूठी मैंने अपने राजा को न पहुंचाई, तो मैं ज़िंदा नहीं बचूंगा।"

राजा बेटी को मनाने लगा :

"दे दो, बेटी, क्यों हमारे कारण किसी को कष्ट पहुंचे।"

"अगर ऐसा है तो लो!" राजकुमारी ने कहा। "यह अंगूठी न तुम्हारी रहेगी और न मेरी!"

और उसने अंगूठी ज़मीन पर फेंक दी। अंगूठी गिरते ही मोती बन गई और ढेर सारे मोती चारों तरफ़ बिखर गए। लेकिन एक नन्हा-सा मोती लुढ़का और राजकुमारी के पास आकर उसके पैर तले दब गया। उधर ओह् हंस बनकर मोती चुगने लगा। बीन-बीनकर मोती चुगता रहा, चुगता रहा। इस तरह उसने सारे मोती चुग लिए। वह चुगे हुए मोतियों के कारण मुश्किल से चल पा रहा था। राजकुमारी के पैर तले दबा हुआ एक मोती उसकी नज़रों से बचा रह गया। वह मोती राजमहल के फ़र्श पर लुढ़का और लुढ़कता-लुढ़कता बाज़ बनकर हंस पर टूट पड़ा।

हंस का पेट वैसे ही फटा जा रहा था। वह जान बचाने के लिए उड़ न पाया। इधर बाज़ ने हंस पर अपनी पैनी चोंच से ताबड़तोड़ कई प्रहार किए। हंस का वहीं दम निकल गया। इस तरह ओह् के प्राण पखेरू उड़ गए। बाज़ धरती से टकराया और एक खूबसूरत नौजवान बन गया। पहली नज़र में ही राजकुमारी उसे अपना दिल दे बैठी, उसे प्यार करने लगी। वह अपने पिता से बोली :

"पिताजी, यह युवक ही मेरा भावी पति हो सकता है। मैं किसी और से शादी नहीं करूंगी।"

राजा तो नहीं चाहता था कि उसकी फूलों-सी सुकुमार बेटी की शादी एक मामूली युवक से हो। वह सोच में पड़ गया, लेकिन करता क्या! राजकुमारी के विवाह की बड़े धूम-धाम से तैयारियां होने लगीं। मेहमानों के लिए निमंत्रण भेजे गए। तरह-तरह के पकवान और सैकड़ों तरह के व्यंजन बनाकर तैयार किए गए। पेय की कमी न थी। राजकुमारी के विवाह की ऐसी दावत हुई कि लोग उसे बरसों तक याद करते रहे।

और नन्हे-मुन्नो, मैं भी उस दावत में मौजूद था। मैंने भी खूब छककर खाया। शहद और सोमरस तो इतना पिया कि मुंह में न समा रहा था। दाढ़ी पर बहने लगा। बहता रहा, बहता रहा और मेरी दाढ़ी उसी दिन से सफ़ेद हो गई।

लुढ़कनमटर

यह बात बहुत पुरानी है। किसी गांव में एक आदमी रहता था। उसके छह बेटे थे और एक बेटी। एक दिन बेटे खेत जोतने के लिए जाने लगे। उन्होंने अपनी बहन से खेत पर खाना पहुंचाने के लिए कहा।

"लेकिन तुम लोग खेत में किस जगह पर काम करोगे? मुझे तो मालूम नहीं," बहन ने पूछा।

भाइयों ने उत्तर दिया:

"ठीक है। हम अपने घर से खेत के उस छोर तक एक हलरेखा बना देंगे, जहां हम खेत जोतेंगे। तुम इस हलरेखा को देखती हुई चली आना।"

यह कहकर वे खेत की ओर चल दिए।

खेत के पास जंगल में एक भयानक अजदहा रहता था। उसने भाइयों द्वारा बनाई गई हलरेखा को मिटाकर अपने घर की तरफ़ जानेवाली एक नई हलरेखा बना दी। बहन अल्योन्का अपने भाइयों का खाना लेकर हलरेखा के सहारे चलती गई। चलते-चलते वह अजदहे के अहाते में पहुंच गई, वहां अजदहे ने उसे पकड़ लिया।

शाम होने पर छहों भाई अपने घर लौटे और मां से बोले:

"हम दिन भर हल चलाते रहे, खेत जोतते रहे और तुमने हमारे लिए खाना तक नहीं भेजा!"

"भेजा कैसे नहीं? तुम्हारा खाना लेकर अल्योन्का गई थी! मैं तो यह सोच रही थी कि वह तुम लोगों के साथ ही घर लौटेगी। कहीं मेरी बिटिया रास्ता तो नहीं भटक गई?"

"हम जाकर उसे ढूंढ़ लाते हैं," भाइयों ने मां से कहा।

इस प्रकार वे छहों भाई अजदहे की बनाई हलरेखा पर चलकर अजदहे के यहां पहुंच गए। उनकी बहन वहीं पर थी।

"मेरे प्यारे भाइयो, अभी अजदहा उड़ता आएगा। कहां छिपाऊं तुम्हें मैं? वह तो तुम्हें खा जाएगा!" बहन ने दुखी होकर कहा।

अभी यह बात खत्म भी न हो पाई थी कि फुफकारता हुआ अजदहा आ पहुंचा।

"यहां तो मानुष गन्ध आ रही है!" अजदहे ने फुफकारते हुए कहा। "क्यों रे, जवानो, दोस्ती करने आए हो या दुश्मनी?"

"दुश्मनी!" वे एक स्वर में चिल्लाए।

"तो फिर आओ, लोहे के खलिहान में ही फ़ैसला होगा!"

वे लोहे के खलिहान में पहुंच गए। लेकिन यह लड़ाई झटपट खत्म हो गई। अजगर के पहले ही वार में वे चारों खाने चित्त हो गए और फ़ौलादी खलिहान के फ़र्श में जा धंसे। अजदहे ने उन्हें बाहर निकाला तो उनका दम फूल रहा था। उनमें थोड़ी जान थी। अजदहे ने उन्हें एक काल-कोठरी में फेंक दिया।

माता-पिता अपने बेटों की वापसी का इन्तज़ार करते रहे, एक-एक पल उनकी बाट जोहते रहे। पर वे घर वापस न लौटे।

एक बार मां नदी पर कपड़े धोने के लिए गई। रास्ते में उसने एक नन्हे मटर के दाने को लुढ़कता हुआ देखा। उसने मटर के दाने को उठाकर खा लिया।

थोड़े समय बाद उनके घर में एक बेटा पैदा हुआ। माता-पिता ने बेटे का नाम रखा लुढ़कनमटर।

समय बीतता गया। बेटा बड़ा होने लगा। कम उम्र में ही वह खूब बड़ा हो गया।

एक दिन लुढ़कनमटर अपने पिता के साथ मिलकर कुआं खोद रहा था। पिता-पुत्र काफ़ी गहराई तक खोदते रहे, मेहनत करते रहे। अचानक बीच में एक भारी-भरकम चट्टान आ गई। पिता चट्टान को खोदने और उठाने में मदद लेने के लिए लोगों को बुलाने गए। लेकिन मददगारों के आने से पहले ही लुढ़कनमटर काम में जुट गया और उसने चट्टान को उठाकर बाहर फेंक दिया। लोगों ने वहां पहुंचकर देखा तो दंग रह गए। उसकी अपार शक्ति से डर गए और उन्होंने उसे मार डालने का निर्णय कर डाला। इस बीच लुढ़कनमटर ने एक और करिश्मा कर दिखाया। उसने चट्टान को उठाकर हवा में ऊपर उछाला और पलक झपकते ही हाथ पर रोक लिया। लोगों ने जब उसकी ताक़त का ऐसा चमत्कार देखा तो वे भाग खड़े हुए।

पिता-पुत्र फिर से ज़मीन खोदने लगे। वे लगातार खोदते चले जा रहे थे। अचानक उन्हें लोहे का एक बहुत बड़ा टुकड़ा मिला। लुढ़कनमटर ने उसे बाहर निकालकर छिपा दिया।

एक दिन लुढ़कनमटर ने अपने माता-पिता से पूछा:

"क्या मेरे कोई भाई-बहन नहीं थे?"

"बेटा, कभी तुम्हारी एक बहन थी और छह भाई। खूब हट्टे-कट्टे और जवान..." माता-पिता ने लुढ़कनमटर को सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"अच्छा, तो मैं उन्हें खोजकर लाता हूं," लुढ़कनमटर ने कहा।

माता-पिता ने अपने इस बेटे को बार-बार रुकने को कहा और मिन्नतें कीं।

"बेटे, तुम वहां मत जाओ। तुम्हारे भाई भी गए थे और वे छह के छह लौटकर नहीं आए। तुम तो बिल्कुल अकेले हो। तुम दुश्मन का मुक़ाबला कैसे कर सकोगे?"

"नहीं, मैं ज़रूर जाऊंगा! अपने भाई-बहन को क़ैद से छुड़ाकर लाऊंगा!"

उसने लोहे का वह टुकड़ा उठाया जो ज़मीन खोदते समय मिला था और उसे लेकर लोहार के यहां जा पहुंचा।

"मुझे खूब बड़ी तलवार बना दो," उसने लोहार से कहा।

लोहार ने खूब बड़ी और भारी-भरकम तलवार बना दी। वह इतनी वज़नी थी कि कई लोग उसे उठाकर लोहारखाने से बाहर लाए। लेकिन लुढ़कनमटर ने उसे सहज ही उठाया, उसकी मूठ पकड़कर हवा में लहराया और खूब ऊपर उछाल दिया। फिर पिता से बोला:

"मैं अब सोने जा रहा हूं। बारह दिन बाद जब तलवार उड़कर वापस आ जाए तब मुझे जगा देना।"

वह बारह दिन तक गहरी नींद सोता रहा। तेरहवें दिन वह तलवार सनसनाती हुई नीचे उतरती दिखलाई दी। पिता ने लुढ़कनमटर को जगाया। पुत्र ने नींद से जागते ही मुट्ठी ऊपर उठाई। तलवार उसकी मुट्ठी से टकराकर दो टुकड़े हो गई और ज़मीन पर गिर पड़ी।

"ऐसी तलवार भला किस काम आएगी? मैं अपनी बहन और भाइयों की खोज के लिए यह तलवार नहीं ले जा सकता। कोई दूसरी ही तलवार होनी चाहिए," लुढ़कनमटर ने कहा।

खण्डित तलवार लेकर वह फिर लोहार के पास जा पहुंचा।

"सुनो, इस टूटी तलवार से फिर एक नई तलवार बना दो, जो मेरे मन माफ़िक़ हो!"

लोहार ने और बड़ी तलवार बना दी। लुढ़कनमटर ने फिर उसे आकाश की ओर उछाला और पुनः बारह दिन के लिए गहरी नींद सो गया। तेरहवें दिन वह तलवार सनसनाती, आवाज़ करती नीचे की ओर उतरती दिखलाई दी। धरती थर-थर कांपने लगी। लुढ़कनमटर को जगाया गया, वह उछलकर खड़ा हो गया। उसने अपनी मुट्ठी ऊपर उठाई, तलवार उससे आ टकराई, मगर पहले की तरह टूटी नहीं, बस ज़रा-सी मुड़ ज़रूर गई।

"हां, यह तलवार मेरे काम की है। इसे साथ लेकर बहन-भाइयों को खोजने

जा सकता हूं। मां, रास्ते के लिए रोटियां बना दो और रस्क तैयार कर दो। मुझे झटपट यहां से चल देना होगा।"

उसने वह तलवार ली, रस्क रखकर अपने माता-पिता से विदा ली और निकल पड़ा।

वह अजदहे की बनी हलरेखा पर चल दिया जो तब तक काफ़ी मिट चुका था। चलता-चलता जंगल में जा पहुंचा। जंगल में काफ़ी देर तक चलता रहा, आगे बढ़ता रहा। इस तरह एक बहुत बड़े अहाते तक पहुंच गया। अहाता चहारदीवारी से घिरा हुआ था। उसे पार करके वह एक विशाल महल में जा पहुंचा। वहां उसे अजदहा तो नहीं मिला। पर बहन अल्योन्का से मुलाक़ात हो गई।

"नमस्ते, रूप की रानी!"

"नमस्ते, साहसी नौजवान! तुम यहां किसलिए आए हो? अजदहा अभी आकर तुम्हें खा जाएगा।"

"शायद न खा पाए! लेकिन यह तो बताओ कि तुम कौन हो?"

"मैं अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी। अजदहे ने मुझे क़ैद कर लिया। मेरे छह भाइयों ने मिलकर अजदहे का मुक़ाबला करना चाहा, मुझे क़ैद से छुड़ाने की कोशिश की। पर वे नाकामयाब रहे।"

"मगर वे हैं कहां?"

"अजदहे ने उन्हें काल-कोठरी में डाल रखा है। मैं तो यह भी नहीं जानती कि वे जिन्दा हैं या मर गए।"

"शायद मैं तुम्हें क़ैद से छुड़ा सकूं।" लुढ़कनमटर ने जवाब दिया।

"तुम्हारी बिसात क्या? जब मेरे छह भाई मुझे आज़ाद न करा पाए, मुझे अजदहे की क़ैद से न छुड़ा पाए, तो भला तुम अकेले उसका क्या मुक़ाबला कर पाओगे!"

"ऐसी भी क्या बात है?" लुढ़कनमटर ने उत्तर दिया।

वह खिड़की पर बैठकर अजदहे का इन्तज़ार करने लगा।

इसी वक्त अजदहा वापस लौटा। वह ज़ोर-ज़ोर से नाक सुड़सुड़ाता हुआ बोला :

"यहां तो मानुष गन्ध आ रही है!"

"बेशक तुम्हें मानुष गन्ध आ रही होगी – मैं जो यहां पर मौजूद हूं," लुढ़कनमटर ने कहा।

"अहा, तो तुम हो यहां! बोलो, तुम क्या चाहते हो, दुश्मनी या दोस्ती?"

"बेशक दुश्मनी! तुमसे तो लड़ने आया हूं। दोस्ती कैसी?" लुढ़कनमटर ने तपाक से जवाब दिया।

"तो फिर चलो लोहे के खलिहान में। अभी फ़ैसला हुआ जाता है।"

"चलो, चलते हैं!"

वे लोहे के खलिहान में जा पहुंचे।

"चलो, प्रहार करो!" अजदहे ने कहा।

"नहीं, पहल तुम्हें करनी है!" लुढ़कनमटर ने जवाब दिया।

अजदहे ने लुढ़कनमटर पर भरपूर वार किया। वह टखनों तक लोहे के खलिहान के फ़र्श में जा धंसा। लेकिन लुढ़कनमटर तुरन्त बाहर निकल आया। उसने अपनी तलवार लहराते हुए अजदहे पर जवाबी हमला किया। अजदहा घुटनों तक अंदर धंस गया। लोहे के फ़र्श से बाहर निकलकर अजदहे ने लुढ़कनमटर पर हमला किया और वह भी घुटनों तक फ़र्श में धंस गया। अब जो लुढ़कनमटर ने हमला किया तो अजदहा कमर तक फ़र्श में धंस गया। लुढ़कनमटर ने तीसरा प्राणघातक हमला किया और अजदहा वहीं का वहीं ढेर हो गया।

तब वह काल-कोठरी की ओर गया। काल-कोठरी गहरी और अन्धकारमय थी। उसने अपने भाइयों को वहां से बाहर निकाला। वे लोग मुश्किल से सांस ले पा रहे थे, अन्तिम घड़ियां गिन रहे थे। लुढ़कनमटर अपने छह भाइयों और बहन अल्योन्का को साथ लेकर घर को चल दिया। उसने सोने-चांदी से भरपूर उस ख़ज़ाने को भी अपने साथ समेट लिया जो अजदहे के घर में जमा था।

लुढ़कनमटर ने उन लोगों को यह नहीं बताया कि वह उनका ही सगा भाई है। वे कब तक चलते रहे, कितना लम्बा सफ़र तय करते रहे, यह कोई नहीं जानता। रास्ते में वे एक बलूत वृक्ष के नीचे आराम करने बैठे। लुढ़कनमटर अपने दुश्मन के साथ हुए युद्ध में थककर चूर हो चुका था। वह शीघ्र ही गहरी नींद सो गया। इस बीच उसके छहों भाइयों ने आपस में सलाह की :

"लोगों को जब यह पता चलेगा कि हम छहों मिलकर अजदहे को नहीं मार पाए और इसने अकेले ही उसे मार डाला, तो वे हमारी खिल्ली उड़ाएंगे और अजदहे का बेशक़ीमती खज़ाना भी यही हथिया लेगा।"

वे देर तक सोच-विचार करते रहे। आखिर उन्होंने फ़ैसला कर ही डाला : इस समय वह नींद में बेहोश था। हमें तुरन्त छाल की रस्सी बना लेनी चाहिए। फिर उसे बलूत वृक्ष से बांध देंगे। वह इसे तोड़कर भाग नहीं पाएगा। बस, इस तरह दरिंदे उसे खा जाएंगे। उन्होंने जो सोचा, वह कर भी डाला। वे सोते हुए लुढ़कनमटर को पेड़ के साथ बांधकर घर की ओर चल दिए।

लुढ़कनमटर गहरी नींद सोता रहा। वह इस क़दर बेखबर था कि उसे कुछ पता न चला। दिन भर सोया, रात भर सोया और जब नींद खुली तो खुद को पेड़ के साथ बंधा पाया। उसने जैसे ही एक झटका दिया, बलूत जड़ समेत उखड़ गया। बलूत वृक्ष को कन्धे पर उठाकर वह घर की तरफ़ चल दिया। झोंपड़ी के क़रीब पहुंचकर उसने अपने भाइयों को मां से यह पूछते हुए सुना :

"मां, क्या हमारा कोई और भी भाई हुआ था?"

"हां, यह सच है। मेरे उस बेटे का नाम लुढ़कनमटर है। वह ही तुम्हें क़ैद से छुड़ाने गया था।"

वे बोले :

"हम लोगों ने अपने भाई को ही बांध दिया! अभी जाकर उसे खोलना होगा।"

लेकिन लुढ़कनमटर ने बलूत वृक्ष को कन्धों से उठाकर झोंपड़ी पर पटक दिया – झोंपड़ी चकनाचूर होते-होते रह गई।

"संभालो अपना घर, लानत है तुम्हें!" उसने कहा। "अब मैं चला दुनिया का चक्कर लगाने।"

और तलवार कन्धे पर रखकर वह निकल पड़ा।

वह चलता गया, चलता गया। आखिर उसे दो पहाड़ दिखाई दिए। एक दाईं ओर, दूसरा बाईं ओर। उनके बीच एक आदमी अपने हाथ-पैर उन पर टिकाए खड़ा था और उन्हें अलग कर रहा था।

"नमस्ते!"

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"पर्वतों को खिसका रहा हूं ताकि रास्ता बनाया जा सके।"

"और तुम कहां जा रहे हो?"

"अपनी क़िस्मत आज़माने।"

"मेरा भी इरादा यही है! तुम्हारा नाम क्या है?"

"पर्वतपलट। और तुम्हारा?"

"लुढ़कनमटर। चलो, साथ-साथ चलते हैं!"

"चलो, चलते हैं।"

फिर क्या, वे साथ-साथ चल दिए। वे चलते रहे, चलते रहे कि अचानक उन्हें जंगल में एक आदमी दिखाई दिया। वह बलूत के पेड़ों को गाजर-मूली की तरह उखाड़ता चला जा रहा था। बस, हाथ हिलाता और पेड़ जड़ समेत उखड़कर ज़मीन पर गिर पड़ता।

"नमस्ते!"

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रह हो, भले आदमी?"

"पेड़ों को उखाड़ रहा हूं ताकि रास्ता बनाया जा सके।"

"और तुम जा कहां रहे हो?"

"अपनी क़िस्मत आज़माने।"

"हमारा भी इरादा यही है। भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"बलूतउखाड़। और तुम्हारे नाम?"

"लुढ़कनमटर और पर्वतपलट। चलो, हम साथ-साथ चलते हैं!"

"चलो, चलते हैं।"

वे तीनों साथ-साथ चलने लगे। चलते रहे, चलते रहे, अचानक उन्हें नदी किनारे खूब लम्बी-सी मूंछोंवाला एक आदमी खड़ा दिखाई दिया। जैसे ही वह अपनी मूंछ ऐंठता वैसे ही नदी की धारा दो हिस्सों में बंट जाती। नदी के बीचोंबीच पानी थम जाता, रास्ता बन जाता और इस रास्ते से होकर नदी को पार किया जा सकता था।

"नमस्ते!" तीनों ने एकसाथ कहा।

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"नदी पार जाने के लिए पानी को रोक रहा हूं।"

"तुम जा कहां रहे हो?"

"अपनी क़िस्मत आज़माने।"

"हमारा भी इरादा यही है। तुम्हारा नाम क्या है?"

"नदीपकड़। और तुम्हारे नाम?"

"लुढ़कनमटर, पर्वतपलट और बलूतउखाड़। चलो, हम साथ-साथ चलते हैं!"

"चलो, चलते हैं।"

वे चारों साथ-साथ चल दिए। रास्ता आसानी से तय होता रहा – पर्वतपलट मार्ग में आनेवाले पहाड़ों को एक तरफ़ खिसका देता, बलूतउखाड़ मिनटों में जंगल साफ़ करके रास्ता बनाता और नदीपकड़ रास्ते में पड़नेवाली नदी की धारा को रोककर बीच से रास्ता बना देता।

इस तरह रात-दिन चलते-चलते वे एक जंगल में पहुंचे। उन्होंने वहां पर एक झोंपड़ी देखी। जब वे अन्दर गए तो झोंपड़ी खाली थी।

"यहां रात बिताई जा सकती है," लुढ़कनमटर ने कहा।

रात भर वे झोंपड़ी में रहे। और अगले दिन सुबह लुढ़कनमटर ने कहा:

"पर्वतपलट, तुम यहां ठहरो, खाने का इन्तज़ाम करो और हम तीनों शिकार करने जा रहे हैं।"

फिर वे तीनों शिकार पर चले गए। पर्वतपलट ने खाना बनाया और उसके बाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया:

"दरवाज़ा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नहीं कि मैं दरवाज़ा खोलूं, खुद खोल ले!" पर्वतपलट ने लेटे ही लेटे जवाब दिया।

दरवाज़ा खुल गया। फिर वही आवाज़ सुनाई पड़ी:

"मुझे उठाओ, दहलीज़ को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नहीं, खुद ही दहलीज़ पार कर ले!" पर्वतपलट ने जवाब दिया।

तुरन्त एक छोटे-से बूढ़े ने दहलीज़ पार की। यह बूढ़ा था तो छोटा-सा, पर उसकी दाढ़ी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढ़ी दूर तक ज़मीन पर घिसटती चली जाती थी। इस बूढ़े ने पर्वतपलट के सिर पर हाथ मारा, उसके बालों की लट को पकड़ा और उसे दीवार में लगी खूंटी पर टांग दिया। इसके बाद वह खाने पर टूट पड़ा और जो कुछ बना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे भी सुड़क गया। इस तरह खा-पीकर चलता बना।

खूंटी पर लटका हुआ पर्वतपलट देर तक छटपटाता, हाथ-पांव मारता, छूटने की कोशिशें करता रहा। आखिर बालों की लट खोकर वह खुद को छुड़ा पाया, फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना बना भी न पाया था कि उसके साथी शिकार से लौट आए।

"अरे, अभी तक खाना नहीं बना?"

"मुझे नींद आ गई थी," पर्वतपलट ने जवाब दिया।

सबने खाना खाया और सो गए। अगले दिन सुबह लुढ़कनमटर ने कहा

"बलूतउखाड़, आज तुम घर पर रहोगे और हम तीनों शिकार पर जाएंगे।"

वे तीनों शिकार पर चले गए, इधर बलूतउखाड़ ने खाना बनाया, उसके बाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया:

"दरवाज़ा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नहीं कि मैं दरवाज़ा खोलूं!" बलूतउखाड़ ने जवाब दिया।

फिर वही आवाज़ सुनाई पड़ी:

"मुझे उठाओ, दहलीज़ को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नहीं, खुद ही दहलीज़ पार कर ले!"

एक छोटे-से बूढ़े ने दहलीज़ पार की। यह बूढ़ा था तो छोटा-सा, पर उसकी दाढ़ी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढ़ी दूर तक ज़मीन पर घिसटती चली जाती। इस छोटे-से बूढ़े ने बलूतउखाड़ के सिर पर हाथ मारा, उसके बालों की लट को पकड़ा और उसे दीवार में लगी खूंटी पर टांग दिया। इसके बाद वह खाने पर टूट पड़ा और जो कुछ बना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे सुड़क गया। इस तरह खा-पीकर चल दिया।

खूंटी पर लटका हुआ बलूतउखाड़ देर तक छटपटाता, हाथ-पांव मारता, छूटने की कोशिशें करता रहा। थोड़ी देर बाद खूंटी से छूटकर नीचे गिर पड़ा। वह फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना बना भी न पाया था कि उसके दोस्त शिकार से वापस लौट आए।

"अरे, अभी तक खाना नहीं बना?"

"मुझे नींद आ गई थी," बलूतउखाड़ ने जवाब दिया।

पर्वतपलट मौन खड़ा रहा – वह तो सारी असलियत को जानता था।

तीसरे दिन नदीपकड़ की बारी आई। उस रोज़ भी यही घटना घटी।

लुढ़कनमटर ने कहा:

"तुम सब खाना पकाने में बेहद सुस्त और निकम्मे हो! खैर, कल तुम लोग

शिकार खेलने जाओगे और घर का काम मैं देखूंगा।"

अगले दिन सुबह उसके तीनों दोस्त शिकार पर गए और लुढ़कनमटर झोंपड़ी पर रह गया। उसने खाना बनाकर रख दिया, उसके बाद ज़रा दम मारने के लिए लेट गया। अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया:

"दरवाज़ा खोलो!"

"ठहरो, अभी खोलता हूं," लुढ़कनमटर ने जवाब दिया।

दरवाज़ा खोला और देखा कि एक छोटा-सा बूढ़ा खड़ा है। यह बूढ़ा था तो खूब छोटा पर उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी जो ज़मीन पर घिसट रही थी।

"मुझे उठाओ, दहलीज़ को पार कराओ!" बूढ़े ने कहा।

लुढ़कनमटर उसे अन्दर ले गया। बूढ़ा उसकी ओर उछलने लगा। लुढ़कनमटर यह न समझ पाया कि आखिर माजरा क्या है?

"बता, तू क्या चाहता है?" लुढ़कनमटर ने पूछा।

"ठहर ज़रा, अभी बताए देता हूं," बूढ़े ने यह कहकर लुढ़कनमटर के सिर के बाल पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। वह उसके बाल पकड़ पाता कि इससे पहले ही लुढ़कनमटर ने गरजते हुए कहा:

"कौन हो तुम?" यह कहते हुए लुढ़कनमटर ने बूढ़े की दाढ़ी धर पकड़ी।

उसने झट से कुल्हाड़ी उठाई और बूढ़े को घसीटता हुआ एक बलूत वृक्ष के पास ले आया। बलूत के तने को दो भागों में चीर डाला और बूढ़े की लम्बी दाढ़ी उसमें अच्छी तरह फंसा दी ताकि वह उसे छुड़ाकर भाग न पाए।

"तू मेरे बाल पकड़ने चला था। अब तुझे मेरे लौटने तक यहीं बंधा रहना होगा।"

वह झोंपड़ी में लौट आया – उसके दोस्त वापस लौट चुके थे।

"क्या खाना तैयार है?" उन्होंने पूछा।

"वह तो बहुत पहले ही तैयार हो चुका है!" लुढ़कनमटर ने उत्तर दिया।

उन सबने खाना खाया। उसके बाद लुढ़कनमटर बोला :

"आओ, तुम लोगों को एक विचित्र तमाशा दिखाता हूं।"

लुढ़कनमटर अपने मित्रों को बलूत के पास ले गया। लेकिन वहां पर न बूढ़ा ही था और न बलूत का पेड़। ज़ाहिर है कि उसने बलूत को जड़ समेत उखाड़ा और उसे साथ लेकर कहीं ग़ायब हो गया था।

तब लुढ़कनमटर ने अपने दोस्तों को सारा क़िस्सा कह सुनाया। फिर उन सबने यह बता दिया कि किस तरह उस छोटे-से बूढ़े ने उनके बाल पकड़कर उन्हें खूंटी पर टांग दिया था।

"अगर वह ऐसा ही सूरमा है तो देर काहे की। उसकी खोज-खबर करनी ही होगी!" लुढ़कनमटर ने कहा।

बूढ़ा बलूत वृक्ष को जिस रास्ते घसीटता हुआ गुज़रा था, वहां-वहां ज़मीन पर बलूत के निशान बने हुए थे। चारों दोस्त इन निशानों को टोहते हुए चलते रहे।

और वे चलते-चलते एक बावली तक आ पहुंचे जो अथाह गहरी थी।

"पर्वतपलट, तुम इस बावली में उतर जाओ," लुढ़कनमटर ने कहा।

"भाई, मैं तो नहीं उतरता!"

"चलो, फिर तुम ही उतरो, बलूतउखाड़!"

लेकिन बलूतउखाड़ ही नहीं, नदीपकड़ के भी छक्के छूट गए।

"अगर ऐसी ही बात है तो मैं खुद ही नीचे उतरता हूं। लाओ, रस्सा बांध लेते हैं," लुढ़कनमटर ने कहा।

उन सबने कसकर रस्सा बांध लिया। फिर लुढ़कनमटर ने उसका एक छोर अपने हाथ पर बांध लिया और कहा :

"हां, तो अब मुझे नीचे उतारो!"

उन्होंने रस्से को ढील देनी शुरू की। लुढ़कनमटर रस्से के सहारे नीचे उतरने लगा। बड़ी देर तक बावली में उतरता रहा। आखिर तल का पता चल ही गया।

लुढ़कनमटर नीचे पहुंचकर घूमने लगा। अचानक उसे एक बहुत बड़ा महल दिखाई दिया। वह उसके भीतर जा पहुंचा। बड़ा अद्भुत महल था। उस महल का चप्पा-चप्पा सोने से चमचमा रहा था। उसकी दीवारों में जड़े क़ीमती हीरे-जवाहरात अपनी रुपहली आभा बिखेर रहे थे। लुढ़कनमटर मज़े से महल में घूमता रहा। अचानक उसने एक ख़ूबसूरत राजकुमारी को अपनी ओर भागकर आते देखा। हूर की परी थी वह राजकुमारी। उसकी सुन्दरता का बखान न लेखनी कर सके, न आदमी बता सके।

"भले आदमी, तुम यहां किसलिए आए हो?" राजकुमारी ने पूछा।

"रूप की रानी, मैं एक बूढ़े को ढूंढ़ रहा हूं जिसकी दाढ़ी तो बेहद लम्बी है और जो ख़ुद बित्ते भर का है," लुढ़कनमटर ने जवाब दिया।

"अरे, वह तो बलूत के पेड़ में फंसी अपनी दाढ़ी छुड़ा रहा है। लेकिन उसके पास जाना मत। वह तुम्हें मार डालेगा। बड़ा ख़ूंख़ार है। बहुत-से लोगों की जान ले चुका है!"

"वह मुझे न मार सकेगा," लुढ़कनमटर ने कहा। "उसकी दाढ़ी मैंने ही फंसाई है। मगर तुम कौन हो, यहां किसलिए रहती हो?"

"मैं एक राजकुमारी हूं। यह बूढ़ा मुझे उठा लाया है और यहां पर उसने मुझे क़ैद कर रखा है।"

"मैं तुम्हें उसकी क़ैद से छुड़ा दूंगा। बस, मुझे उस बूढ़े तक ले चलो!"

राजकुमारी उसे बूढ़े के पास ले गई। सचमुच वह बूढ़ा वहां बैठा था और उसने बलूत में फंसी अपनी दाढ़ी निकाल ली थी। लुढ़कनमटर को वहां देखते ही वह क्रोध से चीखा:

"तुम यहां क्यों आए हो? बोलो, दोस्ती चाहते हो या दुश्मनी?"

"मैं तुमसे दोस्ती नहीं चाहता!" लुढ़कनमटर ने कहा। "बेशक लड़ने आया हूं!"

फिर वे आपस में जूझ पड़े। लड़ते रहे, एक दूसरे पर हमले करते रहे। युद्ध

बहुत देर तक चलता रहा। फ़ैसला ही न हो पा रहा था। अन्त में लुढ़कनमटर ने अपनी तलवार से बूढ़े का काम तमाम कर डाला।

इसके बाद उसने और राजकुमारी ने मिलकर वहां का सारा धन-दौलत, सोना-चांदी और तरह-तरह के क़ीमती हीरे-जवाहरात तीन बोरों में भरे और वे उस ओर चल दिए जहां पर बावली में वह नीचे उतरा था। उसने ज़ोर से आवाज़ देकर पूछा:

"भाइयो, तुम यहीं हो?"

"हां-हां, यहीं हैं!"

उसने एक बोरा रस्से से बांधा और उसे ऊपर खींचने के लिए कहा।

"मेरे दोस्तो, यह तुम्हारे लिए है!" वह ज़ोर से चिल्लाकर बोला।

दोस्तों ने बोरा ऊपर खींच लिया और रस्सा नीचे लटका दिया। उसने फिर दूसरा बोरा भी रस्से से बांध दिया।

"मेरे दोस्तो, यह भी तुम्हारे लिए है," उसने फिर जोर से चिल्लाकर कहा।

हीरे-जवाहरात का तीसरा बोरा भी उसने उन्हें सौंप दिया। इस तरह लुढ़कन-मटर ने बूढ़े का सारा क़ीमती माल-ख़ज़ाना अपने दोस्तों को सौंप दिया।

अब उसने राजकुमारी को रस्से से बांधा और ऊपर खींच लेने को कहा:

"और यह मेरी अमानत है!" उसने नीचे से चिल्लाते हुए कहा।

तीनों दोस्तों ने राजकुमारी को भी ऊपर खींच लिया। अब केवल लुढ़कनमटर ही नीचे रह गया था। दोस्तों ने सोचा:

"उसे अब किसलिए ऊपर खींचा जाए? बेहतर यही होगा कि वह नीचे ही पड़ा रहे। ऐसे में राजकुमारी भी हमारे ही क़ब्ज़े में आ जाएगी। बस, उसे ऊपर खींचकर छोड़ देंगे। और वह गिरकर दम तोड़ देगा।"

लेकिन लुढ़कनमटर इस कुचक्र को ताड़ गया था। इसलिए उसने रस्से के साथ एक भारी पत्थर बांध दिया और ज़ोर से बोला:

"दोस्तो, अब मुझे भी ऊपर खींच लो!"

उन लोगों ने बंधे हुए पत्थर को काफ़ी ऊंचाई तक खींचा और फिर रस्सा छोड़ दिया। पत्थर धड़ाम से नीचे जा टकराया।

"वाह रे, मेरे दोस्तो," लुढ़कनमटर ने कहा, "तो ऐसी बात है?"

अब वह नीचे ही नीचे पाताल लोक की अनजानी दुनिया में भटकने लगा। वह चलता रहा, चलता रहा... अचानक बादल घिर आए, झमाझम वर्षा होने लगी और ताबड़तोड़ ओले गिरने लगे। लुढ़कनमटर एक बलूत वृक्ष के नीचे छिप गया।

तभी पेड़ पर बने घोंसले से उक़ाब के बच्चों की चिचियाहट उसे सुनाई दी। लुढ़कनमटर पेड़ पर चढ़ गया और उसने उक़ाब के बच्चों को अपने कोट से ढक दिया। बारिश रुकने पर एक खूब बड़ा, भारी-भरकम उक़ाब – इन बच्चों का बाप – उड़ता हुआ अपने घोंसले में आ पहुंचा। उसने देखा कि बच्चे गर्म कोट से ढके हुए हैं। उक़ाब ने बच्चों से पूछा :

"तुम्हें किसने ढक रखा है?"

"आप उसे न खाने का वायदा करें, तभी हम बताएंगे," बच्चों ने जवाब दिया।

"नहीं, मैं उसे कतई नहीं खाऊंगा।"

"पेड़ के नीचे बैठे हुए उस आदमी ने ही हमें बचाया है।"

यह सुनते ही उक़ाब पक्षी उड़कर लुढ़कनमटर के पास आ गया।

"भले आदमी, जो चाहिए मांग लो। मैं तुम्हारी हर मुराद पूरी करूंगा। मेरी ज़िन्दगी में यह पहला अवसर है, जब मेरे बच्चों को मूसलाधार बारिश में मरने से किसी ने बचाया है।"

"मुझे अपनी दुनिया में पहुंचा दो, जहां से मैं यहां आया हूं।"

"भले आदमी, तुमने मुझे बेहद मुश्किल काम सौंपा है! ख़ैर, अब किया ही क्या जा सकता है, मैं वचन दे चुका हूं। हां, उड़ान से पहले रास्ते के लिए खाने-पीने का जुगाड़ करना होगा। छह पीपे मांस और छह पीपे पानी रास्ते के

लिए काफ़ी होगा। उड़ते वक्त जब मैं अपनी गर्दन दाईं तरफ़ घुमाऊं, तो तुम मेरे मुंह में मांस का एक टुकड़ा डाल देना और जब गर्दन बाईं तरफ़ घुमाऊं, तो मुझे थोड़ा-सा पानी पिला देना। ऐसा ही करना नहीं तो वहां तक उड़ पाना मुमकिन न होगा।"

उक़ाब की पीठ पर छह पीपे मांस और छह पानी के लादे गए। फिर लुढ़कन-मटर भी उस पर सवार हो गया। उक़ाब उड़ चला। वे उड़ते रहे, सफ़र तय करते रहे। उक़ाब अपनी गर्दन कभी दाएं, कभी बाएं मोड़ता रहा, सिर घुमाता रहा। लुढ़कनमटर रास्ते भर उसे मांस का एक-एक टुकड़ा पकड़ाता रहा और थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाता रहा। इस तरह वे बहुत समय तक उड़ते रहे। सफ़र पूरा ही होनेवाला था कि उक़ाब ने दाईं तरफ़ गर्दन घुमाई, पर मांस का एक भी टुकड़ा बाक़ी न रहा था। फिर क्या, झट से लुढ़कनमटर ने अपनी जांघ से मांस का एक टुकड़ा काटा और उक़ाब के मुंह में डाल दिया। अब तक उक़ाब धरती पर उतर गया और उसने लुढ़कनमटर से पूछा :

"भाई, अभी तुमने बड़ा स्वादिष्ट मांस खिलाया था। क्या था?"

"मैंने तुम्हें अपना ही मांस खिलाया था," लुढ़कनमटर ने अपनी जांघ का कटा हुआ हिस्सा उसे दिखाया।

तब उक़ाब ने मांस का वह टुकड़ा उगल दिया। वह झट से उड़ा और प्राण-जल लेकर वापस लौटा। उसने मांस के इस टुकड़े को जांघ से जोड़कर बैठाया और थोड़ा-सा पानी वहां पर लगा दिया। देखते ही देखते जांघ पहले जैसी हो गई।

उक़ाब अपने घर की तरफ़ वापस उड़ चला। इधर लुढ़कनमटर अपने दोस्तों की तलाश में निकल पड़ा।

उधर तीनों दोस्त पहले ही राजकुमारी के पिता के यहां पहुंच गए थे। वे वहीं उसके राजमहल में रहने लगे। वे आपस में झगड़ते रहते थे – उनमें से हरेक राजकुमारी से शादी करना चाहता था। किसी एक के साथ राजकुमारी की शादी तय ही न हो पा रही थी। तीनों शादी के लिए अड़े हुए थे।

लुढ़कनमटर अपने दोस्तों की तलाश करता हुआ राजमहल तक आ पहुंचा। उसे देखते ही वे भय से थर-थर कांपने लगे। वे आशंकित थे कि लुढ़कनमटर उन्हें देखते ही मार डालेगा। पर लुढ़कनमटर ने कहा :

"मेरे सगे भाइयों ने मुझे धोखा दिया, मुझसे छल किया, तब तुम लोगों से उम्मीद कैसी? तुम्हें तो माफ़ ही करना होगा।"

और उसने उन्हें माफ़ कर दिया।

लुढ़कनमटर की शादी राजकुमारी के साथ हो गई और वे खुशी-खुशी सुखमय जीवन बिता रहे हैं।

हुवान-पहलवान

पुराने ज़माने में किसी गांव के क़रीब एक ख़ूंख़ार अजदहा रहता था। यह नरभक्षी अजदहा गांववालों का सफ़ाया करने लगा। एक दिन ऐसा भी आया, जब पूरा का पूरा गांव अजदहे के पेट में समा गया। गांव में सिर्फ़ एक बूढ़ा ही ज़िन्दा बचा था।

"अच्छा, तो कल सुबह होते ही इसे भी खा जाऊंगा!" अजदहे ने कहा।

इसी वक़्त उस वीरान गांव से होकर एक ग़रीब लड़का कहीं जा रहा था कि रास्ते में शाम हो गई। उसने बूढ़े की झोंपड़ी देखी और उसके यहां रात बिता लेने की प्रार्थना की।

"क्या तुम अपनी ज़िन्दगी से ऊब चुके हो?" बूढ़े ने पूछा।

"ऐसी भी क्या बात है?" ग़रीब युवक ने पूछा।

बूढ़े ने उसे विस्तार से सारा क़िस्सा कह सुनाया कि कैसे हत्यारे अजदहे की वजह से सारा गांव वीरान हो चुका है, सभी मारे जा चुके हैं और कल सुबह होते ही वह उसे भी निगल जाएगा।

"लेकिन वह मुझे न निगल पाएगा!"
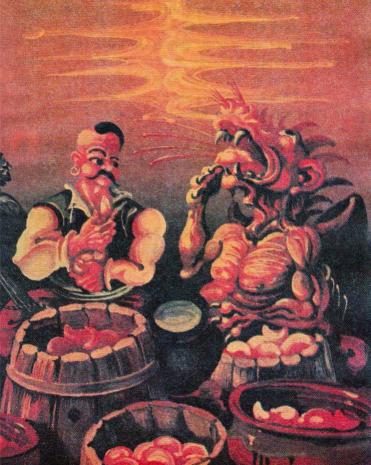
अगले दिन भोर होते ही अजदहा उड़ता हुआ बूढ़े की झोंपड़ी पर आया, युवक को देखकर खुशी से फूला न समाया :

"क्या खूब! एक तो था ही, दूसरा भी चला आया!"

लेकिन उस युवक ने कहा :

"सोच-समझ लो, कहीं मैं तुम्हारे गले में ही न फंस जाऊं!"

अजदहे ने आंखें फाड़कर देखा। क्रोध से बोला :

"तुम क्या मुझसे ज्यादा शक्तिशाली हो?"

"बेशक।"

"तो आओ, देखते हैं कौन ताक़तवर है! यह लो, मेरी ताक़त भी देख लो!" और देखते ही देखते अजदहे ने एक बड़े-से पत्थर को दबाकर चूर-चूर कर दिया।

"यह कौन-सा कमाल है?" युवक ने कहा। "अरे, तुम इसे ऐसे कसकर दबाओ कि पत्थर से पानी टपकने लगे।"

युवक ने झट से अक़्ल दौड़ाई, पनीर का बड़ा-सा टुकड़ा एक कपड़े में लपेटा और उसे कसकर निचोड़ दिया। देखते ही देखते पोटली से पानी टपकने लगा।

"तो ठीक है, चलते हैं, अब तुम मेरे दोस्त बन गए।"

वे दोनों चल दिए। रास्ते में अजदहे ने उससे पूछा :

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"इवान-पहलवान कहते हैं मुझे," युवक ने अजदहे से कहा।

यह सुनते ही अजदहा एकदम डर गया। उसने मन ही मन सोचा : "कहीं मुझे मार ही न डाले।"

दोपहर में खाने का वक़्त आया, अजदहे ने कहा :

"ज़रा जाकर एक बैल तो उठा लाओ, खाना पकाएंगे।"

युवक चल दिया। बैल तो क्या एक बकरा तक वह नहीं उठा सकता था। युवक पशुओं के रेवड़ में घुस गया और बैलों की दुम एक-एक कर आपस में बांधने लगा। उधर अजदहा बड़ी देर तक उसका इन्तज़ार करता रहा। इन्तज़ार करते करते थक गया, तो खुद भागता हुआ उसके पास पहुंचा।

"अरे, यह तुम क्या कर रहे हो?"

"हुं, क्या मैं एक-एक बैल उठाकर लाता रहूंगा? सारे के सारे बैलों को एकसाथ बांधे लिए आ रहा हूं।"

"धत् तेरे की! तुम तो मेरे सारे रेवड़ का ही सत्यानाश कर दोगे।"

अजदहे ने बैल की खाल उधेड़ी और युवक को थमाते हुए बोला:

"जाओ, मशक भर लाओ।"

युवक ने बैल की खाल संभाली और जैसे-तैसे उसे कुएं तक उठा ले गया। पानी भरने के लिए खाल कुएं में उतार दी, लेकिन उसे ऊपर खींच नहीं पा रहा था। तब उसने लकड़ी का एक बेलचा बनाया और कुएं के चौतरफ़ा घूम-घूमकर ज़मीन खोदने लगा। अभी वह ज़मीन खोद ही रहा था कि भागता हुआ अजदहा वहां पहुंचा:

"यह क्या कर रहे हो तुम?"

"हुं, क्या मशक-मशक भर पानी ढोकर लाऊंगा? सारा कुआं ही खोदकर ले आ रहा हूं।"

"अच्छा, छोड़ो!" अजदहे ने कहा। उसकी शक्ति से वह भय खा गया और खुद ही भारी मशक उठाकर चल दिया।

"चलो, जाओ, ईंधन का ही इन्तज़ाम कर दो, लकड़ी काट लाओ। बस, बलूत का एक सूखा पेड़ काट लो – काफ़ी होगा।"

"हुं, तो अब मैं छोटे-छोटे काम करूं? एकसाथ बीस पेड़ काट लाने को

कहा होता, तो कुछ बात होती!" यह कहते हुए वह रूठने का बहाना करके बैठ गया। टस से मस न हुआ। उधर अजदहे ने खाना बनाया और बैठकर खाने लगा। लेकिन इवान-पहलवान रूठा हुआ बैठा था। अजदहे के साथ खाना खाने से उसकी मामूली खुराक का रहस्य खुल जाता। आखिर इतनी मामूली खुराकवाला व्यक्ति ऐसा ताक़तवर पहलवान कैसे हो सकता है? जब अजदहा भर पेट खा चुका और पतीले में ज़रा-सा भोजन बचा, इवान ने पलक मारते ही पतीला साफ़ कर डाला और बोला:

"बड़ा थोड़ा बनाया!"

"थोड़ा रहा तो चलो मां के घर चलते हैं," अजदहे ने कहा। "मेरी मां छककर खिलाएगी।"

"ठीक है, चलना है तो चलो," इवान बोला और खुद सोचने लगा: "अब तो मारा गया बेमौत।"

इवान अजदहे के साथ उसकी मां के घर पहुंचा। अजदहे की मां ने बड़ी-बड़ी बीस देगचियां भरकर खाना पकाया। वे दोनों खाने बैठे। अजदहा खाने पर टूट पड़ा, देगचियां खाली करता जा रहा था। इवान अजदहे की नज़र बचाकर अपने हिस्से का खाना कभी क़मीज़ के अन्दर छिपाता, तो कभी आस्तीन में ठूंसता जाता। जब वे खा चुके तो अजदहे ने कहा:

"चलो, पत्थर पर लोट लगाएं।"

"चलो, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।"

अजदहा पत्थर पर जो लोटा तो चिनगारियां उड़ने लगीं।

"अरे, यह भी कोई लोट लगी! लोटो तो ऐसे कि धार बह निकले," और कपड़ों में छिपा खाना ऐसे कसकर पत्थर से दबाया कि रस की धारें फूट निकलीं।

अजदहा भय से कांपने लगा। फिर साहस जुटाकर कहने लगा:

"चलो, देखते हैं, सीटी कौन तेज बजाता है।"

"चलो, यह भी सही।"

अजदहे ने जो सीटी बजाई, तो पेड़ तक उसकी आवाज से थरथरा उठे।

इवान-पहलवान ने भी अपनी अक्ल दौड़ाई, अब क्या किया जाए? अचानक इवान ने लोहे का एक टुकड़ा पड़ा देखा, बस, उसे रास्ता सूझ गया। अजदहे को सावधान करते हुए बोला :

"देखो, तुम अपनी आंखें बन्द कर लो, ऐसा न हो कि मैं सीटी बजाऊं और तुम्हारी आंखें बाहर निकल आएं।"

अजदहे ने सहमकर आंखें मूंद लीं और इवान-पहलवान ने झट से लोहे की छड़ उठाकर अजदहे के माथे पर दे मारी। अजदहे की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

"ठीक ही कह रहे थे तुम। आंखें न बन्द कर लेता, तो आंखें बाहर निकल पड़तीं।"

अजदहे ने गांव के बाहर इवान के लिए एक झोंपड़ी बनाई, ताकि उसके साथ न रहना पड़े। इवान उस झोंपड़ी में अकेला ही रहने लगा। उधर अजदहे ने इवान-पहलवान को मारने का कुचक्र रचा। मां-बेटे चुपके-चुपके बातें कर रहे थे कि इवान से कैसे निपटा जाए?

"उसे रात में सोते समय जलाकर मार डाला जाए," अजदहे ने कहा।

इवान-पहलवान ने यह बातचीत सुन ली। वह उस रात झोंपड़ी में नहीं सोया – कहीं बाहर ही छिप गया। रात में अजदहे ने इवान की झोंपड़ी में आग लगा दी। लेकिन सुबह इवान उसी जगह पर खड़ा होकर राख झाड़ रहा था, जैसे कि अभी-अभी राख के ढेर से निकलकर आया हो।

तभी अजदहा वहां आया।

"अरे, तुम जिंदा हो?"

"हां, सही-सलामत तो हूं। रात में बस ऐसा लगा कि किसी पिस्सू ने काट लिया है।"

अजदहे के होश ही उड़ गए और वह सिर पर पांव रखकर वहां से भाग खड़ा हुआ।

उड़नखटोला

यह क़िस्सा पुराने ज़माने का है। एक था बूढ़ा और एक थी बुढ़िया। उनका अपना घर-परिवार था। तीन बेटे थे : दो बुद्धिमान और तीसरा बुद्धू। माता-पिता बुद्धिमान बेटों को प्यार करते थे। बुढ़िया अपने उन दोनों बेटों को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाती, उनकी सुख-सुविधाओं का ख़्याल रखती। और बुद्धू बेचारा सबकी हंसी का पात्र बनता, सभी उसे डांटते-फटकारते और उसकी उपेक्षा करते। वह फटी-पुरानी, पैबन्द लगी क़मीज़ पहनकर दिन-दिन भर अलावघर पर बैठा रहता। बुढ़िया उसे जब कभी खाना देती तो खा लेता, नहीं तो भूखा बैठा रहता।

एक दिन गांव में राजा का फ़रमान आया। "महाराज ने अपनी बेटी के विवाह का निर्णय किया है। इस अवसर पर महाराज ने सारे राज्य के लोगों को राजभोज का निमंत्रण भिजवाया है। महाराज अपनी बेटी का विवाह उसी युवक के साथ करेंगे, जो एक उड़नखटोला बनाएगा और उसी पर सवार होकर राजभोज में आएगा।"

अक़्लमन्द भाइयों ने उड़नखटोला बनाने का फ़ैसला किया और जंगल की ओर लकड़ी काटने चल पड़े।

उन्होंने लकड़ी काटी और बैठकर दिमाग़ लड़ाने लगे। आखिर उड़नखटोला कैसे बनाया जाए?

वे अभी सोच-विचार कर ही रहे थे कि एक बूढ़े बाबा उधर से गुज़रे और उनके पास आकर बोले:

"जुग-जुग जिओ, मेरे लाड़लो! हो सके तो थोड़ी-सी आग दे दो, पाइप सुलगाना है।"

"जाओ, कहीं और देख लो। हमारा वक़्त बरबाद न करो!"

यह कहकर वे फिर सोचने लगे। उड़नखटोला आखिर कैसे बने?

"उड़नखटोला न सही, पर सूअर के लिए बढ़िया-सा कठौता ज़रूर बना लोगे। राजकुमारी तुम्हारे नसीब में नहीं!"

यह कहकर बूढ़ा अन्तर्ध्यान हो गया। वे दोनों भाई देर तक मग़ज़पच्ची करते रहे, पर उड़नखटोला न बन पाया।

"चलो, छोड़ो! घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं। राजकुमारी से भले शादी न हो, पर राजभोज का लुत्फ़ ही उठाएंगे," बड़े भाई ने कहा।

बड़े धूमधाम से राजा के यहां दावत में जाने की तैयारियां होने लगीं। बूढ़े और बुढ़िया ने उन्हें आशीर्वाद दिया, रास्ते के लिए खाने-पीने की चीज़ें साथ में बांध दी गईं। बुढ़िया ने बढ़िया-बढ़िया पकवान बनाए और अंगूरी की सुराही सामान के साथ बांध दी।

दोनों भाई अपने-अपने घोड़े पर सवार हुए और राजमहल की ओर चल दिए।

बुद्धू भाई को पता चला कि उसके भाई शहर गए हैं, तो उसने भी कहा:

"मैं भी राजा के यहां दावत में जाऊंगा।"

"अरे, बुद्धू, तू कहां जाएगा!" मां ने कहा। "तुझे तो जंगल में भेड़िये ही खा जाएंगे!"

"नहीं, मैं ज़रूर जाऊंगा!"

लड़के ने जाने की रट लगा ली। उसे मनाया न जा सका। तब बुढ़िया ने उसके झोले में रूखी-सूखी रोटियां रख दीं और एक सुराही में पानी देकर उसे घर से विदा कर दिया।

बुद्धू भाई जंगल में पहुंचा। रास्ते में उसे एक बूढ़े बाबा मिले। बाबा की सफ़ेद बुर्राक़ दाढ़ी कमर तक लम्बी थी।

"नमस्ते, दादाजी।"

"नमस्ते, बेटे।"

"आप कहां जा रहे हैं?"

"बेटे, मैं लोगों के दुख-दर्द बंटाता हूं, उनकी मदद करता हूं। तुम किधर जा रहे हो?"

"राजा के यहां दावत में।"

"तो क्या तुम्हें उड़नखटोला बनाना आता है?"

"नहीं तो।"

"तो फिर किसलिए जा रहे हो?"

"मेरे भाई वहां गए हैं, सो मैं भी चल दिया। शायद मेरी क़िस्मत वहां खुल जाए।"

"अच्छा, बैठो। थोड़ा आराम कर लें, कुछ खाएं-पिएं। अपने झोले से खाना निकालो।"

"लेकिन दादाजी, आप खा न पाएंगे: मेरे पास सिर्फ़ रूखी-सूखी रोटियां हैं।"

"कोई बात नहीं, जो भी है निकालो।"

बुद्धू ने थैले में से रोटियां निकालीं। लेकिन ये मोटे अनाज की रूखी रोटियां न थीं, जो मां ने झोले में रखी थीं। उसमें तो गेहूं की नरम-नरम रोटियां थीं, ऐसी बढ़िया-बढ़िया, जो पर्व-त्योहार पर अमीर लोग खाते थे। बुद्धू हैरान था और बूढ़े बाबा अपनी लम्बी दाढ़ी हिला-हिलाकर हंस रहे थे।

उन्होंने छककर खाया-पिया और आराम किया। बूढ़े ने बुद्धू को उसके आतिथ्य-सत्कार के लिए धन्यवाद देते हुए कहा:

"बेटे, सुनो! जंगल में जाओ, वहां सबसे बड़ा बलूत का वृक्ष ढूंढ़ो, जिस पर सलीब के निशानवाली शाखाएं उगी हों। उस बलूत पर अपनी कुल्हाड़ी से तीन बार प्रहार करो और खुद मुंह के बल ज़मीन पर लेट जाओ और तब तक लेटे रहो, जब तक तुम्हें कोई आवाज़ न दे। इस तरह उड़नखटोला बन जाने के बाद जहां चाहो, बैठकर उड़ जाना। लेकिन यह ध्यान रखना कि रास्ते में जो भी मिले उसे अपने साथ उड़नखटोले में बैठा लेना!"

बुद्धू ने बुजुर्ग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और वे अपनी-अपनी राह चल दिए। बुद्धू जंगल में पहुंचा, उसने एक पुराना बलूत का पेड़ ढूंढ़ा, जिस पर सलीब के निशानवाली शाखाएं उगी हुई थीं। उसने कुल्हाड़ी से बलूत पर तीन बार प्रहार किए और खुद ज़मीन पर मुंह के बल लेट गया। लेटा रहा, लेटा रहा कि अचानक उसे लगा कि कोई पुकार रहा है:

"उठो, तुम्हारा भाग्य जाग उठा है!"

वह झट से उठ बैठा। उसने देखा कि एक सुन्दर-सा उड़नखटोला उड़ने के लिए तैयार खड़ा है। चमचमाता हुआ सोने का उड़नखटोला, चांदी का मस्तूल और रेशमी पाल। बस, बैठने और उड़ने भर की देर थी!

वह थोड़ी देर सोचकर झट से उड़नखटोले में जा बैठा। उसने पाल तान दिए और हवा की लहरों पर सनसनाता हुआ उड़ चला।

तेज़ी से उड़ने लगा। उड़नखटोला उड़ता रहा, उड़ता रहा और बुद्धू ज़मीन पर नज़र गड़ाए देखता रहा। उसने देखा कि एक आदमी ज़मीन पर कान लगाए कुछ सुन रहा है। बुद्धू ने आवाज़ दी:

"नमस्ते, भले मानस! क्या कर रहे हैं आप?"

"राजमहल के समाचार सुन रहा हूं। सारे मेहमान पहुंचे या नहीं।"

"क्या आप दावत में जा रहे हैं?"

"हां, वहीं जा रहा हूं।"

"आइए, फिर साथ ही चलते हैं।"

वह आदमी उड़नखटोले पर बैठ गया और वे उड़ चले।

वे उड़ते रहे, उड़ते रहे कि अचानक एक और आदमी दिखाई दिया। उसका एक पैर कान के साथ बंधा था और दूसरे पैर पर वह उछल रहा था। बुद्धू ने उसे भी पुकारा:

"नमस्ते, भले मानस! आप उछल क्यों रहे हैं?"

"इसलिए कि मैं एक ही पैर से चलता हूं – यदि मैं दूसरा पैर खोल दूं तो एक क़दम में सारी दुनिया को नाप लूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता।"

"आप कहां जा रहे हैं?"

"राजा के यहां दावत में।"

"आइए, हमारे साथ बैठ जाइए!"

"यह तो अच्छा है!"

वह भी बैठ गया। उड़नखटोला फिर उड़ चला।

वे उड़ते रहे, उड़ते रहे कि अचानक उन्हें एक निशानेबाज़ मिला, वह तीर का निशाना साध रहा था, लेकिन आसपास कुछ न दिखाई दे रहा था: न कोई परिन्दा था, न कोई चरिन्दा – सिर्फ़ सपाट मैदान ही मैदान था।

"नमस्ते, भले मानस! किसे निशाना बना रहे हैं? न कोई पक्षी दिखाई पड़ रहा है, न जानवर।"

"तुम्हें नहीं दिखता, न दिखे। पर मुझे तो साफ़-साफ़ दिख रहा है।"

"लेकिन आप किसे देख रहे हैं?"

"अरे, वो सामने, जंगल के पीछे, ठीक सौ कोस दूर बलूत के पेड़ पर एक उक़ाब बैठा है।"

"आइए, हमारे साथ बैठ जाइए!"

वह आदमी भी उड़नखटोले पर बैठ गया। फिर वे उड़ चले। उड़ते रहे, उड़ते रहे कि अचानक एक बूढ़ा राहगीर कहीं जाता हुआ दिखलाई दिया। उसकी पीठ पर बोरा भर रोटियां लदी हुई थीं।

"दादाजी, आप कहां जा रहे हैं?"

"खाने के लिए रोटियां लेने।"

"आपके पास तो वैसे ही बोरा भर रोटियां हैं!"

"तुम्हें ये ज़्यादा लगती हैं। ये तो एक कौर के बराबर हैं।"

"आइए, बैठ जाइए।"

बूढ़ा उड़नखटोले पर बैठ गया और वे फिर अपनी राह उड़ चले।

अचानक एक बूढ़ा झील के किनारे कुछ ढूंढ़ता हुआ दिखलाई पड़ा।

"दादाजी, आप क्या ढूंढ़ रहे हैं?" बुद्धू ने आवाज़ दी।

"प्यास लगी है। पर पीने भर का पानी नहीं मिल रहा है।"

"अरे, आपके सामने तो झील का अथाह पानी है! जितना चाहें, पी लीजिए।"

"खूब कही! इसे तुम अथाह पानी कहते हो। अरे, यह तो एक घूंट के बराबर है।"

"आइए, हमारे साथ बैठ जाइए।"

बूढ़ा बैठ गया। वे फिर उड़ चले। रास्ते में एक और बूढ़ा मिला। गांव की ओर एक बोरा फूस लिए चला जा रहा था।

"नमस्ते, दादाजी! आप ये फूस कहां लिए जा रहे हैं?"

"गांव की ओर।"

"आप भी कमाल करते हैं! क्या गांव में घास-फूस का अकाल पड़ गया है?"

"अरे, यह मामूली घास-फूस नहीं है!"

"आख़िर इसमें कौन-सी ख़ास बात है?"

"यह एक ख़ास तरह का फूस है। कैसी भी जानलेवा गर्मी पड़ रही हो, सूरज कितना भी झुलसाता हो, इस फूस को फैला दो – तुरन्त पाला पड़ने लगेगा, बर्फ़ गिरने लगेगी।"

"आइए, हमारे साथ बैठ जाइए!"

"चलो, चलते हैं!"

बूढ़ा बैठ गया। उड़नखटोला उड़ चला।

वे लोग देर तक उड़ते रहे या थोड़ी देर तक, पर राजा के यहां दावत में समय पर पहुंच गए। राजमहल के ख़ूबसूरत, लम्बे-चौड़े अहाते में मेज़-कुर्सियां लगी हुई थीं। मेज़ों पर तरह-तरह के व्यंजन परोसे गए थे: तरह-तरह का भुना हुआ मांस, तरह-तरह के भुने हुए परिन्दे, और न जाने क्या-क्या उस दावत में सजा हुआ था। इसके अलावा अंगूरी और बियर के पीपे के पीपे लगा दिए गए थे। जी भरकर खाने-पीने का बढ़िया इन्तज़ाम था! दावत में आधे राज्य के लोग एकत्रित थे: बूढ़े, जवान, ग़रीब-अमीर – सभी तो थे! उसी भीड़-भाड़ में वे दोनों अक़्लमन्द भाई भी मेज़ के सामने शान से बैठे हुए थे।

इसी वक़्त बुद्धू भाई भी अपने दोस्तों के साथ सोने के उड़नखटोले में बैठकर राजमहल के अहाते में उतरा। वे उड़नखटोले से बाहर निकलकर सीधे दावत में पहुंचे।

राजा ने देखा कि सोने के उड़नखटोले में बैठकर मामूली किसान का बेटा आया है। कपड़े के नाम पर फटी-पुरानी, पैबन्द पर पैबन्द लगी क़मीज़ और पुरानी, मामूली-सी पतलून पहने है। पैरों में जूते तो हैं ही नहीं।

राजा तो शर्म से पानी-पानी हो गया।

"क्या मैं अपनी बेटी की शादी ऐसे दरिद्र किसान से कर सकता हूं? यह संभव नहीं!"

और वह सोचने लगा कि उस फटेहाल किसान युवक से कैसे छुटकारा पाया जाए। उसने कुछ गूढ़ काम सोचा। अपने सेवक को बुलाकर राजा ने कहा:

"जाओ, उस किसान से कहो: भले ही वह सोने के उड़नखटोले में बैठकर आया है, लेकिन उसे तब तक राजकुमारी से मिलने नहीं दिया जाएगा, जब तक कि वह प्राण-जल लेकर नहीं आता। यह काम उसे दावत खत्म होने से पहले करना है। अगर वह पानी न ला पाया तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड़ से अलग कर देगी।"

राजसेवक चल दिया।

उधर खबरअन्दाज़ ने सुन लिया था कि राजा ने क्या कहा है। उसने बुद्धू को बता दिया। बुद्धू उदास हो गया: वह न खा रहा था, न पी रहा था, बस सिर झुकाए बैठा था।

पवनचाल ने पूछा:

"तुम उदास क्यों हो गए?"

"राजा एक बड़ा मुश्किल काम सौंपना चाहता है: दावत खत्म होने से पहले मुझे प्राण-जल लाना है। मैं इसे कैसे ला पाऊंगा?"

"तुम दुखी मत हो, इसे मैं ला दूंगा।"

"बड़ी मेहरबानी होगी।"

तब तक राजसेवक आदेश लेकर आ पहुंचा। बुद्धू को तो पहले ही सब कुछ पता चल गया था।

"जाकर राजा साहब से कह दो – ले आऊंगा!"

पवनचाल ने कान से बंधा हुआ एक पैर खोला और जैसे ही क़दम बढ़ाया, बस, पलक झपकते ही प्राण-जल भर लिया। हां, पानी तो भर लिया पर थक-सा गया। "जब तक लोग दावत खा रहे हैं, मैं झाड़ी के नीचे बैठकर सुस्ता लूं," उसने सोचा। वह बैठ गया और उसे नींद आ गई।

उधर राजा की दावत का वक़्त खत्म हो रहा था, लेकिन पवनचाल अब तक न पहुंचा था। बुद्धू की जान गले में अटकी थी। न मरा, न ज़िन्दा।

"कहीं गुम हो गया है," बुद्धू ने सोचा। खबरअन्दाज़ ज़मीन पर कान लगाकर सुनने लगा। सुनता रहा, सुनता रहा...

थोड़ी देर बाद बोला:

"भाई, तुम दुखी मत हो। वह झाड़ी के नीचे सो रहा है।"

"लेकिन अब मैं क्या करूं?" बुद्धू ने पूछा। "आखिर उसे कैसे जगाया जाए?"

निशानेबाज़ ने तपाक से कहा:

"तुम फ़िक्र न करो, मैं उसे जगाए देता हूं।"

निशानेबाज़ ने झट से धनुष चढ़ाया और झाड़ी को निशाना बनाते हुए तीर छोड़ दिया। शाखाएं हिलीं और पवनचाल से टकराईं। वह झट से उठ बैठा। बस, एक क़दम बढ़ाया और वहां पहुंच गया। मेहमान अभी दावत खत्म न कर पाए थे कि पवनचाल प्राण-जल लेकर आ गया।

राजा हैरान रह गया, लेकिन कुछ न बोला।

"जाओ, उस युवक से कह दो," राजा ने सेवक को आदेश देकर कहा, "यदि वह और उसके दोस्त मिलकर दो दर्जन भेड़ों का भुना हुआ गोश्त और बारह तन्दूरों में पकी रोटियां खा लेंगे तो मैं अपनी बेटी का ब्याह उस युवक से कर दूंगा। और अगर वह न खा पाए, तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड़ से अलग कर देगी।"

उधर खबरअन्दाज ने यह सुन लिया और फिर से सब कुछ उसे कह सुनाया।

"अब मैं क्या करूं? मैं तो एक बार में समूची रोटी भी नहीं खा सकता," बुद्धू ने उदास होकर कहा।

और उसने ग़मगीन होकर सिर झुका लिया। आखिर वह करता भी क्या?

भोजनभट्ट को यह समाचार मिला। उसने युवक को तसल्ली दी:

"दोस्त, तुम दुखी मत हो। मैं तुम्हारा और सभी साथियों का खाना खा लूंगा, मुझे तो वह पूरा भी नहीं पड़ेगा।"

इतने में राजसेवक वहां आ पहुंचा। बुद्धू बोला:

"पता है, पता है, राजा का क्या आदेश है। जाओ, कह दो – हम लोग भोजन के लिए तैयार हैं। खाना पकाया जाए।"

दो दर्जन भेड़ों का मांस भूना-पकाया गया और बारह तन्दूरों में पकाकर रोटियों का पहाड़ लगा दिया गया। उधर भोजनभट्ट ने खाना शुरू कर दिया। थोड़ी ही देर में सारा का सारा खाना खा गया। वह और खाना मांगने लगा।

"खाना और वह भी आधा पेट! अच्छा होता कि इतना ही खाना और मिल जाता!"

राजा क्रोधित हो उठा। उसने एक और बड़ा काम उसे सौंपा। इस बार एक ही सांस में बारह पीपे बियर और बारह पीपे अंगूरी पीनी थी। राजा ने यह कह-कर अपने सेवक को भेजा।

"अगर यह काम न हुआ, तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड़ से अलग कर देगी।"

खबरअन्दाज ने ये बातें पहले ही सुन लीं और बुद्धू को बतला दीं। लेकिन समुद्रसोख ने उसे धैर्य रखने के लिए कहा:

"दोस्त, दुखी मत हो। मैं सब कुछ पी जाऊंगा, फिर भी कम पड़ेगा।"

बारह पीपे बियर और बारह पीपे अंगूरी के लाकर रख दिये गए। समुद्रसोख एक-एक पीपा करके सब पी गया। यहां तक कि आखिरी बूंद तक चाट गया और कहने लगा:

"राजा ने पिलाया भी तो इत्ता थोड़ा! मैं तो इतना ही और पी जाता।"

राजा ने देखा कि अब काम बिगड़ रहा है। उसने आव देखा न ताव बुद्धू को मारने की योजना बना डाली।

उसने पुनः अपना सेवक भेजा:

"जाओ, उससे कह दो कि शादी से पहले हम्माम में हो आए।"

इधर राजा ने लोहे के हम्माम को तपाकर लाल करने का हुक्म दिया। उसके क़रीब जाना ही मुमकिन न था, नहाना तो दूर रहा।

बुद्धू को राजा का आदेश सुनाया गया। वह हम्माम की ओर चल पड़ा। उसके आगे-आगे हिमबाबा अपना फूस लेकर चल रहे थे। अभी वे हम्माम के बाहर ही थे, तेज़ गर्मी से झुलसे जा रहे थे। हिमबाबा ने अपना करामाती फूस फैला दिया, देखते ही देखते वहां खूब ठण्ड हो गई। बड़ी मुश्किल से बुद्धू नहाया, फिर अलावघर पर बैठकर देर तक बदन सेंकता रहा।

राजा ने अपने सेवक को यह पता लगाने भेजा कि बुद्धू का क्या हुआ? राजा सोच रहा था कि वह जलकर खाक हो गया होगा। लेकिन बुद्धू तो अलावघर पर बैठा बदन सेंक रहा था। वह बोला:

"शाही हम्माम है या बर्फ़ का गोदाम? इसे क्या जाड़े भर गरम ही नहीं किया था?"

राजा परेशान हो गया। लेकिन अब क्या किया जाए?

बड़ी देर तक वह उधेड़-बुन में पड़ा सोचता रहा, सोचता रहा। फिर अच्छी तरह सोच-समझकर बोला:

"पड़ोसी राजा हम पर आक्रमण करनेवाला है। मैं योग्य वर की परीक्षा लेना चाहता हूं: अपनी पुत्री का ब्याह उसी युवक से करूंगा, जो युद्ध में सबसे पराक्रमी सिद्ध होगा।"

दूर-दूर से बड़े-बड़े पराक्रमी योद्धा एकत्रित होने लगे। बड़े भाई भी अपने-अपने घोड़े पर सवार हो गए। बुद्धू के पास अपना घोड़ा तक न था। उसने शाही घुड़साल से एक घोड़ा मांगा। घोड़ा भी क्या था? एक खूब बूढ़ी दुमकटी घोड़ी! वह मरियल घोड़ी घिसट-घिसटकर चलती थी। सभी योद्धा अपने-अपने घोड़े

पर सवार होकर उससे आगे निकल गए और वह टिक-टिक करता उसे हंकाता रह गया, पर वह तो टस से मस न हुई।

इसी वक़्त जंगल से वही बूढ़े बाबा आ निकले, जिनकी सहायता से बुद्धू को उड़नखटोला मिला था।

"दुखी मत हो, बेटे! मैं तुम्हारी मदद के लिए आया हूं," बूढ़े बाबा ने कहा। "जैसे ही तुम बड़े जंगल से होकर गुज़रोगे, दाहिनी ओर तुम्हें लम्बी-लम्बी शाखाओंवाला एक लिण्डन का पेड़ दिखाई देगा। पेड़ के क़रीब जाकर कहना: 'लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!' लिण्डन का पेड़ दो हिस्सों में बंट जाएगा, उसके बीच से ज़ीन कसा हुआ एक घोड़ा बाहर आएगा। घोड़े की ज़ीन से बंधा हुआ एक झोला मिलेगा। जब तुम्हें मदद की ज़रूरत हो, तब तुम कहना: 'झोले में से निकल आओ!' तब देखना क्या होता है! अच्छा, अब चलता हूं।"

बुद्धू ख़ुशी से फूला न समाया। दुमकटी घोड़ी से उतर गया – उस पर सवार होकर तो कहीं पहुंचने से रहा। वह पैदल ही जंगल की ओर दौड़ चला। और लिण्डन का पेड़ ढूंढ़कर उसके क़रीब पहुंचा:

"लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!"

लिण्डन का पेड़ दो हिस्सों में बंट गया। उसके भीतर से एक अद्भुत घोड़ा निकला – सुनहरा अयाल था और चमचमाता साज़। ज़ीन पर योद्धा का कवच रखा था और बग़ल में एक झोला लटक रहा था।

बुद्धू ने रक्षा-कवच पहना और ज़ोर से आवाज़ देकर बोला:

"ऐ, झोले में से निकल आओ!"

कहने भर की देर थी। झोले के अन्दर से सैनिक कूद-कूदकर निकलने लगे। अनगिनत सैनिक बाहर निकल आए।

बुद्धू भाई उचककर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी सेना के आगे-आगे, हवा से बातें करता हुआ दुश्मन से लड़ने चल पड़ा।

शीघ्र ही दुश्मन की सेना से भिड़न्त हुई – अपने सैनिकों के साथ वह दुश्मन की फ़ौज को गाजर-मूली की तरह काटने लगा। शीघ्र ही उसने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए। युद्ध ख़त्म होने से थोड़ा पहले ही उसकी टांग में घाव लग गया।

इसी दौरान राजा और राजकुमारी युद्ध देखने आए। राजकुमारी ने देखा कि सूरमा घायल हो गया है, उसने अपने रूमाल के दो टुकड़े किए। एक टुकड़ा अपने पास रख लिया और दूसरे टुकड़े की पट्टी बनाकर उसके घाव में बांध दी।

युद्ध खत्म हुआ, बुद्धू जंगल में लिण्डन के पेड़ के क़रीब आकर बोला:

"लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!"

यह सुनते ही लिण्डन दो हिस्सों में बंट गया। उसने घोड़ा, झोला और रक्षा-कवच लिण्डन के पेड़ को वापस कर दिया। सब कुछ वैसे ही छिपा दिया और फिर से वही पैबन्द लगी कमीज़ और पुरानी पतलून पहन ली।

इधर राजा ने उस सूरमा को बुला भेजा। चारों तरफ़ हरकारे भेजे गए, सूरमा को ढूंढ़ने लगे, जिसके घाव पर राजकुमारी का रूमाल बंधा हुआ था। लेकिन वह कहीं न मिला। तब राजा ने हुक्म दिया कि उसे सारे राज्य में ढूंढ़ा जाए। अमीर-ग़रीब सभी के यहां उसे ढूंढ़ा जाने लगा। राजसेवकों ने उसे ग़रीबों की सभी झोंपड़ियों में भी ढूंढ़ा पर वह कहीं न मिला। आखिर राजा के दो सेवक नगर की सबसे किनारेवाली झोंपड़ी में उसे ढूंढ़ते हुए आए। वहां दोनों बड़े भाई खाना खा रहे थे और बुद्धू भाई रोटियां पकाकर उन्हें खिला रहा था। उसकी टांग पर राजकुमारी का रूमाल बंधा हुआ था। राजसेवक उसे तुरन्त शाही दरबार में हाज़िर कर देना चाहते थे।

लेकिन उसने कहा:

"भाइयो, मैं फटे-पुराने कपड़े पहनकर राजा के दरबार में कैसे जाऊंगा! ठहरिए, मैं ज़रा नहा-धो लूं। तब तक आप लोग भोजन करिए, मैं अभी आता हूं।"

"अच्छा, तो ठीक है! जाइए, जल्दी से नहा-धो लीजिए।"

और वे बैठकर खाना खाने लगे। बुद्धू दौड़कर जंगल में पहुंचा। झट से लिण्डन के पेड़ के पास आकर बोला:

"लिण्डन, लिण्डन हटके दिखाओ!"

यह सुनते ही लिण्डन का पेड़ दो हिस्सों में बंट गया और भीतर से घोड़ा निकल

आया। बुद्धू ने झटपट कपड़े बदले और वह ऐसा खूबसूरत नौजवान लगने लगा कि उसे देखो तो बस देखते ही रह जाओ। वह उचककर घोड़े पर बैठ गया और सीधे राजमहल की ओर चल पड़ा।

राजा और राजकुमारी की खुशियों का ठिकाना न रहा; उस सूरमा का दोनों ने धूम-धाम से स्वागत किया और उसी क्षण राजा ने अपनी बेटी की शादी उस वीर युवक से कर दी।

कृषकपुत्र इवान

बहुत पहले की बात है। कहीं एक राजा राज्य करता था। राजा-रानी के कोई सन्तान न थी। और जब बुढ़ापा आया, तो बेटा हुआ। वे खुशी से फूले न समाए। जब बेटा जवान हुआ, तो राजा ने उसकी शादी का निर्णय किया। लेकिन बेटा राजा से बोला :

"पिताजी, शादी मैं तब करूंगा, जब आप मुझे एक ऐसा घोड़ा उपहार में देंगे, जो अंगारे खाए, लपटें पिए और जब दौड़े तो बीस-बीस कोस तक धरती कांपे और बलूत की पत्तियां झड़ने लगें।"

राजा ने अपने सूरमाओं को बुलाकर पूछा :

"शायद आप लोगों ने कभी ऐसे घोड़े के बारे में सुना हो, जो अंगारे खाए, लपटें पिए और जब दौड़े तो बीस-बीस कोस तक धरती कांपे और बलूत की पत्तियां झड़ने लगें?"

सभी ने कहा कि उन्होंने न ऐसा घोड़ा देखा है, न उसके बारे में सुना है और उसकी तलाश कर पाना नामुमकिन है।

विवश होकर राजा ने सारे राज्य में यह फ़रमान जारी कर दिया :

"शायद किसी ने ऐसे घोड़े के बारे में सुना हो या खुद उसे ला सकता हो,
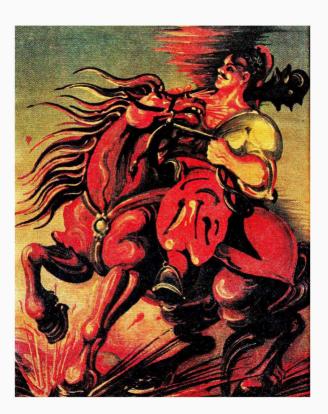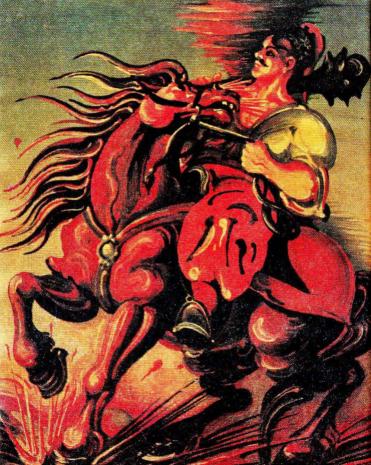
ऐसा व्यक्ति तुरन्त मेरे दरबार में हाज़िर हो।"

राजा का यह फ़रमान किसी गांव में पहुंचा। किसानों ने उसे पढ़ा। एक किसान ने घर आकर अपनी पत्नी को फ़रमान की सारी बात बतायी।

यह बातचीत किसान का बेटा सुन रहा था। वह बोला:

"पिताजी, मैं जानता हूं ऐसा घोड़ा कहां है!"

पिता को गुस्सा आ गया:

"कोरी बकवास करता है! कहां तो तू घर से बाहर पांव रखता है और गांव के लड़के तेरी पिटाई करते हैं, कहां तू ऐसे घोड़े की डींग हांक रहा है!"

बेटे ने झटपट कपड़े पहने और बोला:

"पिताजी, आइए, ज़रा बाहर चलते हैं।"

पिता-पुत्र घर से बाहर निकले। पुत्र ने हाथ बढ़ाकर बलूत का एक पेड़ पकड़ा और उसे ज़मीन तक नीचे झुका दिया। पिता के तो होश ही उड़ गए और चेहरा भय से फीका पड़ गया।

"बेटे, अब मुझे विश्वास हो गया।"

वे दोनों परगनाधीश के यहां पहुंचे। पुत्र को बाहर छोड़कर वह अकेला ही परगनाधीश के सामने हाज़िर हुआ और बोला:

"हुज़ूर, गुस्ताखी माफ़ हो! एक अर्ज़ है कि..."

"कहो..."

"हुज़ूर, मेरा बेटा ऐसा घोड़ा ला सकता है, जो..."

सभी एकसाथ जोर से चिल्लाए:

"इन ऐरे-गैरों को काल-कोठरी में डाल दो! इसका बेटा भी भला कुछ कर सकता है? उसे तो घर से निकलते ही गांव के सब छोकरे पीटते हैं।"

सो, उन्हें काल-कोठरी में डाल दिया गया। पिता-पुत्र देर तक वहां बन्द बैठे थे, उधर परगनाधीश सोचने लगा:

"आखिर इन्हें राजा के यहां भेजने में हर्ज ही क्या है?"

उन्हें क़ैद से छोड़कर राजा के पास ख़बर भिजवा दी गई। राजा ने परगना-धीश की चिट्ठी पढ़ी, लेकिन उसे विश्वास न हुआ कि एक मामूली किसान का बेटा इतना कठिन काम कर सकता है। फिर भी राजा ने उसे लाने के लिए अपने कारिन्दे के साथ एक रथ भेज ही दिया।

थोड़ी देर बाद वह नौजवान राजा के सामने हाज़िर किया गया। कृषकपुत्र को देखते ही राजा ने पूछा:

"तो तुम ऐसे घोड़े को ला सकते हो?"

"जी, हुज़ूर।"

"तुम्हें क्या चाहिए?"

"मुझे एक अच्छा-सा घोड़ा और भारी गदा चाहिए।"

राजा ने अपने कारिन्दे को एक परचा लिख दिया:

"जाओ, वहां चरागाह में घोड़े चर रहे हैं। मेरे कारिन्दे को यह परचा दे देना, वह तुम्हें घोड़ा दे देगा।"

कृषकपुत्र ने वह परचा कारिन्दे को दिखाया।

"ज़रा ठहरो," कारिन्दे ने कहा। "थोड़ी देर में घोड़ों को पानी पिलाने ले जाऊंगा। तब जैसा घोड़ा चाहो, चुन लेना।"

वह अपने लिए घोड़ा छांटने लगा। लेकिन काम आसान न था। वह जिस घोड़े की दुम पकड़ता, हाथ लगाते ही उखड़ जाती। जब अयाल पर हाथ फेरता, तो वह झड़ जाती। इस तरह बीस घोड़ों की खालें उसने हाथ लगाते ही खींच लीं, पर घोड़ा न छांट पाया।

मायूस होकर वह घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक खस्ताहाल झोंपड़ी दिखलाई दी। झोंपड़ी के छप्पर में जगह-जगह छेद थे, जिनसे पानी टपक रहा था।

झोंपड़ी के पास एक बुढ़िया बैठी थी। कृषकपुत्र को अपनी झोंपड़ी के क़रीब से गुज़रता देखकर उसने विनयपूर्वक कहा:

"बेटे, मेरी मदद कर दो, मुझ दरिद्र की कोई भी मदद नहीं करता, सब मुंह मोड़ लेते हैं।"

कृषकपुत्र ने छप्पर को उन बीस खालों से ढंक दिया जो उसे घोड़ों को चुनते समय मिली थीं।

बुढ़िया ने उसे आशीर्वाद दिया और वह फिर आगे चल दिया।

राजा हैरान था कि उसे मन माफ़िक घोड़ा न मिल पाया। वह कृषकपुत्र इवान से बोला:

"जाओ, मेरी घुड़साल से अपने लिए एक घोड़ा छांट लो। शायद वहां तुम्हें अपने मतलब का घोड़ा मिल जाए।"

इवान राजा के घुड़साल में गया। लेकिन वहां भी वही हाल हुआ। इवान जिस घोड़े पर हाथ फेरता, वह गिर पड़ता।

रात होने पर इवान एक खुले मैदान में पहुंचा। उसने एक ज़ोरदार सीटी बजाई। पलक झपकते ही सरपट दौड़ता हुआ एक घोड़ा आ पहुंचा:

"आपने मुझे याद किया, मालिक?"

"चलो, जल्द ही सफ़र तय करना है।"

"ठीक है, मालिक।"

वह इस घोड़े को राजा की घुड़साल के अन्दर ले जाने लगा तो सारी दीवारें भहराकर गिर गईं।

कृषकपुत्र इवान ने घोड़े को बांधकर उसे सबसे बढ़िया गेहूं खाने के लिए दिया। फिर वह सोने चला गया।

सुबह जब राजा सोकर उठा, तो बोला:

"जाओ, इवान से पूछो, शायद उसे सपने में अपने मतलब का घोड़ा दिखा हो।"

इवान ने कहा:

"हुज़ूर, मुझे मनमाफ़िक घोड़ा मिल गया है – घुड़साल में बंधा हुआ है..."

राजा घोड़े को देखने के लिए घुड़साल में पहुंचा। घोड़े को देखते ही राजा डर गया – इतना बड़ा घोड़ा!

"अब मेरे लिए एक इतनी भारी गदा बनवाइए कि चार बैल उसे ढोकर लाएं।"

गदा मंगवाई गई।

कृषकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद डेढ़ दिन, डेढ़ रात तक सोता रहा। जब सोकर उठा, तो देखा कि गदा उड़ती चली आ रही है। उसने गदा को अपनी कानी उंगली पर जैसे ही रोका, वह टकराई और टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गई।

"ऐसी कमज़ोर गदा किस काम की! अब ऐसी गदा बनवाइए, जिसे आठ बैलों को ढोना पड़े," कृषकपुत्र ने कहा।

सौ साल पुराने बलूत वृक्ष को काटकर एक और गदा बनाई गई, आठ बैलों पर लादकर लाई गई। कृषकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद तीन दिन, तीन रात तक खर्राटे लेता रहा।

जब नींद खुली, तो उसने देखा कि गदा सनसनाती चली आ रही है। उसने उड़ती हुई गदा को बीच की उंगली पर रोक लिया। गदा उंगली से टकराई और ज़मीन में गज भर धंस गई।

"यह मेरे काम की है," उसने कहा।

इवान चलने लगा तो राजा ने कहा:

"सुनो, यदि तुम उस घोड़े को ढूंढ़कर ला दोगे; तो मैं तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगा और तुम आजीवन राजकोप से मुक्त रहोगे। यह मेरा अटल वचन है।"

वह यात्रा पर निकल पड़ा। लेकिन राजा को विश्वास न हुआ कि एक मामूली किसान का बेटा अकेला ऐसे अद्वितीय घोड़े को हासिल कर पाएगा। राजा ने उसके पीछे अपने दो सूरमाओं को भी भेज दिया। ये कोई मामूली किसान के बेटे न थे – कुलीन घराने के सूरमा थे।

"लपककर उस तक पहुंच जाओ," राजा ने कहा।

कृषकपुत्र को लगा कि धरती कांप रही है... उसने सोचा:

"या तो कोई अजदहा उड़ रहा है, या फिर कोई सूरमा घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे हैं..."

वे क़रीब आए, अभिवादन के बाद कृषकपुत्र ने उनसे पूछा:

"आप कौन हैं?"

"राजा ने हमें तुम्हारे साथ भेजा है।"

"तो ठीक है, पर अगुवा कौन होगा? किसी एक को बड़ा मानना ही होगा।"

कुलीन घराने के वे सूरमा चिल्लाने लगे:

"अगुवा मैं बनूंगा, अगुवा मैं बनूंगा..."

लेकिन कृषकपुत्र ने कहा:

"इस बात का फ़ैसला यूं न होगा। आओ, हम लोग अपनी-अपनी गदा रास्ते पर, सामने की ओर घुमाकर फेंकते हैं, जो सबसे दूर फेंकेगा, वही हमारा अगुवा होगा।"

उनमें से एक ने अपनी गदा घुमाकर सामने की ओर फेंक दी। अब घुड़सवार एक दिन चले, दो दिन चले – गदा का पता न चला। तीसरे दिन उन्होंने देखा कि गदा उड़कर नीचे उतर चुकी है। दूसरे सूरमा ने अपनी गदा फेंकी।

घुड़सवार एक दिन चले, तीन दिन चले, पर गदा का पता न चला। एक हफ़्ते बाद उन्हें गदा मिली। कृषकपुत्र इवान ने अब अपनी गदा फेंकी। घुड़सवार एक हफ़्ते चले, पर गदा न मिली। दूसरे और तीसरे हफ़्ते भी वही हाल रहा, उसके बाद भी वह कहीं न दिखी।

"शायद तुम्हारी गदा रास्ते में ही काफ़ी पीछे छूट चुकी है।"

"ऐसा मुमकिन नहीं। वह ज़रूर किसी के घर पहुंच गई है।"

वे हफ़्ते भर और चले कि उन्हें एक बड़ा-सा घर दिखाई दिया जिसके चौतरफ़ा

तांबे की मज़बूत चहारदीवारी थी और वहां पहुंचने के लिए तांबे का एक पुल था। उन्होंने देखा, कृषकपुत्र इवान की गदा चहारदीवारी को भेदती हुई घर के कोने को तोड़ चुकी है। उस घर में डरावने अजदहों का गढ़ था। गनीमत यह थी कि वे घर में न थे – कहीं दूर लड़ने गए हुए थे।

कृषकपुत्र इवान ने कुलीन घराने के सूरमाओं से कहा :

"आज तुम पुल पर पहरा दोगे, और तुम घोड़ों के पास सोओगे। और मैं खुद उस घर में सो जाऊंगा।" फिर पुल पर तैनात सूरमा को याद दिलाते हुए वह बोला:

"देखो, सो न जाना, पहरा देते रहना..."

वह सूरमा घूम-घूमकर पहरा देता रहा। थोड़ी देर बाद उसे नींद आने लगी। रास्ते में वह पहले ही काफ़ी थक चुका था। वहीं पुल पर खर्राटे भरने लगा।

इस बीच कृषकपुत्र इवान की नींद खुल गई, देखा कि आधी रात हो चुकी है। चलने का वक़्त हो गया था। उसने कपड़े पहने, पुल पर पहुंचा, लेकिन पहरा देनेवाला तो सो रहा था।

अचानक धरती कांपने लगी, छह सिरवाला अजदहा हवा से बातें करता चला आ रहा था, अपने घोड़े से कह रहा था :

"अरे, तू घबराने क्यों लगा? हमारा मुक़ाबला करनेवाला कोई नहीं। अगर कोई है भी, तो कृषकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह तो यहां इतनी दूर क्या आएगा, कौवा तक उसकी हड्डियां यहां न ला पाएगा। वह अभी छोकरा है, इस लायक़ नहीं कि मुझे ललकार सके।"

"कौवा भले ही हड्डी न ला पाए, पर बांका नौजवान तो खुद ही चला आए-गा," कृषकपुत्र इवान ने अजदहे से कहा।

अजदहे ने उसे देखते ही पूछा :

"भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?"

"भाईचारा नहीं, दुश्मनी।"

"तो चलो, पहले तुम प्रहार करो," अजदहे ने कहा।

"नहीं, तुम प्रहार करो। अपने सारे राज में तुम्हारा ही दबदबा है।"

छह सिरवाले अजदहे ने तो कृषकपुत्र को थोड़ा सा डगमगाया ही, लेकिन जब उसने अजदहे पर वार किया तो एकसाथ छहों सिर कटकर गिर पड़े।

सुबह उसने पुल पर पहरा देनेवाले से पूछा:

"क्यों भाई, पहरा ठीक से दिया था न?"

"हां, ऐसा कि परिन्दा पर न मार पाया," उसने कहा।

अगली रात को इवान ने दूसरेवाले को पुल पर पहरा देने भेजा और उस पहलेवाले को घोड़ों के पास। और वह सो गया... कृषकपुत्र इवान ठीक समय पर उठ बैठा और पुल के पास गया। उसे सुनाई दिया कि धरती सनसना रही है... यह तो नौ सिरवाला अजदहा हवा से बातें करता चला आ रहा था, अपने घोड़े से कह रहा था:

"अरे, तू घबराने क्यों लगा? हमारा मुक़ाबला करनेवाला कोई नहीं। अगर कोई है भी, तो कृषकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह तो यहां इतनी दूर क्या आएगा, कौवा तक उसकी हड्डियां यहां न ला पाएगा।"

"झूठ बोलते हो!" कृषकपुत्र इवान ने कहा। "बांका नौजवान तो खुद ही चला आएगा!"

"बोलो, भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?"

"भाईचारा नहीं, दुश्मनी।"

"तो चलो, पहले तुम प्रहार करो!"

"नहीं, तुम प्रहार करो, आधी दुनिया में तुम्हारा दबदबा है।"

नौ सिरवाले अजदहे ने जैसे ही प्रहार किया, वैसे ही कृषकपुत्र इवान टखनों तक ज़मीन में धंस गया। जब इवान ने अजदहे पर वार किया, तो एकसाथ सात सिर कटकर गिर पड़े। फिर दुबारा गदा घुमाते ही अजदहे के बाक़ी दो सिर भी कटकर अलग हो गए।

कृषकपुत्र इवान घर वापस लौटा। सुबह उसने पुल पर पहरा देनेवाले से पूछा :

"क्यों भाई, पहरा ठीक से दिया था न?"

"हां, ऐसा कि चूहा तक न फटक पाया..."

तीसरी रात को कृषकपुत्र इवान ने दोनों सूरमाओं को फिर बुलाया, अपने दस्ताने को दीवार पर टांगते हुए बोला :

"तो भाइयो, आज मैं खुद पुल पर पहरा देने जा रहा हूं और तुम लोग मेरे दस्ताने पर नजर रखना : अगर दस्ताने से पसीने की बूंदें टपकें, तो फ़िक्र मत करना और अगर खून की बूंदें टपकें, तो मेरे घोड़े को छोड़ देना।"

आधी रात से कुछ पहले वह पुल पर पहरा देने आया। उसे सुनाई दिया कि बीस-बीस कोस तक धरती कांपने लगी है। बलूत की पत्तियां झड़ने लगी हैं।

इस बार सबसे बड़ा अजदहा अपने उसी घोड़े पर हवा से बातें करता चला आ रहा था, जो अंगारे खाता था और लपटें पीता था।

वह अपने घोड़े से कह रहा था :

"अरे, तू घबराने क्यों लगा? हमारा मुक़ाबला करनेवाला कोई नहीं। अगर कोई है भी, तो वह कृषकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह यहां इतनी दूर क्या आ पाएगा, कौवा तक उसकी हड्डियां यहां न ला पाएगा।"

तभी कृषकपुत्र इवान ने कहा :

"कौवा भले ही हड्डियां न ला पाए, पर बांका नौजवान खुद ही चला आए-गा।"

"अच्छा तो बोलो, भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?"

"भाईचारा नहीं, दुश्मनी।"

"तो चलो, प्रहार करो!" अजदहे ने कहा।

"नहीं, पहले तुम प्रहार करो। तुम दुनिया भर में सबसे शक्तिशाली हो।"

अजदहे के प्रहार करते ही कृषकपुत्र इवान पीला पड़ गया। फिर कृषकपुत्र ने उस पर प्रहार किया। वे एक दूसरे पर प्रहार पर प्रहार करते रहे।

बारह सिरवाले अजदहे के सिर्फ़ तीन सिर बचे थे। कृषकपुत्र इवान कमर तक जमीन में धंस चुका था, उसे लग रहा था कि बस अब वह बिल्कुल पस्त हो चला है। तभी अजदहे ने पूछा :

"सुनो, तुम्हारे पिता थे?"

"हां, थे।"

"और उनके पास बैल भी थे?"

"हां, थे।"

"उन्हें जोतते भी थे?"

"बेशक, जोतते भी थे।"

"उन्हें सुस्ताने भी देते थे?"

"हां, सुस्ताने भी देते थे।"

"तो फिर हम भी थोड़ा सुस्ता लें।"

वे सुस्ताने लगे तो कृषकपुत्र इवान ने अपनी गदा घुमाकर घुड़साल की छत पर फेंक दी, घुड़साल जहां कि तहां बैठ गई। उसके घोड़े ने तत्क्षण खूंटा तोड़ा, इवान के पास सरपट दौड़ आया और अपने सुम से ज़मीन खोदने लगा।

उधर उन सूरमाओं की नींद खुली, देखा कि इवान के दस्ताने से दबादब खून बह रहा है। लेकिन वे कृषकपुत्र इवान की मदद से कतरा रहे थे। सोचने लगे :

"क्यों हम उसकी खातिर अपनी जान खतरे में डालें?"

इस बीच इवान के घोड़े ने अपने मालिक के चारों तरफ़ मिट्टी खोद डाली। तब कृषकपुत्र इवान ने अजदहे से कहा :

"अब तेरी मौत आ गई है।"

"अच्छा, तो तुम मेरी जान ले लो। मरने से पहले बस यही कहना है. मेरी मृत्यु के बाद तुम्हें यह घोड़ा मिल ही जाएगा, जिसकी तुम्हारे राजा को ज़रूरत है। पर इसे घर तक न ले जा पाओगे। मेरी तीन बहनें, मां और पिता – राजा ईरद – जीवित हैं। वे तुम्हें तथा तुम्हारे दोनों सूरमाओं को ज़िन्दा न छोड़ेंगे।"

इवान ने अजदहे के बाक़ी तीनों सिर काट डाले, लेकिन ख़ुद उधेड़-बुन में पड़ गया।

ऐन वक़्त पर उस बुढ़िया को, जिसकी झोंपड़ी को इवान ने घोड़े की खालों से ढंका था, यह पता चला कि इवान संकट में है। दुनिया में जो कुछ होता था, वह तो सब जानती थी। इवान की मदद के लिए बुढ़िया ने अपना कुत्ता भेजा। कुत्ता इवान के पास आकर बोला:

"घोड़े पर सवार होकर तुम लोग जैसे ही घर की ओर बढ़ोगे, तुम्हें खूब ज़ोर से प्यास लगेगी, गला इस क़दर सूखेगा कि बोल न पाओगे। इसी वक़्त तुम्हें ठीक दाहिनी ओर एक छोटी-सी झील दिखाई देगी, पानी शीशे की तरह साफ़ होगा लेकिन उसे मत पीना। गदा से झील पर प्रहार करना – तब देखना कि वहां क्या है। फिर आगे बढ़ लेना, तुम्हें एक पेड़ दिखाई देगा, उसके नीचे एक मेज़ होगी और मेज़ पर नाना प्रकार के मधुर पेय और व्यंजन सजे होंगे। खाने की इच्छा होगी, लेकिन मत खाना। मेज़ पर गदा से प्रहार करना – तब देखना कि वहां क्या है! फिर आगे बढ़ लेना। एक दूसरा पेड़ दिखाई देगा, उसके नीचे पलंग बिछे होंगे। खूब नींद आएगी, पर वहां मत सोना। पलंगों पर प्रहार करना – तब देखना कि वहां क्या है!"

इवान ने बुढ़िया के कुत्ते की बात ध्यान से सुनी, उसे धन्यवाद दिया, घोड़ा लिया और सूरमाओं को साथ लेकर घर की ओर चल दिया। चलते-चलते उन्हें प्यास लगी और सचमुच रास्ते के ठीक दाहिनी तरफ़ छोटी-सी झील दिखाई दी। दोनों सूरमाओं का प्यास के मारे बुरा हाल था।

"खबरदार, पानी मत पीना!" यह कहते ही इवान ने झील की सतह पर

अपनी गदा दे मारी। खून की तेज धार बह निकली। यह झील सचमुच की झील तो थी नहीं, खुद अजदहे की बहन थी। वे फिर आगे बढ़ लिए। थोड़ा आगे उन्हें दो वृक्ष दिखाई दिए। उन वृक्षों के नीचे खाने-पीने की चीजें और पलंग नहीं थे – वह तो अजदहे की बहनें ही थीं। उन्हें भी इवान ने अपनी गदा से मार डा-ला। अचानक इवान ने मुड़कर देखा – आसमान पर काली घटा सी घिरती जा रही है। पर घटा नहीं, अजदहों की मां थी! उसका मुंह गुफ़ा की तरह खुला हुआ था। एक जबड़ा आसमान पर था, तो दूसरा ज़मीन पर।

कृषकपुत्र इवान बोला:

"आओ, भाइयो, तीनों मिलकर मुक़ाबला करें, मैं अकेला इसे न मार पाऊंगा।"

लेकिन वे सूरमा तो थर-थर कांप उठे और पीठ दिखा गए।

"मैं अकेला मिट जाऊंगा," इवान ने मन ही मन सोचा। सहसा उसे याद आया कि यहीं पास में एक खूब बड़ा लोहारखाना है। उसने अपने घोड़े को एड़ लगाई और घोड़ा सरपट दौड़ाने लगा। दोनों सूरमाओं ने भी अपने घोड़े उसके पीछे-पीछे दौड़ाए – उसके बिना जाते भी तो कहां।

पलक झपकते ही वे लोहारखाने पर पहुंचे। चिल्लाए:

"दरवाज़े खोलो!"

लोहारों ने बारह लौह-द्वार खोले, तीनों अपने घोड़े सरपट दौड़ाते अन्दर पहुंचे और दरवाज़े बन्द हो गए। लेकिन अजदाहिन लोहारखाने के पास बैठ गई और अपनी अग्नि-जिह्वा से लौह-द्वारों को चाटने लगी। कृषकपुत्र इवान ने देखा कि मामला गड़बड़ है। वह लोहारों से बोला:

"सुनो, भाइयो, जल्दी से इस लोहारखाने जितना बड़ा हल बना दो और इतनी ही बड़ी संड़सी!"

पलक झपकते ही लोहार हल और संड़सी बनाने लगे। उधर अजदाहिन अपनी अग्नि-जिह्वा को लपलपाती नौवें दरवाज़े तक पहुंच चुकी थी। लेकिन लोहारों ने झट से हल और संड़सी बना ही दी।

जैसे ही अजदाहिन ने आखिरी दरवाज़े में अपना विशालकाय थूथन घुसेड़ा, इवान ने संड़सी से उसके होंठ कसकर दबा दिए और उसे हल में जोतकर बाहर ले आया। अजदाहिन से खेत जोतवाने लगा। झोंपड़ी के आकार की बड़ी-बड़ी चट्टानें हल से टकराकर उलटने-पलटने लगीं।

खेत जोतने का सिलसिला तब तक चलता रहा, जब तक कि अजदाहिन बेदम होकर ज़मीन पर गिर न पड़ी।

तब इवान ने अजदाहिन को उठाकर समुद्र में फेंक दिया, अपने घोड़े को चरागाह में चरने के लिए छोड़ दिया और सूरमाओं को भगा दिया।

कृषकपुत्र इवान ने उन्हें दुतकारते हुए कहा:

"दफ़ा हो जाओ, कायरो! मदद तो दूर, मुसीबत में ही डालते हो। कहने को कुलीन घराने के हैं।"

और यह कहता हुआ वह उस घोड़े पर सवार हुआ, जो उसने अजदहे से छीना था। इवान चलता रहा, चलता रहा कि अचानक उसे एक बूढ़ा मिला। वह बिना अभिवादन किए आगे निकल गया, ज़रा ठिठककर उसने सोचा: "कितना अशिष्ट हूं मैं! उम्र में छोटा होकर भी मैंने बूढ़े दादा को अभिवादन नहीं किया। पीछे लौटना होगा..."

वह बूढ़े के पास आकर बोला:

"नमस्ते दादाजी, गुस्ताखी माफ़ हो। आपका आशीर्वाद लिए बिना आगे निकल गया था। मैं ठहरा गंवार..."

"हां, बेटे! हमेशा बड़ों का आदर करो, उन्हें अदब से सिर झुकाकर सम्मान दो... अब ज़रा ध्यान से सुनो: जब तुम घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ोगे, तो रास्ते में बैसाखीवाला एक लंगड़ा बूढ़ा तुम्हारी ओर तेज़ी से झपटकर यह कहेगा: 'शाबाश, नौजवान, तुम्हारे पास तो बढ़िया घोड़ा है, लेकिन तुम इसे दौड़ाकर भी मुझे पछाड़ न पाओगे। तुम तैश खाए बिना सब्र से काम लेना। उसके साथ दौड़ न लगाना।' और अगर रास्ते में तुम्हें कोई मिले, उसे साथ ले लेना, इनकार मत करना..."

इवान घोड़े पर सवार होकर अपनी राह चल दिया। थोड़ी दूर चलते ही उसे बैसाखी लिए एक मरियल-सा बूढ़ा दिखाई दिया। वह लंगड़ाते हुए करीब आया और इवान से बोला :

"शाबाश, नौजवान, तुम्हारे पास तो यह उम्दा घोड़ा है, मैं कमज़ोर और लंगड़ा ही सही। पर तुम घोड़ा दौड़ाकर भी मेरा पीछा नहीं कर सकते।"

"मैं तुमसे बहस न करूंगा। शायद तुम ही ठीक कहते हो..."

इवान ने अपनी बात अभी ख़त्म न की थी कि बूढ़े ने पलक झपकते ही किसी पैने तीर से हमला किया और उसे काठी से गिराकर, घोड़े पर उचककर बैठा और उड़ गया। इवान उसे मुड़कर देख भी न पाया।

यह कोई और नहीं, अजदहों का राजा ईरद था, अजदहे और उसकी बहनों का पिता।

कृषकपुत्र इवान को बड़ा गुस्सा आया।

"ठहर ज़रा, मुए अजदहे! मैं पैदल ही तेरा पीछा करूंगा!"

इवान ने गदा संभाली और पैदल ही चल पड़ा... उसका ज़ख्म दुख रहा था, अंगारे-सा दहक रहा था। ज़ख्म के कारण वह अशक्त होता जा रहा था।

"अब मैं विपत्ति में पड़ गया!" कृषकपुत्र इवान ने सोचा। "लगता है अजदहों के राजा के तीर मामूली नहीं, ज़हरीले हैं..."

वह थोड़ा और आगे बढ़ा था कि एकदम अशक्त हो गया। इवान ने सोचा :

"अब मैं अजदहों के राजा ईरद को मार न पाऊंगा। वह मुझे पल भर में मार डालेगा..."

कृषकपुत्र इवान दुख के सागर में गोते लगाता, मन मारे हुए आगे बढ़ रहा था कि रास्ते में उसे एक बूढ़ा मिला। बूढ़े की दाढ़ी ज़मीन छू रही थी। कृषकपुत्र ने उसे सिर झुकाकर अभिवादन किया। फिर वे एक दूसरे के बारे में पूछने लगे कि कौन कहां जा रहा है?

"बेटे, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा," बूढ़े ने कहा।

"लेकिन आप कौन हैं?"

"मैं कुत्तों को भगाता हूं।"

कृषकपुत्र इवान उसकी बात पर हैरान था। लेकिन उसे रास्ते में बूढ़े की सलाह याद आ गई और वह चुप रहा।

थोड़ा आगे बढ़ने के बाद उन्हें दूसरा बूढ़ा मिला। वह बोला:

"मैं हिम हूं।"

और वह भी उनके साथ हो लिया।

वे चलते रहे कि रास्ते में उन्हें तीसरा बूढ़ा मिला। वे आपस में बातें करने लगे कि कौन कहां जा रहा है। तीसरे बूढ़े ने कहा:

"मैं समुद्र की फ़सलें काटकर उनके पूले बनाता हूं।"

"चलो, चलें हमारे साथ।"

इस तरह रास्ते में और भी लोग मिलते गए। वे अपना-अपना परिचय देकर उनके साथ होते गए। चौथा व्यक्ति – "खाता, पर नहीं अघाता", पांचवां – "पीता, पर रहता प्यासा", छठा – "दौड़ लगाता, कभी न थकता", सातवां – "चाबुक मार, बीस कोस तक करूं प्रहार", आठवां – "नज़र मार, बीस कोस तक देखूं यार"।

इस तरह वे सारे के सारे लोग राजा ईरद की रियासत में पहुंच गए। राजा ईरद ने आंखें फाड़-फाड़कर देखा: "आज तक किसी भी जीव ने हमारे राज्य की सीमा के क़रीब क़दम न रखा था, और ये तो हमारे राज्य में आ धमके हैं..." उसने तुरन्त आदेश दिया कि उन पर सात हज़ार ख़ौफ़नाक से ख़ौफ़नाक कुत्ते-लकड़बग्घे उन्हें नोचने के लिए छोड़ दिए जाएं। वे कुत्ते-लकड़बग्घे भी विचित्र थे – सभी के दो-दो सिर थे। उन्हें देखते ही कृषकपुत्र इवान ने कहा:

"भाइयो, ये ख़ूंख़ार कुत्ते हमें फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देंगे! मैं अशक्त हो चुका हूं। मुश्किल से पांव घसीटकर चल रहा हूं। उनका मुक़ाबला मैं कैसे करूंगा?"

"मैं जो हूं – खूंखार कुत्तों को भगाता हूं," पहलेवाले बूढ़े ने कहा।

पलक झपकते ही उस बूढ़े ने सारे के सारे ख़ौफ़नाक कुत्तों को मारकर उनका पहाड़ लगा दिया। अजदहों के राजा ईरद ने देखा कि उसके अत्यन्त शक्तिशाली कुत्ते दम तोड़ चुके हैं। और वे लोग बढ़ते आ रहे हैं। वे उसके घर के क़रीब आ रहे हैं, बाड़े में घुस आये हैं। जैसे ही वे बड़े-बड़े लौह द्वारों को पार कर अन्दर पहुंचे, दरवाज़े अपने आप बन्द हो गए। और वे मानो विशाल लौह-गृह में क़ैद हो गए। अजदहों के राजा ईरद ने उन्हें जलाकर ख़ाक करने का आदेश दिया।

लौह-गृह के चारों तरफ़ लकड़ियों का पहाड़ लगाकर आग लगा दी गई, ताकि कोई बचकर न जाने पाए। इसी वक़्त हिमबाबा ने अपना काम शुरू कर दिया। उनके प्रभाव से लौह-गृह तपकर लाल होने के बजाय बर्फ़-सा ठण्डा हो गया। लोहे की दीवारों पर महीन-महीन हिमकण दिखाई पड़ने लगे। और उधर राजा ईरद के कारिन्दों ने सारे जंगल की लकड़ियां जलाकर ख़ाक कर डालीं। अजदहों के राजा ईरद ने आदेश दिया:

"दरवाज़े खोल दो, मेरा दुश्मन कृषकपुत्र इवान जलकर ख़ाक हो चुका होगा। उसकी राख उठाकर बाहर फेंक दो।"

लौह-द्वार खोले गए, लेकिन वे सभी जीवित थे। इवान ने कहा:

"तुम कैसे निर्दयी राजा हो – हम लोगों को ठण्डे घर में ठहरा दिया, गनीमत है कि ठंड से अकड़े नहीं..."

"कुछ भी हो, अब तेरा सर कलम किया जाएगा। मैं जानता हूं कि तेरे जिस्म में ज़हर फैल चुका है और अब तू मेरा मुकाबला नहीं कर सकता," यह कहते हुए मन में सोचने लगा: "ख़ैर, इसकी जान तो बाद में भी ली जा सकती है", और वह बोला:

"रात भर में समुद्र की फ़सल काटो और उसके पूले बनाकर रख दो। अगर काम हो गया, तो जान की ख़ैर समझना। नहीं तो गर्दन क़लम कर दी जाएगी!"

यह कहकर ईरद सो गया। और उस बूढ़े ने जो समुद्र की फ़सल काटता था, रात भर में फ़सल काटी और पूले बना दिए। ईरद सुबह सोकर उठा, देखा कि कहीं एक बूंद पानी तक नहीं है। राजा ईरद को बड़ा आश्चर्य हुआ। सोचने लगा: "कैसा चमत्कार है!" तब उसने दूसरा काम दिया:

"मेरे पास जितने भी मवेशी हैं, उन्हें काटकर तुम्हारे लिए खाना पकाया जाएगा, अगर सब खा जाओगे, तो अपनी ख़ैर समझना, नहीं तो..."

कृषकपुत्र इवान ने सोचा: "काश, मेरा ज़ख्म ठीक हो जाता, तब मैं सताने का मज़ा चखाता!" ईरद की क़ैद में एक बहुत सुन्दर युवती थी। जब उसे घायल इवान का पता चला तो उसने उसका इलाज शुरू किया—उसे तरह-तरह की चमत्कारिक जड़ी-बूटियों और दवाओं की जानकारी थी। इस बीच राजा ईरद के सारे जानवरों को काटकर उनका मांस पकाया गया। कई हज़ार ड्रमों में तरह-तरह के पेय भरे गए। खाने की मेज़ पर वे बैठे ही थे कि कृषकपुत्र इवान उदास होकर गहरे सोच में डूब गया: "इत्ता ढेर सारा खाना और हज़ारों ड्रम पेय हम लोग तीन साल में भी ख़त्म न कर पाएंगे!" पर तभी उसे यह ध्यान आया कि उसके साथ दो बूढ़े भी मौजूद हैं। एक है "खाता, पर नहीं अघाता", दूसरा है "पीता, पर रहता प्यासा"। बस, कहने भर की देर थी—वे दोनों बूढ़े खाने-पीने में जुट गए और सब कुछ चट कर गए।

राजा ईरद उन्हें आंखें फाड़कर देख रहा था। वह समझ न पा रहा था कि क्या करे? उन्हें मारना ही चाहता था कि उसने थोड़ा और सता लेने का निर्णय किया:

"कौन कल सुबह सबसे पहले समुद्र का पानी लेकर आएगा—मेरी बेटी सुवेगा या तुम लोग? अग़र तुम पहले पानी ले आओगे, तो अपनी जान की ख़ैर समझना, नहीं, तो..."

इवान सोच में पड़ गया:

"काश, जल्दी से मेरा घाव ठीक हो गया होता..."

लेकिन बन्दिनी युवती ने कहा:

"अफ़सोस मत करो, घाव ठीक हो चला है।"

रात किसी तरह बीती। सुबह होते ही राजा ईरद की बेटी सुवेगा ने झपट-चालवाले जूते पहने, अदृश्य रहनेवाली टोपी लगाई, बाल्टी उठाई और क्षण भर में समुद्र के किनारे पहुंच गई। उधर इवान और उसके साथी बैठे सोच रहे थे कि इस मुसीबत से कैसे निपटा जाए? यकायक इवान को "दौड़ लगाता, कभी न थकता" बूढ़े का ख्याल आया। वह बूढ़ा झपटकर समुद्र की ओर भागा और उसने ईरद की बेटी सुवेगा से पहले अपनी बाल्टी पानी से भर ली। पर लड़की कम चालाक न थी। उसने आव देखा न ताव, बस एक चुटकी निद्राभस्म बूढ़े के पैरों पर छिड़क दी और बूढ़ा तुरन्त गहरी नींद सो गया।

उधर ईरद की लड़की ने बाल्टी उठाई और अपने घर की ओर चल दी, "दौड़ लगाता, कभी न थकता" होश खोए रास्ते में पड़ा था। लेकिन "नज़र मार, बीस कोस तक देखूं यार" तो यह सब माजरा देख ही रहा था। वह समझ गया कि "दौड़ लगाता, कभी न थकता" लड़की की चाल का शिकार हो गया है। तब "चाबुक मार, बीस कोस तक करूं प्रहार" ने अपना करिश्मा दिखाया। "चाबुक मार" ने अपनी खूब लम्बी चाबुक उठाई और नींद में खोए बूढ़े के ऊपर दे मारी। बूढ़ा समझ गया कि काम गड़बड़ा गया है – उसने झट से बाल्टी उठाई और पवन चाल से उड़ चला। अजदहे की बेटी सुवेगा घर पहुंच ही रही थी कि बूढ़ा उससे पहले ही बाल्टी भर पानी लेकर पहुंच गया।

ईरद ने देखा कि दुनिया का ऐसा कोई काम नहीं, जिसे ये न कर पाएं, उसने म्यान से तलवार निकाली और हुक्म दिया कि इन सभी को घसीटकर लौह खलिहान में लाया जाए।

लौह खलिहान की ओर इवान चल दिया। बन्दिनी युवती ने कहा:

"इवान, फ़िक्र मत करो। तुम्हारा घाव ठीक हो चुका है।"

इवान को लौह खलिहान में ले गए और जैसे ही राजा ईरद ने अपनी तलवार से उस पर प्रहार करना चाहा, वैसे ही इवान ने ईरद को उठाकर राजमहल की छत पर फेंक दिया! राजा ईरद का तुरन्त दम निकल गया। तब इवान ने उस

घोड़े को ले लिया, जिसे अजदहों के राजा ने उसे धोखा देकर छीना था। बन्दिनी युवती भी उसके साथ चलने के लिए तैयार थी। तब बूढ़ों ने इवान से विदा लेते हुए कहा:

"बेटे, हमने तुम्हारी भरसक मदद की और अब दूसरे भले लोगों की मदद के लिए हम अपनी-अपनी राह चलते हैं।"

उन सबने इवान को गले लगाया और फिर अपनी राह चल पड़े।

कृषकपुत्र इवान ने उस घोड़े को लाकर राजा को सौंप दिया, जो अंगारे खाए, लपटें पिए और जब दौड़े तो बीस-बीस कोस तक धरती कांपे और बलूत की पत्तियां झड़ने लगें।

लेकिन कुलीन घराने के उन सूरमाओं ने, जिन्हें राजा ने इवान की मदद के लिए भेजा था, उस सुन्दर युवती को देख लिया, जो कभी अजदहों के राजा ईरद के क़ैदखाने में बन्द थी, राजा के पास आकर बोले:

"महाराज, यह सुन्दर युवती मामूली कृषकपुत्र के योग्य नहीं। वह कुलीन घराने के ही किसी सूरमा की पत्नी बनकर उसके घर की शोभा बढ़ा सकती है।"

कृषकपुत्र इवान के चेहरे का रंग फीका पड़ गया:

"महाराज, मैंने इस युवती को क़ैद से छुड़ाया है। हम लोग आपस में प्रेम भी करते हैं। यह मेरी पत्नी ही बनकर रहेगी।"

"नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते," राजा ने कहा।

तब इवान आग-बबूला होकर बोला:

"तुमने मुझे मुंह मांगा इनाम देने का वचन दिया था, कभी न रुष्ट होने का वायदा भी किया था। मैंने जान हथेली पर रखकर दैत्यों—अजदहों—का मुक़ाबला किया और उन्हें मार डाला। बूढ़ी अजदाहिन को समुद्र में फेंका, राजा ईरद को मौत के घाट उतारा। और तुम मेरी भलमनसाहत की ऐसी क़ीमत चुकाते हो, ऐसा वायदा निभाते हो! ठहरो, अब तुम्हारी खैर नहीं! मैं तुम्हें और तुम्हारे वंश को एक चुटकी में मसलकर खत्म कर दूंगा!"

यह कहते हुए इवान अपनी गदा घुमाने लगा, देखते ही देखते सारे पेड़ झुक गए और राजमहल की दीवारें हिलने लगीं।

राजा भयभीत हो गया और डर के मारे एक शब्द न बोला। तब कृषकपुत्र इवान ने अपने घर लौटकर उस सुन्दरी से शादी की और वे खुशी-खुशी जीवन बिताने लगे। लेकिन इवान ने क़सम खाई कि वह राजाओं-महाराजाओं के वायदे पर अब कभी विश्वास न करेगा।

लिण्डन के पेड़ और लालची बुढ़िया की कहानी

यह कहानी बहुत पुरानी है। एक थे बूढ़े बाबा और एक थी बुढ़िया। दोनों बहुत ग़रीब थे। रूखा-सूखा खाते और किसी तरह गुज़र-बसर करते। एक दिन बुढ़िया ने कहा :

"अरे, सुनते हो, जाओ, जंगल से लिण्डन का पेड़ काट लाओ। कम से कम जाड़े में तापने का काम देगा।"

"अच्छा, तो मैं चला," बूढ़े ने लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी उठाई और जंगल की ओर चल पड़ा।

बूढ़ा जंगल में पहुंचा। वहां उसने एक अच्छा-सा लिण्डन का पेड़ चुन लिया। बूढ़े ने कुल्हाड़ी उठाई ही थी कि लिण्डन का पेड़ इनसान की आवाज़ में गिड़गिड़ाते हुए बोला :

"अरे, भले मानस! मुझे काटो मत! मैं तुम्हारे दुख में काम आऊंगा।"

बूढ़े ने डर के मारे कुल्हाड़ी नीचे कर ली। कुछ देर तक सोचता रहा और घर की तरफ़ चल दिया।

बूढ़ा वापस घर लौटा और उसने सारा क़िस्सा बुढ़िया से कह सुनाया। लेकिन बुढ़िया ने कहा :
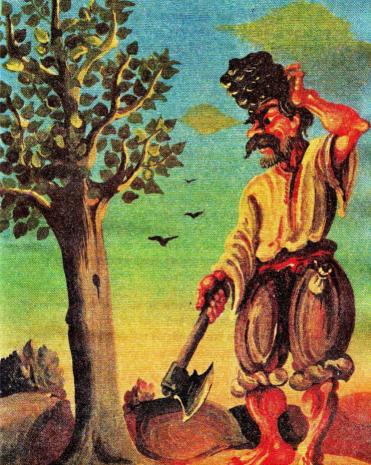
"तुम कैसे मूरख हो! उलटे पैर वापस जाओ और लिण्डन के पेड़ से कहो कि मुझे घोड़ागाड़ी चाहिए। पैदल चलते-चलते हमारे तलवे घिस गए हैं।"

"अगर ऐसा है तो मैं चला," बूढ़े ने यह कहते हुए टोपी पहनी और चल दिया।

बूढ़ा लिण्डन के पेड़ तले पहुंचकर बोला:

"लिण्डन के पेड़, लिण्डन के पेड़! बुढ़िया ने सवारी के लिए घोड़ागाड़ी मांगी है।"

"अच्छा, घर जाओ।"

बूढ़ा झटपट घर पहुंचा। घर के दरवाज़े पर घोड़ागाड़ी खड़ी थी। घोड़ा हिनहिना रहा था।

"यह बात हुई न! अब हम भी ढंग के आदमी हो गए। लेकिन घर तो पहले जैसा खस्ताहाल है। जाओ, अब एक घर भी मांग लो। शायद दे ही दे।"

बूढ़े ने लिण्डन के पेड़ से एक घर भी मांग लिया।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढ़ा अपने घर की चहारदीवारी के पास आया, पर उसे पहचान न सका। पुराने घर की जगह पर नया, आलीशान घर दिखाई पड़ रहा था। बूढ़ा-बुढ़िया बच्चों की तरह खुशियां मनाने लगे।

लेकिन बुढ़िया ने फिर बूढ़े से कहा:

"क्या अच्छा होता अगर तुम ढोर-डंगर भी मांग लाए होते। तब शायद हमें और किसी चीज़ की ज़रूरत न रह जाती।"

बूढ़े ने लिण्डन के पेड़ से ढोर-डंगर भी मांगे। और लिण्डन के पेड़ ने सिर हिलाकर स्वीकृति देते हुए कहा:

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढ़ा घर पहुंचकर खुशी से फूला न समाया। घर के लम्बे-चौड़े बाड़े में तरह-तरह के ढोर-डंगर चहलक़दमी कर रहे थे।

"अब हमें और कुछ न चाहिए," बूढ़े ने बुढ़िया से कहा।

"नहीं, इतना ही काफ़ी न होगा। जाओ, खर्चने के लिए धन-दौलत तो ले आओ।"

बूढ़े ने लिण्डन के पेड़ से धन-दौलत भी मांगा।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढ़ा घर लौटा। उसने देखा कि बुढ़िया मेज़ पर बैठी अशर्फ़ियों की ढेरियां लगा-लगाकर रखती जा रही है।

"अरे बूढ़े, देखा कितने अमीर हैं हम!" बुढ़िया ने कहा। "पर यह बहुत नहीं। मैं चाहती हूं कि बस्ती के लोग हमारा रौब मानने लगें। जाओ, लिण्डन के पेड़ से कह दो कि वह ऐसा करे कि सभी लोग हमसे डरने लगें।"

फिर बूढ़ा लिण्डन के पेड़ के पास पहुंचा। और लिण्डन के पेड़ से वह सब कह सुनाया जो बुढ़िया ने कहा था।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढ़ा घर आया – घर के चारों तरफ़ बहुत-से सन्तरी उसके जान-माल की रक्षा के लिए तैनात थे। घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे। लेकिन उससे बुढ़िया की हवस कम न हुई। और लालच बढ़ा।

"अरे, बूढ़े! अब ऐसा करो कि गांव के सारे लोग हमारे ग़ुलाम बन जाएं और तो अब हमें कुछ न चाहिए। सभी कुछ मिल चुका है।"

बूढ़ा लिण्डन के पेड़ के पास आया और उसने वह सब कह सुनाया, जो बुढ़िया ने इस बार मांगा था। बड़ी देर तक वह पेड़ ख़ामोश रहा। और अन्त में बोला:

"घर जाओ और देखो।"

बूढ़ा घर पहुंचा। उसने देखा कि सारा ठाट-बाट ग़ायब हो चुका है। आलीशान घर की जगह पर वही खस्ताहाल घर है। घर के पास ही बुढ़िया खड़ी है।

सबको ग़ुलाम बनाने के लोभ की बुढ़िया को यह सज़ा दी लिण्डन के पेड़ ने।

बूढ़े की बेटी और बुढ़िया की बेटी

एक था बूढ़ा और एक थी बुढ़िया। उनके एक बेटी थी। समय आया तो बुढ़िया ने पति से कहा:

"अगर कभी तुम्हें दूसरी शादी करने का ख्याल आए तो तुम उस विधवा से शादी न करना, जो हमारे पड़ोस में अपनी बेटी के साथ रहती है। वह तुम्हारी तो पत्नी होगी, लेकिन हमारी बेटी की मां नहीं।"

"ठीक है, मैं शादी ही नहीं करूंगा," बूढ़े ने कहा।

बुढ़िया ने आंख मूंद ली और वायदे के अनुसार बूढ़ा विधुर जीवन बिताने लगा। अभी कुछ दिन ही बीते थे कि एक बार गांव की ओर आते वक़्त रास्ते में वह उस विधवा के घर जा पहुंचा, जिससे शादी करने के लिए बुढ़िया ने मना किया था। इस तरह बूढ़ा शादी न करने के वायदे को भूल गया। वह विधवा के घर में बैठकर देर तक बातें करता रहा और अन्त में उसने शादी का प्रस्ताव भी रख दिया। विधवा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह तो चाहती ही यही थी।

"मैं बहुत दिन से इन्तज़ार कर रही थी!" विधवा ने कहा।

विधवा ने घर का सारा सामान समेटा और अपनी बेटी को साथ लेकर बूढ़े के घर चली आई।

इस तरह बूढ़े की बेटी और बुढ़िया की बेटी एक ही घर में साथ-साथ रहने लगीं। लेकिन दुष्ट औरत ने बूढ़े की लड़की का सुख-चैन छीन लिया। छोटी-छोटी बात पर सौतेली बहन भी उससे झगड़ती और कलह मचाती।

अक्सर गांव के चौपाल में लड़कियां रात में एकत्रित होतीं, मिल-जुलकर काम करतीं। बूढ़े की बेटी वहां सूत कातती, लच्छियां बनाती और बुढ़िया की बेटी गुलछर्रे उड़ाती, मजे से घूमती। उसका काम में मन न लगता। वह कभी धागे उलझाती, कभी तोड़ती। सुबह तड़के वे दोनों घर को लौटतीं। अहाते की बाड़ पर पहुंचकर बुढ़िया की लड़की कहती:

"दीदी, लाओ, ये लच्छियां मुझे दे दो। मैं इन्हें संभाले रहूंगी। इतने में तुम बाड़ लांघ लोगी।"

"ठीक है।" सौतेली बहन उसे बनी हुई लच्छियां दे देती।

इधर बूढ़े की बेटी बाड़ लांघती, उधर बुढ़िया की लड़की लच्छियां लेकर अपनी मां के पास पहुंच जाती और नमक-मिर्च लगाकर खूब कान भरती कि सौतेली बेटी मटरगश्ती करती है, धागे तोड़ती और उलझाती है।

"मैंने तो सूत काता, काम निपटाया और झट से घर चली आई। और उसे देख लो! कितनी काहिल और लापरवाह है!"

बूढ़े की लड़की घर आते ही सौतेली मां की गालियां सुनती और मार खाती। फिर वह बुढ़िया सौतेली लड़की को कोसती हुई जली-कटी सुनाकर बूढ़े से शिकायत करती।

"तुम्हारी लड़की तो किसी काम की नहीं है! गुलछर्रे उड़ाती है! न कोई काम करना चाहती है, न सीखना। और तुम उसे सिर पर चढ़ाए रहते हो।"

सौतेली मां बूढ़े की बेटी को तरह-तरह से सताती, खूब ताने देती, बूढ़े के कान भरती, लेकिन वह लड़की गूंगी बनी सब सहती रहती, चुपचाप घर का काम

करती रहती। सौतेली मां को वह फूटी आंख न सुहाती। पिता को अपनी बेटी पर तरस आता। एक दिन मां-बेटी ने आपस में राय-मशविरा किया। आखिर बूढ़े की लड़की से छुटकारा कैसे पाया जाए?

सौतेली मां ने बूढ़े को दिन-रात परेशान करना शुरू कर दिया।

"तुम्हारी लड़की आलसी और काम-चोर है। वह तो कुछ करना ही नहीं चाहती। सिर्फ घूमती और सोती है। लेकिन तुम भी उसे कुछ नहीं कहते। उसे कहीं मजूरी पर ही लगा दो।"

"कहां भेजूं उसे काम करने?"

"अगर कोई रास्ता नहीं दिखता तो उसे जहां चाहो, वहां छोड़ आओ। मैं उस कलमुंही की शक्ल नहीं देखना चाहती!"

दुष्ट औरत ने बूढ़े का जीना हराम कर दिया। घर में दिन-रात क़ोहराम मचा रहता। उसे अपनी बेटी के लिए अफ़सोस होता, लेकिन वह आखिर करता ही क्या?

एक दिन पिता अपनी बेटी को साथ लेकर घर से चल पड़ा। वे दोनों एक बियावान जंगल में पहुंचे। बेटी ने कहा:

"पिताजी, अब आप लौट जाइए। मैं आगे अकेली चली जाऊंगी। कहीं तो कोई काम मिल ही जाएगा।"

"ठीक है, बेटी," पिता ने भरे गले से कहा।

पिता-पुत्री ने विदा ली। दोनों अपनी-अपनी राह चल दिए।

बूढ़े की बेटी घने जंगल से होकर गुज़रती रही। अचानक उसने सेब का एक पेड़ देखा – उजड़ा-सा, पूरा झाड़-झंखाड़ जैसा लग रहा था। आंख गड़ाकर देखो तो मुश्किल से दिखता था। सेब के पेड़ ने कहा:

"लड़की, लड़की! मेरे लिए थाला बना दो, मुझे सींच दो! मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

बूढ़े की बेटी झट से काम में जुट गई। उसने सेब के पेड़ के लिए बढ़िया-सा

थाला बनाया, निराई की और मिट्टी डालकर सिंचाई कर दी। सेब के पेड़ ने आभार प्रगट किया। लड़की आगे बढ़ चली।

वह चलती रही, चलती रही, अचानक उसे प्यास लगी। वह चश्मे के पास पहुंची। चश्मे ने कहा:

"लड़की, लड़की! तुम मुझे साफ़ कर दो, मेरे तट को संवार दो। मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

लड़की ने चश्मे का कूड़ा-कचड़ा साफ़ करके चारों तरफ़ रेत बिछाकर चश्मे को संवार दिया। चश्मे ने आभार प्रगट किया। और लड़की आगे बढ़ चली।

इसी वक़्त उसे एक कुत्ता मिला। उसके मैले-कुचैले झबरीले बाल बेहद उलझे हुए थे और उनमें ढेरों कांटे-तिनके फंसे हुए थे। इतना गंदा था वह कि उसकी ओर देखते घिन आती थी। उसने लड़की से कहा:

"लड़की, लड़की! मुझे साफ़ कर दो, मेरे बाल संवार दो। मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

लड़की ने कांटे-तिनके निकालकर कुत्ते को साफ़-सुथरा बनाया, उसके बाल संवार दिए।

"धन्यवाद, देवी!" कुत्ते ने कहा।

"धन्यवाद किसलिए?" यह कहकर लड़की आगे बढ़ चली।"

अचानक उसे एक अलावघर दिखा। टूटा-फूटा, स्याह अलावघर ठण्डा पड़ा था। उसके बग़ल में ही मिट्टी पड़ी थी। अलावघर ने कहा:

"लड़की, लड़की! मुझे झाड़ दो, बुहार दो, मिट्टी से संवार दो। मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

लड़की ने झट से अलावघर की मरम्मत करके उसे अच्छी तरह लीप-पोत दिया, उस पर तरह-तरह की फूल-पत्तियां बना दीं। अलावघर सुन्दर लगने लगा। अलावघर ने लड़की के प्रति आभार प्रगट किया। लड़की आगे बढ़ चली।

लड़की चलती रही, चलती रही, रास्ते में उसे एक औरत मिली।

"नमस्ते, बिटिया," उस औरत ने कहा।

"नमस्ते।"

"तुम कहां जा रही हो?"

"नौकरी की तलाश में हूं। शायद कहीं मिल जाए?"

"मेरे यहां नौकरी करोगी?"

"बड़ी मेहरबानी होगी।"

"यूं तो मेरे घर में कोई मुश्किल काम नहीं है। बस, जैसे मैं कहती हूं, वैसे ही करती जाओ। कर पाओगी?"

"क्यों नहीं? एक बार बता दीजिए फिर मैं खुद करती जाऊंगी।"

औरत अपने घर आकर लड़की से बोली:

"वह देखो, बड़े-बड़े पतीले रखे हैं। रोज़ सुबह-शाम इन पतीलों में पानी गरम करके कठौते में डाल दोगी, फिर उसमें आटा मिलाकर घोल तैयार करोगी। सिर्फ़ इतना ध्यान रखना कि घोल बहुत गर्म न हो! इसके बाद घर की दहलीज़ पर खड़ी होकर तीन बार ज़ोर से सीटी बजाना। सीटी की आवाज़ सुनकर तरह-तरह के जीव-जन्तु आ जाएंगे – तुम उन्हें भरपेट खाना खिला देना। हां, उनसे डरने की कोई बात नहीं – तुम्हें कोई नुक़सान न पहुंचेगा।"

लड़की ने कहा:

"आप फ़िक्र न करें। जैसे आपने कहा है, ठीक वैसे ही करूंगी।"

शाम होते ही उन्होंने खाना खाया, अलाव दहकाया और पानी गरम करके कठौते में डाला और आटा मिलाकर खाने लायक़ घोल तैयार कर दिया। उसके बाद दहलीज़ पर खड़ी होकर लड़की ने तीन बार ज़ोर से सीटी बजाई – पलक झपकते ही तरह-तरह के जीव-जन्तु वहां खाने के लिए इकट्ठे हो गए। छककर खा चुकने के बाद सभी जीव अपनी-अपनी राह चल दिए।

इस प्रकार साल भर तक बूढ़े की बेटी ने वहां नौकरी की और वह सब खुशी-खुशी करती रही, जो उसे घर की मालकिन सहेजती। एक साल समाप्त होने के

बाद मालकिन ने बूढ़े की बेटी से कहा :

"बेटी, आज तुम्हें मेरे यहां काम करते हुए एक साल हो गया है। अगर चाहो तो यहां पहले की तरह काम करती रहो। लेकिन घर जाने का इरादा हो तो मुझे कोई एतराज़ नहीं। तुमने जी लगाकर मेरे घर में काम किया है, मैं तुमसे बहुत खुश हूं।"

लड़की ने मालकिन को धन्यवाद दिया और बोली :

"मालकिन, अब मैं अपने घर जाना चाहती हूं। आपकी नेकदिली को मैं जीवन भर न भुला पाऊंगी।"

तब मालकिन ने कहा :

"जाओ, रास्ते के लिए अपनी मनपसन्द घोड़ागाड़ी ले लो।"

नेकदिल मालकिन ने तरह-तरह के क़ीमती उपहार उसकी घोड़ागाड़ी में लाद दिए और खुद उसे जंगल के किनारे तक छोड़ने आई। वहां उन दोनों ने एक दूसरे से विदा ली। मालकिन अपने घर लौट गई और बूढ़े की बेटी ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर की ओर चल पड़ी।

घोड़ागाड़ी पर सवार होकर बूढ़े की बेटी उस अलावघर के क़रीब पहुंची, जिसे उसने कभी लीप-पोतकर संवारा था। इस वक़्त अलावघर में मुलायम-मुलायम रोटियां पक रही थीं। अलावघर ने कहा :

"लड़की, लड़की! गरम-गरम रोटियां लेती जाओ। तुमने मुझे लीप-पोतकर संवारा था।"

लड़की ने आभार प्रगट किया और जैसे ही वह अलावघर के सामने पहुंची रोटियां खुद-ब-खुद उछल-उछलकर घोड़ागाड़ी में गिरने लगीं। अलावघर का दरवाज़ा बन्द हो गया और लड़की आगे बढ़ गई।

घोड़ागाड़ी पर सवार होकर बूढ़े की बेटी चली जा रही थी। रास्ते में उसे कुत्ता दिखलाई दिया। उसके गर्दन पर चमचमाती हुई एक खूबसूरत-सी हमेल लटकी हुई थी। कुत्ता दौड़ता हुआ घोड़ागाड़ी के पास आया और बोला :

"लड़की, लड़की! तुम्हारे लिए उपहार लाया हूं। याद है, तुमने मेरे कांटे निकालकर बाल संवारे थे, मुझे प्यार से सहलाया था।"

लड़की ने उपहार ले लिया और आभार प्रगट करके खुशी-खुशी आगे बढ़ चली।

घोड़ागाड़ी चलती रही, चलती रही कि अचानक उसे ज़ोर से प्यास लगी। गला सूखने लगा।

"उस चश्मे का पानी, जिसे मैंने साफ़ किया था! वहां छककर पानी पिएंगे, प्यास बुझ जाएगी," बूढ़े की बेटी ने सोचा।

लड़की चश्मे के पास आई। उसने देखा कि चश्मे में लबालब पानी भरा है। चश्मे के किनारे सोने की एक बाल्टी और सोने का एक लोटा रखा है।

चश्मे ने कहा:

"छककर पानी पी लो और बाल्टी-लोटा साथ लेती जाओ।"

लड़की पानी पीने लगी। लेकिन यह तो शर्बत था। ऐसा जायकेदार कि उसने कभी न पिया था।

लड़की ने सोने की बाल्टी भर ली और लोटा ले जाना नहीं भूली। घोड़ा-गाड़ी पर सवार होकर फिर चल पड़ी।

रास्ते में उसे सेब का पेड़ मिला। ऐसा घना और हरा-भरा कि बस देखते ही रह जाओ। उस पेड़ पर सेब भी कोई मामूली न थे। सोने-चांदी के सेब लदे हुए थे। सेब के पेड़ ने कहा:

"लड़की, लड़की! सेबों का उपहार लेती जाओ। याद है, तुमने थाला बनाया था, निराई की थी, मेरा जीवन संवारा था।"

लड़की ने पेड़ के प्रति आभार प्रगट किया और अपनी घोड़ागाड़ी उस पेड़ के नीचे खड़ी कर दी। सेब अपने आप टूट-टूटकर घोड़ागाड़ी में गिरने लगे।

बूढ़े की बेटी खुशी-खुशी घर आ पहुंची और आवाज़ देते हुए बोली:

"पिताजी! बाहर आइए! देखिए मैं क्या लाई हूं!"

बूढ़ा अपनी झोंपड़ी से निकलकर बाहर आया। उसने देखा कि बेटी आ गई है। बूढ़े की खुशी का ठिकाना न रहा। झट से बेटी के पास आकर बोला :

"अरी, बिटिया रानी! इतने दिन तुम कहां रहीं?"

"नौकरी करने गई थी, पिताजी," बेटी ने कहा। "दौलत अन्दर ले चलिए।"

और धन-दौलत के क्या कहने? गाड़ी भर सामान लदा था। इसके अलावा क़ीमती हमेल भी था!

पिता-पुत्री सामान ढो-ढोकर अन्दर ले जाने लगे। अच्छी-अच्छी, सजी-संवरी चीज़ें! बस, देखते ही बनती थीं। सौतेली मां की छाती पर सांप लोट गया। उसने देखा कि बूढ़े की बेटी तरह-तरह की क़ीमती चीज़ें लेकर आई है। वह तो बूढ़े के पीछे पड़ गई और ज़िद करने लगी :

"मेरी बेटी को भी वहीं छोड़ आओ, जहां अपनी बेटी को ले गए थे!"

बुढ़िया ने तब तक बूढ़े का पीछा न छोड़ा, जब तक कि उसने हामी न भर दी।

बूढ़े ने कहा :

"बेटी से कह दो तैयारी करे, उसे भी छोड़ आता हूं।"

कहने भर की देर थी। बुढ़िया की बेटी झटपट तैयार हो गई। शीघ्र ही बेटी ने बुढ़िया से विदा ली। और बूढ़ा चल पड़ा बुढ़िया की बेटी को साथ लेकर।

जंगल में पहुंचकर बूढ़ा बोला :

"जाओ, बेटी, अपना सफ़र तय करो। अब मैं घर जाता हूं।"

"ठीक है," बुढ़िया की बेटी ने कहा।

वे दोनों अपनी-अपनी राह चल पड़े : बुढ़िया की बेटी जंगल की तरफ़ चल पड़ी और बूढ़ा घर लौट आया।

बुढ़िया की बेटी घने जंगल से होकर गुज़रती रही। अचानक उसने सेब का एक पेड़ देखा – उजड़ा-सा, भूरा झाड़-झंखाड़ जैसा लग रहा था। आंख गड़ाकर देखो तो मुश्किल से दिखता था।

"लड़की, लड़की! मेरे लिए थाला बना दो, मुझे सींच दो! मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

"भला मैं तेरे लिए अपने हाथ मैले करूंगी! मेरे पास वक़्त नहीं है," यह कहकर वह आगे बढ़ चली।

थोड़ा आगे बढ़ने पर उसे एक चश्मा दिखाई पड़ा। ऐसा मैला कि उसकी सतह हरी काई से ढंकी हुई थी।

चश्मे ने कहा :

"लड़की, लड़की! मुझे साफ़ कर दो, मेरे तट को संवार दो! मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

"अरे, क्यों मेरा सिर खाए जा रहे हो! मेरे पास इतना वक़्त नहीं – मुझे जाना है!"

बुढ़िया की लड़की ने दो टूक जवाब दिया और आगे बढ़ गई।

चलते-चलते वह अलावघर के पास आई। अलावघर ने कहा :

"लड़की, लड़की! मुझे झाड़ दो, बुहार दो, मिट्टी से संवार दो। मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

"तूने मुझे बेवक़ूफ़ समझ रखा है। मैं भला तुझे छूकर अपने हाथ मैले करूंगी," बुढ़िया की लड़की ने कहा और झल्लाती, पैर पटकती आगे बढ़ चली।

रास्ते में उसने एक कुत्ता देखा, ऐसा मैला-कुचैला कि उसे देखकर घिन आए। कुत्ते ने लड़की से कहा :

"लड़की, लड़की! मुझे साफ़ कर दो, मेरे बाल संवार दो। मैं इस उपकार का बदला चुकाऊंगा, तुम्हारे काम आऊंगा!"

लड़की ने कुत्ते को देखकर कहा :

"अरे, सोच-समझकर बोला कर! तुझे तो देखकर वैसे ही घिन आती है। भला हाथ कौन लगाए? कम से कम मुझसे उम्मीद न करना!" यह कहकर वह आगे बढ़ गई।

थोड़ी दूर चलने के बाद उसे वही औरत रास्ते में मिली, जिसके घर में बूढ़े की बेटी ने चाकरी की थी।

"नमस्ते, बिटिया," औरत ने कहा।

"नमस्ते, मौसी।"

"कहां जा रही हो?" औरत ने पूछा।

"काम की तलाश में हूं।"

"मेरे यहां नौकरी करोगी?"

"बड़ी मेहरबानी होगी। लेकिन क्या करना होगा?"

"आसान-सा काम है, बेटी! बस, जैसे मैं कहती हूं, वैसे ही करती जाओ। कर पाओगी?"

"क्यों नहीं? एक बार बता दीजिये, बाद में तो मैं खुद ही कर लूंगी!"

"अच्छा तो सुनो! उन पतीलों को देख रही हो? रोज सुबह-शाम इन पतीलों में पानी गरम करके कठौते में डालना है, फिर उसमें आटा मिलाकर घोल तैयार करना है। सिर्फ़ इतना ध्यान रखना कि घोल बहुत गर्म न हो! इसके बाद घर की दहलीज़ पर खड़ी होकर तीन बार ज़ोर से सीटी बजाना। सीटी की आवाज़ सुनकर तरह-तरह के जीव-जन्तु आ जाएंगे – तुम उन्हें भर पेट खाना खिला देना। हां, उनसे डरना मत, तुम्हें कोई नुक़सान न होगा। बोलो, यह काम कर लोगी?"

"जी, कर लूंगी।"

शाम होते ही बुढ़िया की बेटी ने पानी गरम करने के लिए आग पर पतीले रख दिए, जब पानी खौलने लगा तो उसने तौल भर आटा उसमें डाल दिया। देखते ही देखते जानवरों का खाना आटे की गाढ़ी लेई बन गया। इस लेई को उसने जानवरों के कठौते में उड़ेल दिया और खुद जाकर दहलीज़ पर खड़ी हो गई। उसने एक बार ज़ोर से सीटी बजाई, दो बार और तीसरी बार... पलक झपकते ही तरह-तरह के वन्य जीव वहां आने लगे और जैसे ही वे खौलती हुई

लेई में मुंह डालते, पट से गिरकर मर जाते! इस तरह सारे जानवर वहीं ढेर हो गए। खौलती हुई लेई ने उन्हें झुलसा डाला।

इधर बुढ़िया की लड़की ने देखा कि सारे जीव-जन्तु भर पेट खाकर सो गए हैं, उठते ही नहीं हैं। लड़की ने मालकिन से कहा:

"मालकिन, कैसे अजीब जानवर हैं—खाकर पसर गए, उठते ही नहीं हैं।"

"क्या बकती हो?" मालकिन ने चिल्लाकर कहा और झपटकर कठौते के क़रीब आ पहुंची।

लेकिन वहां तो सभी जानवर मरे पड़े थे। मालकिन ने रोते-कलपते हुए सिर पकड़ लिया। उसने चीखते हुए कहा:

"बाप रे बाप! अरे यह क्या किया! तूने तो सभी को मार डाला!"

वह देर तक दहाड़ें मार-मारकर रोती रही, बुढ़िया की लड़की को कोसती रही। लेकिन पछताने से होता भी क्या? मालकिन ने मरे हुए जानवरों को एक कोठरी में बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया।

इस तरह रो-पीटकर बुढ़िया की बेटी का एक साल पूरा हुआ। मालकिन ने बुढ़िया की बेटी को यात्रा के लिए मरियला घोड़ा और जर्जर गाड़ी दी। और उन मरे हुए जानवरों को खूब बड़ी-सी गठरी में बांधकर लड़की के साथ गाड़ी में भेज दिया।

बूढ़े की बेटी उस अलावघर के पास पहुंची। उसे ज़ोर से भूख लगी थी। और अलावघर में लाल-लाल, मुलायम रोटियां पक रही थीं। बुढ़िया की बेटी का जी ललचाया। जैसे ही उसने रोटी की ओर हाथ बढ़ाया—वे कूद-कूदकर अलावघर के अंदर खिसक गईं। अलावघर का दरवाज़ा फटाक से खुद-ब-खुद बन्द हो गया। तब अलावघर ने कहा:

"लड़की, तुमने मुझे संवारने से इनकार किया था—जाओ, तुम्हें रोटियां नहीं मिलेंगी!"

लड़की रोती हुई आगे बढ़ चली।

रास्ते में उसे खूब ज़ोर से प्यास लगी। उसने देखा कि चश्मे में पानी वह रहा है। जैसे ही वह पीने के लिए आगे बढ़ी कि अचानक चश्मा सूख गया। चश्मा फुसफुसाते हुए बोला :

"लड़की, तुमने मेरी सहायता नहीं की – जाओ, तुम्हें पानी नहीं मिलेगा!"

लड़की रोती हुई आगे बढ़ चली।

घोड़ागाड़ी पर सवार होकर वह सेब के पेड़ तक पहुंची। पेड़ सोने-चांदी के सेबों से लदा हुआ था। लड़की ने सोचा :

"मां के लिए सेब तोड़ लूं।"

जैसे ही लड़की सेब तोड़ने के लिए लपकी, सारे सेब ऊपर हो गए। तब सेब का पेड़ बोला :

"लड़की, तुमने थाला नहीं बनाया, सिंचाई नहीं की – जाओ, तुम्हें सेब नहीं मिलेगा!"

लड़की रोती हुई आगे बढ़ चली।

रास्ते में कुत्ता मिला। उसकी गर्दन पर चमचमाती हुई एक सुन्दर-सी हमेल लटक रही थी। बुढ़िया की लड़की उस कुत्ते की तरफ़ दौड़ी ताकि हमेल छीन सके। लेकिन कुत्ते ने कहा :

"लड़की, तुमने न मुझे सहलाया, न मेरे बाल ही संवारे – यह माला तुम्हें नहीं मिलेगी!"

यह कहते हुए कुत्ता वहां से भाग गया। बुढ़िया की बेटी रोने लगी।

इस तरह मरियल घोड़े और जर्जर गाड़ी पर सवार होकर वह लड़की अपने घर पहुंची और बूढ़े-बुढ़िया को पुकारने लगी :

"लो, ले लो माल-मत्त।"

बूढ़ा-बुढ़िया झपटकर झोंपड़ी से बाहर आए, हाथ पकड़कर बेटी को खुशी-खुशी अन्दर ले गए। घोड़ागाड़ी पर लदी गठरी उतारी गई। उसे अन्दर लाकर खोला गया। लेकिन यह क्या? माल-खज़ाने के नाम पर उस गठरी में मरे हुए

मेंढक, छिपकलियां और सांप मिले। बुढ़िया सिर पीटकर चिल्लाई :

"अरी, तू यह सब क्या उठा लाई है?"

तब बुढ़िया की लड़की ने सारा क़िस्सा कह सुनाया। यह सुनकर बुढ़िया ने कहा :

"आग लगे तेरी कमाई को। अच्छा अब तू घर की रोटी तोड़। मेरी सौत की बेटी माल-खज़ाने लाए और तू लाए मरे हुए सांप-बिच्छू। गनीमत है कि तू सही-सलामत घर लौट आई।"

इस तरह बुढ़िया और उसकी बेटी रूखा-सूखा खाकर ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं... बूढ़े की बेटी का ब्याह हो गया और बुढ़िया की बेटी कुंवारी ही बैठी है।

तीन भाई

तीन भाई अनाथ हो गए। न उनके मां-बाप थे, न घर-द्वार। तीनों भाई अपनी ग़रीबी से तंग आकर गांव-गांव, डगर-डगर रोज़ी-रोटी की तलाश में निकल पड़े। वे सोचते हुए चले जा रहे थे: "काश, किसी भले आदमी के यहां काम मिल जाता!" अचानक उन्हें एक बहुत बूढ़ा राहगीर दिखाई दिया। उसकी दाढ़ी खूब लम्बी और सफ़ेद थी। बूढ़े ने भाइयों के क़रीब आकर पूछा:

"बच्चो, कहां जा रहे हो?"

भाइयों ने उत्तर दिया:

"मजूरी की तलाश में।"

"क्या तुम्हारे पास अपनी खेतीबारी नहीं है?"

"नहीं," भाइयों ने उत्तर दिया। "काश, हमें कोई भला मालिक मिल जाता, उसके यहां हम लोग मेहनत से काम करते और अपने पिता की तरह उसे सम्मान देते।"

बूढ़ा सोच में पड़ गया। फिर बोला:

"आज से तुम लोग मेरे बेटे हुए और मैं तुम्हारा पिता। मैं तुम लोगों को सहारा दूंगा, ईमानदारी और सच्चाई का रास्ता दिखाऊंगा। बस, तुम लोग अपना फ़र्ज़ निभाते चलना, मेरी सीख को अमल में लाना।"

अनाथ भाइयों ने अपनी सहमति प्रगट की और बूढ़े के साथ चल पड़े। वे बियाबान जंगलों और असीम मैदानों को पार करते हुए चलते रहे। वे चलते रहे, आगे बढ़ते रहे कि उन्हें राह में एक सुन्दर-सा सफ़ेद घर दिखाई दिया, क़रीने से सजा-संवरा, उसके चौतरफ़ा तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। क़रीब ही चेरी की बग़िया थी और चेरी की बग़िया में एक युवती थी – हूबहू रूप की रानी, सपनों की शहज़ादी और फूलों से नाज़ुक बदनवाली। उसे देखते ही बड़ा भाई मोहित हो गया। वह बोला:

"काश, ऐसी ही रूप की रानी मेरी पत्नी होती! और दहेज में गाय-बैल भी बहुत-से मिलते!"

यह सुनते ही बूढ़े ने कहा:

"तो आओ। तुम्हारा रिश्ता किए देते हैं। तुम्हें पत्नी मिल जाएगी, दहेज में गाय-बैल भी मिलेंगे। ख़ुशी-ख़ुशी ज़िन्दगी गुज़ारो। बस, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।"

वे लोग लड़की के यहां पहुंचे, चट मंगनी, पट ब्याह, ख़ुशियां मनाई गईं। इस तरह बड़ा भाई घर का मालिक बन गया और अपनी जवान पत्नी के साथ उस घर में रहने लगा।

बूढ़ा अपने मुंहबोले बेटों को साथ लेकर आगे चल पड़ा। वे पहले की तरह बियाबान जंगलों और असीम मैदानों को पार करते हुए चलते रहे। चलते रहे, आगे बढ़ते रहे कि उन्हें रास्ते में एक ख़ूबसूरत-सा, चमचमाता हुआ घर दिखाई दिया। घर के बग़ल में एक तालाब था और तालाब किनारे पनचक्की लगी थी। घर के पास एक प्यारी युवती अपने धुन में मगन कुछ करती जा रही थी। ऐसी कार्य-निपुण युवती को देखते ही मंझले भाई ने कहा:

"काश, ऐसी ही युवती मेरी पत्नी होती! दहेज में तालाब और पनचक्की मिल जाती। मैं मज़े से चक्की चलाता, गेहूं पीसता। चैन से ज़िन्दगी गुज़ारता और सन्तुष्ट रहता।"

बूढ़े ने लड़के से कहा:

"तो आओ, तुम्हारी ही मर्ज़ी सही!"

वे सब उस घर में पहुंचे। बूढ़े ने शादी तय कर दी और जल्द ही उन दोनों का धूम-धाम से विवाह कर दिया गया। मंझला भाई भी घर का मालिक बनकर अपनी जवान पत्नी के साथ वहीं रहने लगा। विदा लेते हुए बूढ़े ने कहा :

"बेटे, खुश रहो। बस, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।"

वे आगे चल पड़े। छोटा भाई और बूढ़ा – दोनों साथ-साथ चले जा रहे थे। अचानक उन्हें एक मामूली-सी झोंपड़ी दिखाई पड़ी। उषा की लाली जैसी सुन्दर लड़की उस झोंपड़ी में से बाहर निकल रही थी। वेशभूषा से वह बहुत ग़रीब लग रही थी। उसके फटे-पुराने कपड़ों पर कई-कई पैबन्द थे।

छोटे भाई ने कहा :

"काश, यह लड़की मेरी पत्नी होती! हम दोनों साथ-साथ मेहनत करते, हमारे यहां खाने भर का अनाज होता। और तब हम दीन-दुखियों की भरसक मदद करते : खुद खाते और दूसरों को भी खिलाते।"

तब बूढ़े ने कहा :

"शाबाश, बेटे! ऐसा ही होगा। पर देखो, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।"

छोटे भाई की भी शादी कर दी गई। और बूढ़ा अपनी राह चल पड़ा।

इधर तीनों भाई अपनी-अपनी तरह ज़िन्दगी को जीने लगे। बड़ा भाई इतना अमीर हो गया कि उसने अपने लिए अच्छे से अच्छे घर बनाए और अशर्फ़ियां इकट्ठी करने लगा। बस, दिन-रात यही सोचा करता कि और ज्यादा अमीर कैसे बन जाए, कैसे ज्यादा अशर्फ़ियां एकत्रित की जाएं। ग़रीबों की मदद या उन्हें सहारा देने की बात तो वह सपने में भी न सोचता था। बेहद कंजूस हो गया था।

मंझला भाई भी दौलतवान हो गया। उसके यहां मज़दूर काम करने लगे और वह खुद पड़े-पड़े ऐशो-आराम करता। बस, खाता-पीता और हुक्म चलाता रहता।

सबसे छोटा भाई बड़ी शान्ति से अपनी गुज़र-बसर कर रहा था। घर-गृहस्थी में जब कुछ होता, वह दूसरों से मिल-बांटकर खाता। जब कुछ न होता, तब भी सन्तोष करता और कभी अपनी परेशानियों का रोना न रोता।

इस बीच बूढ़े बाबा घूम-घूमकर दुनिया का भ्रमण करते रहे। एक दिन उन्हें अपने मुंहबोले बेटों का ख्याल आया। उन्होंने उनकी खोज-खबर लेनी चाही – बेटे कैसे जी रहे हैं और सच्चाई के रास्ते से भटके तो नहीं हैं? उन्होंने एक खूब बूढ़े भिखारी का भेस बनाया और अपने सबसे बड़े बेटे के घर जा पहुंचे, बड़े दैन्य-भाव से झुकते हुए गिड़गिड़ाकर बोले:

"जुग-जुग जिओ, बेटे, इस ग़रीब बूढ़े को खाना खिला दो।"

लेकिन बेटे ने कहा:

"अरे बूढ़े, तू हट्टा-कट्टा तो दिख रहा है। खाना चाहता है तो जाओ, मेहनत-मजूरी करो। अभी मैं खुद अपने पैरों पर किसी तरह खड़ा हुआ हूं। चलते बनो।"

सच यह था कि बड़े भाई के पास तिजोरियों में धन भरा पड़ा था, नए-नए घर बनते जा रहे थे, उसकी दुकानों में माल ही माल था, गोदामों में अनाज पटा पड़ा था। रुपये-पैसे इतने थे कि उन्हें गिनने की फ़ुर्सत न थी। लेकिन वह मन का बड़ा दरिद्र था। भिखारी को भीख तक न दे सका।

बूढ़े बाबा खाली हाथ उसके द्वार से चले गए। थोड़ी दूर जाकर एक टीले पर रुके और पलटकर बड़े भाई के घर-द्वार पर जो नज़र डाली, तो वह तुरन्त धू-धू करके जल उठा।

बूढ़े बाबा मंझले भाई के पास पहुंचे। उसके पास खेती-किसानी अच्छी थी, तालाब, चक्की, घर-द्वार – सब था। खुद चक्की पर बैठा था। बूढ़े बाबा ने झुककर कहा:

"बेटा, भगवान तुम्हारा भला करे। एक चुटकी आटा दे दो! मैं भिखारी हूं, दाने-दाने को तरस रहा हूं।"

"भली कही," दूसरे बेटे ने कहा। "मेरे पास तो खुद अपने लिए आटा नहीं है। फिर तुम जैसे भिखारी तो दर-दर मारे-मारे फिरते हैं। आखिर किस-किस का पेट भरा जाए?"

बूढ़े बाबा खाली हाथ उसके द्वार से चले गए। थोड़ी दूर जाकर एक टीले पर रुके और पलटकर देखा तो पनचक्की और घर धू-धू करके जल उठे।

अब बूढ़े बाबा छोटे भाई के यहां पहुंचे। वह तो पहले ही ग़रीब था, झोंपड़ी

छोटी-सी थी, लेकिन साफ़-सुथरी।

"बेटा, भगवान तुम्हारा भला करे! मुझे भूख लगी है, रोटी का टुकड़ा-दो-टुकड़ा दे दो!"

छोटे भाई ने कहा:

"बाबा, झोंपड़ी के अन्दर चलो। वहां खाना खा लेना और थोड़ा लेते भी जाना।"

बूढ़ा झोंपड़ी में पहुंचा। घर की मालकिन ने देखा कि वस्त्र के नाम पर बूढ़ा फटे-पुराने चीथड़े लपेटे हैं। उसे बड़ा अफ़सोस हुआ। वह क़मीज़, पतलून ले आई और उसे पहनने के लिए दे दी। बूढ़ा कमीज़ पहनने लगा तो मालकिन ने देखा कि बूढ़े की छाती में एक बड़ा-सा घाव है। बूढ़े बाबा को बिठाकर उसने भर पेट खाना खिलाया। खा-पी चुके तो घर के मालिक ने पूछा:

"बाबा, तुम्हारे सीने में इत्ता बड़ा घाव कैसे है?"

"बेटा, इस घाव की क्या बताऊं? बस, अब थोड़े वक़्त का मेहमान हूं। मेरी ज़िन्दगी का बस एक दिन है।"

"तोबा!" घर की मालकिन बोली। "क्या इसकी कोई दवा नहीं है?"

"है," बूढ़े बाबा ने कहा। "बस एक दवा है, लेकिन उसे कोई नहीं देगा, जबकि हर कोई दे सकता है।"

तब घर के मालिक ने कहा:

"आखिर क्यों नहीं देगा? बताइए तो दवा क्या है?"

"बड़ी मुश्किल दवा है। जानना चाहते हो तो सुनो। अगर घर का मालिक अपने घर समेत सारी धन-दौलत आग लगाकर फूंक दे और उसकी राख को मेरे ज़ख़्म पर छिड़क दे, तो घाव अपने आप सूख जाएगा।"

छोटा बेटा सोच में पड़ गया। बड़ी देर तक सोचता रहा, फिर पत्नी से बोला:

"कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"यही कि हम लोग दूसरी झोंपड़ी फिर बना लेंगे, लेकिन बाबा बेचारे मर जाएंगे तो दुबारा थोड़े ही जन्मेंगे।"

"तो फिर देर क्या है?" पति ने कहा। "बच्चों को झोंपड़ी में से बाहर निकाल लो।"

बच्चे बाहर आ गए, वे भी बाहर निकल आए। छोटे भाई ने झोंपड़ी पर एक नज़र डाली — उसे अपनी जमा-पूंजी के लिए अफ़सोस था। लेकिन बूढ़े के लिए उसे कहीं ज़्यादा दर्द था। बस, छोटे बेटे ने आग लगा दी। झोंपड़ी तेज़ी से लपटें छोड़ती हुई जलने लगी और ग़ायब हो गई। देखते क्या हैं कि उसी जगह पर एक बहुत बड़ा, सुन्दर और चमचमाता घर खड़ा है।

उधर बूढ़े बाबा अपनी लम्बी, सफ़ेद दाढ़ी पर हाथ फेरते मुस्करा रहे थे।

"बेटे, तीन भाइयों में से तुम ही अकेले सच्चाई के रास्ते पर चल रहे हो। खुश रहो, बेटे, और युग-युग जिओ!"

अब छोटे बेटे ने पहचाना कि यह वही बूढ़े बाबा हैं, जिन्होंने तीनों भाइयों को मुंहबोला बेटा बनाया था। वह उनकी ओर लपका, लेकिन तब तक बूढ़े बाबा ओझल हो चुके थे।

बुद्धिमती मरूस्या

किसी ज़माने में दो भाई रहते थे। एक भाई ग़रीब था और दूसरा अमीर। एक बार अमीर को ग़रीब भाई पर दया आई। उसने अपनी एक दुधारू गाय ग़रीब भाई को देकर कहा:

"भाई, गाय के बदले में मेरे यहां थोड़ा काम कर देना।"

वायदे के अनुसार ग़रीब भाई गाय के एवज़ में काम करता रहा। लेकिन बाद में एक दिन अमीर भाई का जी ललचाया, उसने ग़रीब से कहा:

"तुम मेरी गाय वापस कर दो।"

ग़रीब भाई ने कहा:

"भैया, मैंने गाय के एवज़ में काम किया है!"

"अरे, तूने काम क्या किया है? दो कौड़ी का काम किया है – और ज़रा गाय तो देखो! चलो, गाय वापस करो!"

ग़रीब भाई को बड़ा दुख हुआ। भाई ने काम का काम कराया और अब गाय भी वापस मांग रहा है। ग़रीब ने गाय नहीं दी। वे लोग इस बात का फ़ैसला करने ज़मींदार के यहां पहुंचे। लेकिन ज़मींदार इस मामले में मग़ज़-पच्ची नहीं
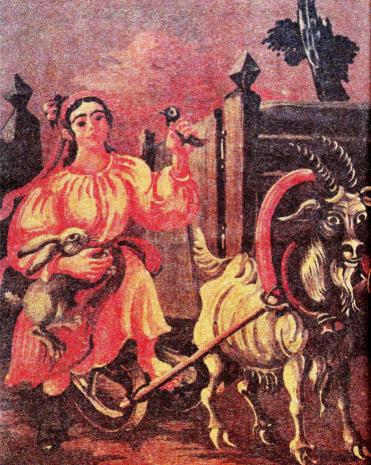
करना चाहता था कि उनमें कौन सही है और कौन ग़लत। उसने उन भाइयों से कहा :

"सुनो, यह गाय उसकी होगी, जो मेरी इस पहेली को बूझ देगा।"

"हां, तो बताइए, ज़मींदार साहब," भाइयों ने कहा।

"सुनो, दुनिया में सबसे ज्यादा सन्तुष्ट, सबसे अधिक वेगवान और सबसे प्यारी कौन-सी चीज़ है? कल यहां आकर इस पहेली का जवाब देना।"

दोनों भाई घर लौट गए। अमीर ने सोचा: "यह तो पहेली नहीं, बकवास है! सबसे ज्यादा सन्तुष्ट है ज़मींदार का सूअर, सबसे ज्यादा वेगवान है ज़मींदार का शिकारी कुत्ता और सबसे प्यारी चीज़ है दौलत! यह कहते ही गाय मुझे मिल जाएगी!"

ग़रीब भाई घर लौटा। गहरे सोच में डूब गया। सोचता हुआ ठण्डी आहें भरता रहा। हाय, अब क्या होगा? लेकिन ग़रीब भाई की एक लड़की थी, मरूस्या। उसने पिता को दुखी देखकर पूछा :

"पिता जी, आप किसलिए इतने दुखी हैं? ज़मींदार ने क्या कहा?"

"ज़मींदार ने एक ऐसी पहेली बुझाई है, जो सुलझाए नहीं सुलझती।"

"आखिर कौन-सी पहेली है?"

"लो, सुन लो: दुनिया में सबसे सन्तुष्ट, सबसे वेगवान और सबसे प्यारी कौन-सी चीज़ है?"

"अरे, पिताजी! सबसे सन्तुष्ट तो धरती-मां है – वह सबका उदर-पोषण करती है, सबकी प्यास बुझाती है और सभी उसी में समाते हैं। सबसे वेगवान है मन की उड़ान – जहां चाहो उड़ लो। सबसे प्यारी है नींद – कैसा भी सुखी क्यों न हो इनसान, वह सब कुछ छोड़कर सो जाता है।"

"सच?" पिता ने कहा। "हां, तुमने खूब अक्ल दौड़ाई है। मैं ज़मींदार से यही कह दूंगा।"

दूसरे दिन दोनों भाई ज़मींदार के यहां पहुंचे। ज़मींदार ने उनसे पूछा :

"कहो, क्या बूझे?"

अमीर भाई बढ़कर आगे आया, ताकि जल्दी से उत्तर दे सके। उसने कहा :

"ज़मींदार साहब, सबसे ज़्यादा सन्तुष्ट है आपका सूअर, सबसे वेगवान है आपका शिकारी कुत्ता और सबसे प्यारी चीज़ है – दौलत।"

"कोरी बकवास!" ज़मींदार ने कहा। "अब तुम बताओ!"

"हुज़ूर, सबसे सन्तुष्ट है धरती-मां : वह सबका उदर-पोषण करती है, सबकी प्यास मिटाती है और सभी उसी में समाते हैं।"

"बहुत खूब, सच कहते हो," ज़मींदार ने कहा। "लेकिन सबसे वेगवान कौन है?"

"हुज़ूर, सबसे वेगवान है मन की उड़ान – जहां चाहो उड़ लो।"

"यह भी ठीक कहा। लेकिन सबसे प्यारी चीज़ कौन-सी है?" ज़मींदार ने पूछा।

"सबसे प्यारी है नींद – कैसा भी सुखी क्यों न हो इनसान, वह सब कुछ छोड़कर सो जाता है।"

"तुमने सभी उत्तर ठीक-ठीक दिए हैं!" ज़मींदार ने कहा। "गाय तुम्हें ही मिलेगी। लेकिन यह बताओ कि ये पहेलियां तुमने खुद बूझी हैं या किसी ने तुम्हारी मदद की है।"

"हुज़ूर, गुस्ताखी माफ़ हो," ग़रीब ने कहा। "मेरी एक लड़की है, मरूस्या। उसने ही मुझे इन पहेलियों के जवाब सुझाए हैं।"

ज़मींदार जल-भुन गया।

"खूब बकते हो! किसान की छोकरी और मेरी बराबरी करेगी। उसने मेरी बताई पहेलियां बूझ दीं। जाओ, ये दस उबले अण्डे तुम्हें दे रहा हूं। अपनी बेटी को देकर कहना : इन अण्डों पर मुर्ग़ी बिठाए ताकि रात भर में इन अण्डों से चूज़े निकल आएं, उन्हें चुगाए, बड़ा करे, तब तुम्हारी बेटी तीन चूज़े तन्दूर में पकाए और सुबह का नाश्ता तैयार करे। और तुम मेरी नींद खुलने से पहले वह नाश्ता लेकर मेरे घर आओगे। मैं प्रतीक्षा करूंगा। नाश्ता तैयार न हुआ तो तुम्हारी खैरियत नहीं।"

ग़रीब आदमी रोता हुआ घर पहुंचा। लड़की ने पिता से पूछा :

"पिताजी, क्या बात है? आप रो क्यों रहे हैं?"

"आखिर रोऊं नहीं तो क्या करूं, बेटी? ज़मींदार ने बड़ा टेढ़ा सवाल किया है। उसने तुम्हें दस उबले अण्डे दिए हैं ताकि तुम इन अण्डों पर मुर्ग़ी बिठाओ, मुर्ग़ी इन्हें सेकर चूज़े निकाले, उन्हें दाना चुगाकर बड़ा करे। और सुबह होने तक तुम तीन चूज़े तन्दूर में पकाकर ज़मींदार के लिए नाश्ता तैयार करो।"

लड़की ने एक बर्तन में पका हुआ दलिया पिता को देते हुए कहा :

"पिताजी, यह उबला हुआ दलिया ले जाकर ज़मींदार साहब को दे दीजिए और कहिए कि खेत जोतवाकर इन दानों की बोवाई करा दें, खेत में बाजरा उग आए और पक जाए, फिर वह कटवाएं, मांड़ें और दाने निकलवाकर दें, ताकि इन अण्डों से निकलनेवाले चूज़े उन दानों को चुग सकें।"

ग़रीब आदमी ने उबला हुआ दलिया लाकर ज़मींदार को दे दिया और वह सब कह सुनाया जो बेटी ने समझाया था।

ज़मींदार उस दलिये को देखता रहा, देखता रहा और बाद में उसे कुत्तों के आगे फिंकवा दिया। और ग़रीब आदमी को सन की एक टहनी देकर बोला :

"यह सन की टहनी ले जाकर अपनी लड़की को दे दो। वह इसे धोकर, पछाड़कर, मसलकर, सुखाकर, कातकर सवा सौ गज कपड़ा बुन दे। चूक हुई तो तुम्हारी ख़ैरियत नहीं।"

आफ़त का मारा ग़रीब बेचारा रोता, सिर पीटता वापस घर पहुंचा। लड़की घर की दहलीज़ पर ही खड़ी थी। उसने पिता से पूछा :

"पिताजी, आप किसलिए रो रहे हैं? आखिर क्या हुआ?"

"क्या कहूं, बेटी? ज़मींदार ने कहा है कि तुम सन की इस टहनी को धोकर, पछाड़कर, मसलकर, सुखाकर, कातकर सवा सौ गज़ कपड़ा बुन दो। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूं?"

"पिताजी, फ़िक्र न करें," लड़की ने दुखी पिता से कहा।

मरूस्या ने चाक़ू से पेड़ की एक पतली-सी टहनी काटकर पिता को दे दी और कहा:

"पिताजी इसे ले जाकर ज़मींदार साहब को दे दीजिए और कहिए कि इस टहनी से एक करघा बनवा दें ताकि उस पर कपड़ा बनाया जा सके।"

ग़रीब आदमी वह पतली-सी टहनी लेकर ज़मींदार के पास आया और उसने वह सब कह सुनाया, जो बेटी ने समझाया था। ज़मींदार उस टहनी को देखता रहा, देखता रहा और उसे फेंककर सोचने लगा: "इस छोकरी को बेवक़ूफ़ बनाना आसान नहीं! ऐसी-वैसी नहीं है।"

बड़ी देर तक ज़मींदार इस उधेड़-बुन में पड़ा रहा कि अब कौन-सी पहेली चुनी जाए? इस बार ख़ूब अच्छी तरह सोच-विचारकर बोला:

"सुनो, जाकर अपनी अक़्लमन्द बेटी से कह दो, वह ख़ुद यहां आए। लेकिन आए तो ऐसे कि न पैदल हो, न घोड़े पर सवार हो, न नंगे पांव आए, न जूते उतारके आए, न कोई उपहार लाए और न बिना उपहार के आए। अगर ऐसा न हुआ तो तुम अपनी ख़ैरियत न समझना।"

पिता ने जब इस पहेली को सुना तो होश उड़ गए। रोता हुआ घर वापस लौट पड़ा, बेटी से बोला:

"बेटी, इस बार बुरे फंसे। कोई रास्ता नहीं दिखाई देता। बताओ अब क्या करें? ज़मींदार ने ऐसे-ऐसे करने का हुक्म दिया है।" और उसने बेटी को यह पहेली भी बतला दी।

लेकिन मरूस्या ने सहज भाव से उत्तर दिया:

"पिताजी, परेशान मत होइए। सब कुछ ठीक हो जाएगा। जाकर बाज़ार से एक ज़िन्दा ख़रगोश ख़रीद लाइए।"

ग़रीब आदमी बाज़ार से एक ज़िन्दा ख़रगोश ख़रीद लाया। मरूस्या ने झट से एक पांव में फटा जूता पहना, दूसरा पैर नंगा छोड़ दिया। फिर उसने एक गौरैया पकड़ी। गाड़ी में एक बकरे को जोता, ख़रगोश को बग़ल में दबाया, गौरैया को हाथ में पकड़ा। फिर अपना एक पैर गाड़ी पर टिकाया और दूसरे पैर

के सहारे पैदल चल दी। इस तरह वह ज़मींदार के अहाते की तरफ़ बढ़ चली। उधर ज़मींदार ने जब यह देखा कि लड़की उसके बाड़े के क़रीब आ चुकी है, तो उसने अपने नौकरों को चिल्लाकर आवाज़ दी:

"कुत्ते छोड़ दो!"

ख़ौफ़नाक कुत्ते उसकी ओर छोड़ दिए गए। लेकिन लड़की ने ठीक इसी वक़्त ख़रगोश को आज़ाद कर दिया। कुत्ते उसे छोड़कर ख़रगोश को पकड़ने भागे। तब तक लड़की ज़मींदार के यहां पहुंच चुकी थी। उसने सिर झुकाकर कहा:

"ज़मींदार साहब, आपकी सेवा में उपहार लाई हूं। स्वीकार करें।" लड़की ने गौरैया को उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। ज़मींदार अभी उपहार संभालता कि चि-ड़िया फुर्र से उड़ गई।

इसी वक़्त किसान लोग न्याय मांगने ज़मींदार के यहां आए। ज़मींदार ने उन्हें देखकर पूछा:

"भेले मानसो, कहो, किसलिए आए हो?"

एक किसान बोला:

"ज़मींदार साहब, हम लोगों ने खेत में ही रात बिताई। सुबह उठे तो देखा मेरी घोड़ी के बछेड़ा हुआ है।"

लेकिन दूसरे किसान ने कहा:

"हुज़ूर, बिल्कुल झूठ है। यह बछेड़ा मेरी घोड़ी के हुआ है। माई-बाप, अब इसका फ़ैसला आप ही करें कि बछेड़ा किसका है?"

ज़मींदार सोचता रहा, सोचता रहा, फिर बोला:

"दोनों घोड़ियों और बछेड़े को यहां हांक लाओ। बछेड़ा जिस घोड़ी की तरफ़ भागे, उसी घोड़ी के बछेड़ा हुआ है।"

वे दोनों अपनी-अपनी घोड़ियों को हांक लाए और बछेड़े का पगहा खोल दिया गया। लेकिन दोनों किसान उसे अपनी-अपनी तरफ़ खींचने लगे, बछेड़ा चक्कर में पड़ गया, आखिर वह दोनों से ही दूर भाग गया। सब चक्कर में पड़ गए: अब फ़ैसला कैसे किया जाए? इसी वक़्त मरूस्या ने सुझाया:

"बछेड़े को बांध दीजिए, लेकिन घोड़ियों की जोत खोल दीजिए – जो घोड़ी बछेड़े की ओर दौड़ी जाए उसी का बछेड़ा है।"

वैसा ही किया गया: घोड़ियों की जोत खोल दी, बछेड़े को बांध दिया, दो में से एक घोड़ी लपककर बछेड़े के पास पहुंच गई और दूसरी अपनी जगह पर खड़ी रही।

अन्त में ज़मींदार की अक़्ल में यह बात समा गई कि यह लड़की सचमुच प्रज्ञापुत्री है। उसकी बुद्धि को चुनौती दे पाना आसान काम नहीं। इस तरह ज़मींदार ने बुद्धिमती मरूस्या से हार मान ली।

ईमानदारी बनाम बेईमानी

पुराने ज़माने की बात है। कहीं दो भाई रहते थे। एक भाई धनवान था, दूसरा भाई बेहद ग़रीब। एक दिन दोनों भाइयों की मुलाक़ात हुई। वे आपस में बातचीत करने लगे। ग़रीब भाई ने कहा:

"ज़िन्दगी कितनी भी कड़वी क्यों न हो, उसे ईमानदारी से गुज़ारना ही अच्छा है।"

मगर अमीर भाई ने कहा:

"तुम्हीं बताओ कहां धरी है ईमानदारी? चारों तरफ़ सिर्फ़ बेईमानी ही फल-फूल रही है। भाई मेरे, अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बेईमानी ही अकेला रास्ता है!"

लेकिन ग़रीब भाई टस से मस न हुआ, अपनी बात पर अड़ा रहा:

"नहीं, भाई, ईमानदारी की ज़िंदगी ही सबसे अच्छी है!"

तब अमीर भाई बोला:

"आओ, शर्त लगाते हैं। तीन राहगीरों से ही पूछकर इसका फ़ैसला किए लेते हैं। अगर वे तुम्हारी नीति का समर्थन कर देंगे तो मेरी सारी सम्पत्ति तुम्हारी हो जाएगी। और अगर उन्होंने मेरी बात को उचित ठहराया तो तुम्हें अपना सब कुछ मुझे सौंप देना होगा। मंजूर है?"

"मंजूर है!"
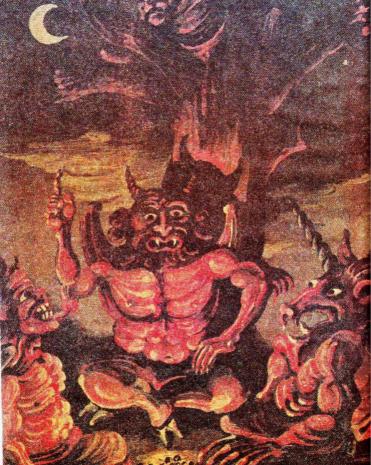
फिर वे निकल पड़े सड़क पर। राहगीरों की तलाश में चलते रहे। सहसा उन्हें एक आदमी दिखाई पड़ा। वह थका हुआ मजूरी करके लौट रहा था। दोनों भाई उसके क़रीब आए और बोले :

"नमस्ते, भले आदमी!"

"नमस्ते!"

"हम लोग एक बात पूछना चाहते हैं..."

"पूछ लो!"

"सही-सही बताना। दुनिया में ईमानदारी से जीना अच्छा है या बेईमानी से?"

"अरे, भले लोगो! कहां धरी है ईमानदारी?" राहगीर ने जवाब दिया। "मुझे ही देख लो। मैंने जी तोड़कर काम किया, दिन-दिन भर मशक़्क़त करता रहा, पर कमाई के नाम पर कुछ हाथ न लगा। ऊपर से मालिक ने मजूरी तक काट ली। भाड़ में जाए ऐसी ईमानदारी! अब तुम्हीं बताओ, क्या ईमानदारी से पेट भर सकता है? ऐसी ईमानदारी से तो बेईमानी ही भली!"

"देखा, भाई मेरे! एक बार तो मेरी बात सच निकल गई," अमीर भाई ने कहा।

ग़रीब भाई बड़ा दुखी हुआ। वे फिर आगे चल दिए। थोड़ी देर चलने के बाद उन्हें एक सौदागर मिला।

"नमस्ते, श्रीमान!"

"नमस्ते, भाइयो!"

"हम लोग आपसे एक बात पूछना चाहते हैं..."

"पूछो!"

"सही-सही बताना। दुनिया में ईमानदारी से जीना अच्छा है या बेईमानी से?"

"अरे, भले लोगो! तुम्हीं बताओ, क्या ईमानदारी से जिया जा सकता है? फिर व्यापार में तो बेईमानी के बिना कोई काम नहीं चलता। अपने माल को अच्छा बताने, उसे बाज़ार में बेचने के लिए ग्राहकों से सौ-सौ बार झूठ बोलना पड़ता है, तरह-तरह के फ़रेब करने पड़ते हैं। तब कहीं धन्धा चल पाता है। ऐसा न करो, तो बैठे-बैठे मक्खियां मारते रहो।"

यह कहकर दूसरा राहगीर भी आगे बढ़ लिया।

"अब तुम्हीं देख लो – दूसरी बार भी मेरी बात सच निकली!"

ग़रीब भाई फिर बड़ा दुखी हुआ। ख़ैर, वे फिर आगे चल दिए। चलते-चलते उन्हें एक ज़मींदार मिला। काफ़ी ठाट-बाट थे उसके।

"नमस्ते, महोदय!" दोनों भाइयों ने कहा।

"नमस्ते!"

"हम लोग आपसे एक बात पूछना चाहते हैं..."

"पूछ लो!"

"लेकिन सही-सही बताना। दुनिया में ईमानदारी से जीना अच्छा है या बेईमानी से?"

"वाह ख़ूब! भले लोगो, अब तुम्हीं बताओ, ईमानदारी कहां है? ईमानदारी से तो ज़िन्दा नहीं रह सकते। क्या मैं ईमानदार रहकर ऐसी शान-शौक़त से जी सकता..."

अपनी बात अधूरी छोड़कर ज़मींदार ने अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया।

अमीर भाई बोला:

"अच्छा, भाई, अब घर चलो और अपना सब कुछ मुझे सौंप दो!"

ग़रीब भाई दुखी मन से घर की ओर चल पड़ा। उसका बोरिया-बिस्तर तक अमीर भाई उठा लाया, ग़रीब भाई की झोंपड़ी ही उसके पास छोड़ दी।

"सुनो, अभी तुम झोंपड़ी में रह सकते हो। फिलहाल मुझे इसकी ज़रूरत नहीं। थोड़े दिनों में तुम्हें अपने लिए कोई दूसरा इन्तज़ाम करना होगा।"

ग़रीब भाई अपने परिवार सहित मायूस होकर बैठ गया। उनके घर में रोटी का एक टुकड़ा तक न था। और न तो वह कहीं मज़दूरी ही कर सकता था। उस वर्ष सूखा पड़ गया था। खेतों में एक दाना अन्न तक न उगा था! किसी तरह पति-पत्नी ने भूख बर्दाश्त कर ली। लेकिन बच्चे रोने लगे... ग़रीब भाई ने एक ख़ाली बोरी उठाई और अमीर भाई के घर पहुंचकर बोला:

"भैया, मेहरबानी करके मुझे एक बोरी आटा दे दो। दाने-दाने को मोहताज हो रहा हूं, बच्चे भूख से बिलबिला रहे हैं!"

अमीर भाई बोला:

"अच्छा, तो तुम्हें आटा चाहिए। मिल जाएगा। लेकिन बोरी भर आटे के बदले में तुम्हें अपनी आंख निकलवानी होगी। मंज़ूर है?'

ग़रीब भाई असमंजस में पड़ गया। सोच-विचार करने लगा। पर मरता क्या न करता। ग़रीब भाई आंख निकलवाने के लिए राज़ी हो गया।

"आओ, निकाल लो मेरी आंख। पर ईसा के नाम पर मुझे आटा या अनाज कुछ न कुछ ज़रूर दे देना।"

यह सुनते ही अमीर भाई ने ग़रीब भाई की एक आंख निकालकर उसकी बोरी में सड़ा हुआ आटा भर दिया। ग़रीब भाई वह बोरी लादकर घर पहुंचा। पति को देखते ही पत्नी ने आह भरते हुए कहा:

"अरे, यह तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारी आंख कहां गई?"

"भाई ने निकाल ली!" पति ने उत्तर दिया।

फिर उसने सारा क़िस्सा कह सुनाया। घर में चीख़-पुकार, रोना-धोना मच गया। आख़िर भूख से दम तोड़ता परिवार करता भी तो क्या।

हफ़्ते-दो हफ़्ते में वह आटा ख़त्म हो गया। ग़रीब ने फिर से बोरी संभाली और अमीर भाई के घर जा पहुंचा।

"प्रिय भाई, वह आटा तो ख़त्म हो गया। मेहरबानी करके थोड़ा आटा और दे दो!"

"आटे के बदले में अपनी दूसरी आंख निकलवाने के लिए तैयार हो? इस शर्त पर बोरी भर सकता हूं!"

"भाई, एक आंख तो मैं पहले ही गंवा चुका हूं। अब दूसरी आंख खोकर अन्धा हो जाऊंगा। मेरी जिन्दगी तबाह हो जाएगी। भाई पर रहम करके ऐसे ही थोड़ा-सा आटा दे दो!"

"मेरे यहां ख़ैरात नहीं बंटती। आटे के बदले में तुम्हें अपनी दूसरी आंख भी निकलवानी होगी।"

"तो आओ, इसे भी निकाल लो!"

अमीर भाई ने ग़रीब भाई की दूसरी आंख भी निकाल ली और उसकी ख़ाली बोरी में आटा भर दिया। भाई ने आंख गंवाकर फिर बोरी उठाई और घर की ओर चल दिया। वह बड़ी मुश्किल से चल पा रहा था। बेचारा क्षण-क्षण टटोलता, गिरता-पड़ता, रास्ते में ठोकरें खाता किसी तरह घर पहुंचा। पत्नी उसे देखते ही समझ गई और फूट-फूटकर रोती हुई बोली:

"हाय, कितने अभागे हो तुम! दोनों आंखें गंवाकर, अन्धे होकर इस दुनिया

में कैसे जिओगे ! आटा तो किसी भी तरह, कहीं न कहीं मिल ही जाता, लेकिन अब ... "

बेचारी पत्नी दहाड़ें मार-मारकर रोती रही। उसकी हिचकियां-सिसकियां देर तक जारी रहीं। अन्धे ने पत्नी को ढांढ़स दिलाते हुए कहा :

"चुप हो जाओ, रानी। इस दुनिया में अकेला मैं ही अन्धा नहीं हूं। मेरे जैसे तमाम लोग हैं और वे भी जिन्दा हैं। मायूस होने की जरूरत नहीं।"

जल्द ही यह आटा भी खत्म हो गया। एक बड़े परिवार में बोरी भर आटा आखिर कितने दिन चलता !

अन्धा आदमी पत्नी से बोला :

"अब मैं भाई के यहां न जाऊंगा। मुझे गांव के बाहर सड़क के किनारे चिनार के नीचे पहुंचा दो। दिन भर मैं वहीं बैठा रहूंगा, शाम होते ही तुम मुझे लेने आ जाना। राहगीरों से किसी तरह रोटी का जुगाड़ हो ही जाएगा।"

अन्धे की पत्नी उसे वहां ले गई, चिनार के पेड़ के नीचे उसे बिठाकर घर वापस चली आई।

अन्धा चिनार के नीचे बैठा रहा। राहगीरों में से कुछेक ने उसे मामूली भीख भी दी। शाम हो चली थी, लेकिन पत्नी अब तक उसे लेने न आई। दिन भर का थका-हारा आदमी अकेला ही घर की तरफ़ चल पड़ा। लेकिन ग़लत दिशा में मुड़ गया। वह चलता रहा, चलता रहा यह जाने-समझे बिना कि कहां जा रहा है। अचानक उसे लगा कि जंगल में आ गया है। अब उसे रात यहीं गुज़ारनी पड़ेगी। अन्धा आदमी वन्य जीवों से भयभीत हो उठा और किसी तरह एक पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठ गया। इस तरह वह दुबका हुआ चुपचाप बैठा रहा।

आधी रात होने पर इस वृक्ष के नीचे भूतों का जमघट लगने लगा। तरह-तरह के भूत वहां दौड़ते-भागते इकट्ठे हो गए। भूतों के सरदार ने सभी के कार्यों का ब्योरा मांगा। वे बारी-बारी से बताने लगे। एक भूत ने कहा :

"मेरी वजह से सिर्फ़ दो बोरी आटे के लिए भाई ने भाई की आंखें निकाल लीं। वह हमेशा के लिए अन्धा हो गया।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन ज़रा-सी कसर छोड़ ही दी !"

"मगर कैसे ?"

"तुम्हीं सोचो, अगर वह अन्धा इस वृक्ष के नीचे बिखरी हुई ओस को अपनी

आंखों पर लगा लेगा, तो उसे पहले की तरह दिखाई पड़ने लगेगा।"

"लेकिन इस बारे में किसने सुना है और कौन जानता है?"

"और तुमने क्या किया?" भूतों के सरदार ने दूसरे प्रेत से पूछा।

"मैंने एक गांव का सारा पानी ही सोख लिया। अब वहां के लोग एक-एक बूंद पानी को तरस रहे हैं। त्राहि-त्राहि मच गई है। उन्हें दस-दस, बीस-बीस कोस से पानी लाना पड़ता है। बहुत-से लोग दम तोड़ेंगे।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन ज़रा-सी कसर छोड़ ही दी!"

"मगर कैसे?"

"तुम्हीं सोचो, पास के शहर में पड़े हुए भारी पत्थर को यदि खिसका दिया जाए, तो गांव के लिए अथाह पानी वहीं से मिल जाएगा। और तब तुम्हारी योजना ही चौपट हो जाएगी।"

"लेकिन इस बारे में किसने सुना है और कौन जानता है?"

"और तुमने क्या किया?" भूतों के सरदार ने तीसरे प्रेत से पूछा।

"मैंने अमुक राजा की इकलौती बेटी को अन्धा बना दिया है। उसका अन्धापन अब इलाज से भी ठीक न होगा।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन ज़रा-सी कसर छोड़ ही दी।"

"मगर कैसे?"

"तुम्हीं सोचो, अगर इस वृक्ष के नीचे बिखरी हुई ओस राजकुमारी की आंखों पर मल दी जाए, तो उसे पहले की तरह दिखाई पड़ने लगेगा।"

"सो तो है। लेकिन इस बारे में किसने सुना है और कौन जानता है?"

लेकिन वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ अन्धा चुपके-चुपके सब सुन रहा था। जैसे ही भूत-प्रेत हवा में उड़े, वह अन्धा पेड़ से नीचे उतरा और उसने अपनी आंखों पर वह ओस मल ली। उसे पुनः सब कुछ दिखाई पड़ने लगा। तब उसने सोचा:

"अब चलकर दुखियों की मदद करनी चाहिए!" उसने पेड़ ने नीचे की ओस समेटकर प्याले में रखी और चल दिया।

वह उस गांव के निकट आया, जहां पानी के बिना त्राहि-त्राहि मची थी। अचानक उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत बहंगी पर दो बाल्टियां लटकाए चली आ रही है। उसने अदब से झुककर बुढ़िया से कहा:

"दादी मां, प्यास लगी है। थोड़ा पानी पिला दो!"

"ओह, मेरे लाल! यह पानी मैं बीस कोस से ढोकर ला रही हूं। घर पहुंचते-पहुंचते आधा पानी रास्ते में छलककर गिर जाएगा। मेरा परिवार भी बड़ा है—पानी के बिना बेहाल हो जाएगा!"

"चिन्ता न करो, दादी मां! जैसे ही मैं तुम्हारे गांव में पहुंच जाऊंगा, पानी ही पानी हो जाएगा।"

बुढ़िया ने उसे पानी पिलाया। वह इतनी खुश थी कि दौड़ी-दौड़ी अपने गांव पहुंची और उसने इस आदमी के बारे में सबको बताया। इस बात पर कुछ लोगों ने विश्वास किया और कुछ का शक बना रहा। लेकिन सभी ने मिलकर उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने अदब से झुककर कहा:

"ओ, भले आदमी! हमें खौफ़नाक मौत से बचाओ!"

"फ़िक्र मत करो, सिर्फ़ मेरी मदद करते चलो। मुझे गांव के पासवाले नगर तक ले चलो।"

गांव के लोग उसे वहां ले आए। वह पत्थर ढूंढ़ने लगा। थोड़ी देर की दौड़-धूप के बाद वह पत्थर मिल ही गया। सबने एकसाथ मिलकर वह भारी पत्थर खिसकाया। और पत्थर के खिसकते ही उसके नीचे से जलधार फूट निकली। वह पानी बहता रहा, बहता रहा और इतना अधिक बह गया कि सारे जलस्रोत फिर से पहले जैसे हो गए। तालाब, नदी, नाले पानी से लबालब भर गए। ग्रामवासियों की खुशी का ठिकाना न रहा, वे इस भले आदमी के प्रति बार-बार आभार प्रगट कर रहे थे। उस आदमी को धन-दौलत और तरह-तरह का सामान उपहार में मिला। वह घोड़े पर बैठकर आगे का सफ़र तय करने लगा। वह चलता जाता और रुक-रुककर उस राज्य का पता-ठिकाना पूछता जाता, जहां की राजकुमारी को प्रेत ने अन्धा कर दिया था। पता नहीं कितनी देर तक वह चलता रहा। पर आखिर अपनी मंज़िल तक पहुंच ही गया।

वह राजमहल के प्रवेश-द्वार पर पहुंचकर द्वारपालों से बोला:

"मुझे पता चला है कि आपके राजा की बेटी बीमार है। शायद मैं ही उसे ठीक कर दूं!"

"अरे, उसका इलाज तुम्हारे बस का नहीं है! दूर-दूर से बड़े-बड़े हकीम-वैद्यों ने यहां आकर हिकमतें लगाईं, पर उसका इलाज न कर पाए। अब तुम वहां जाकर क्या करोगे!"

"जो भी हो, आप लोग राजा साहब को सूचित कर दें!"

द्वारपाल राजा तक सूचना पहुंचाना ही नहीं चाहते थे। वे टालते जा रहे थे, मगर वह लगातार ज़िद करता जा रहा था। आखिर द्वारपालों ने उसकी बात मान ही ली। खबर मिलते ही राजा ने उसे राजमहल में बुलाया:

"तुम मेरी बेटी का इलाज कर सकते हो?" राजा ने पूछा।

"हुज़ूर, मैं उसका इलाज कर सकता हूं।"

"सुनो, अगर तुम राजकुमारी की आंखें ठीक कर दोगे तो तुम्हें मनचाहा इनाम दिया जाएगा।"

उस आदमी को राजकुमारी के पास ले जाया गया। वहां पहुंचकर उस आदमी ने प्याले में रखी ओस निकालकर राजकुमारी की आंखों पर मल दी। राजकुमारी फिर से देखने लगी। राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह व्यक्ति मालामाल कर दिया गया। राजा ने उसे इतना इनाम दिया कि उस दौलत को वह घोड़ागाड़ियों पर लादकर अपने घर की ओर चल दिया।

उधर घर पर पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था। वह बेचारी मुसीबतें सहती रही, पर पति का पता न लग पाया। निराश होकर पत्नी ने यह सोचा कि उसका पति मर चुका है। लेकिन वह तो अचानक घर आ पहुंचा। उसने खिड़की पर दस्तक दी:

"अरे, दरवाज़ा खोलो!"

पति की आवाज़ सुनकर वह बड़ी खुश हुई। उसने झपटकर दरवाज़ा खोला और पति को झोंपड़ी के अन्दर ले आई। वह तो यही सोचती थी कि उसका पति अन्धा है।

"ज़रा लालटेन जलाओ!" पति ने कहा।

उसने लालटेन जलाई। वह पति को देखते ही खुशी से नाच उठी:

"अरे, तुम्हारी आंखें ठीक हो गईं! हे भगवान! आखिर यह सब कैसे हुआ?"

"ठहरो, अभी बताते हैं। आओ, पहले अपना माल-असबाब तो उठा लाएं।"

वे बाहर से ढोकर धन-दौलत अन्दर ले आए। झोंपड़ी में दौलत का ढेर लग गया। अमीर भाई की दौलत इसके सामने कुछ न थी!

इस तरह ग़रीब भाई खूब अमीर हो गया, उनकी ज़िन्दगी मज़े से कटने लगी।

जब अमीर भाई को पता लगा तो वह भागता चला आया :

"भाई, तुम्हारी आंखें ठीक हो गईं और तुम धनवान हो गए! लेकिन यह चमत्कार कैसे हुआ?"

उस भाई ने सब कुछ सच-सच बता दिया।

सारा क़िस्सा सुनकर अमीर भाई को लालच आया। अमीर ने अब और दौलत समेटनी चाही। रात होते ही अमीर भाई ने झटपट जंगल का रास्ता पकड़ा और वहां पहुंचकर चुपके से उसी वृक्ष पर चढ़कर बैठ गया। फिर आधी रात को तरह-तरह के भूत-प्रेत अपने सरदार के साथ उसी पेड़ के नीचे इकट्ठे हुए। वे आपस में बातें करने लगे :

"यह क्या हो गया? न तो किसी ने हम लोगों की बात सुनी थी, न कोई यह रहस्य जानता था, लेकिन अन्धे भाई की आंखें ठीक हो गईं, पत्थर के नीचे से सोता फूट पड़ा और राजा की बेटी का इलाज हो गया। शायद किसी ने चोरी से हमारी बातें सुन ली हैं? आओ, उसे तलाश करते हैं!"

वे सब मिलकर तलाश करने लगे। जब वे वृक्ष पर चढ़े तो वहां अमीर भाई छिपा बैठा था। भूतों ने आव देखा न ताव अमीर भाई को पकड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।